अध्ययन मण्डल

अध्यक्ष

कुलपति

अध्ययन मण्डल के सदस्यों के नाम

प्रोफेसर गिरिजा प्रसाद पाण्डे , प्रोफेसर इतिहास एवं निदेशक समाज विज्ञान विद्याशाखा**,** उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय**,** हल्द्वानी
प्रोफेसर आर.पी. बहुगुणा, प्रोफेसर इतिहास एवं पूर्व निदेशक**,** दूरस्थ शिक्षा केन्द्र **,** जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय**,**दिल्ली
प्रोफेसर शन्तन सिंह नेगी, पूर्व विभागाध्यक्ष इतिहास विभाग**,** एच.एन.बी. गढ़वाल केन्द्रीय विश्वविद्यालय**,** श्रीनगर (गढ़वाल)
प्रोफेसर वी.डी.एस.नेगी, विभागाध्यक्ष इतिहास**,** एस.एस.जीना विश्वविद्यालय**,**अल्मोड़ा
डॉ. एम.एम.जोशी, एसोसिएट प्रोफेसर**,** इतिहास एवं समन्वयक इतिहास**,** उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय**,** हल्द्वानी
श्री विकास जोशी, असिस्टेण्ट प्रोफेसर(एसी)**,** इतिहास विभाग**,** उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय**,**

पाठ्यक्रम समन्वयक

डॉ. मदन मोहन जोशी

इकाई लेखन

ब्लॉक एक

इकाई एक-असहयोग आन्दोलन: कारण, कार्यक्रम,रॉलेट एक्ट एवं उसकाविरोध, जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड, चौरीचौरा काण्ड और आन्दोलन की समाप्ति - डॉ. जी.एम.जैसवाल,अवकाश प्राप्त आचार्य(इतिहास) कुमाऊं विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा परिसर
इकाई दो-राष्ट्रीय आन्दोलन और समाजवादी विचारधारा- डॉ. मिथिलेश मिश्रा, इतिहास एवं संस्कृति विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली
इकाई तीन-भारत में दलित आन्दोलन-- डॉ. मिथिलेश मिश्रा, इतिहास एवं संस्कृति विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली

ब्लॉक दो

इकाई चार- भू-स्वामी, पेशेवर और मध्यवर्ग-डॉ. इलियास हुसैन, इतिहास एवं संस्कृति विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली
इकाई पांच- किसान एवं श्रमिक वर्ग- डॉ. ज़िबरील, इतिहास विभाग, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
इकाई छह – जनजातियां एवं जनजतीय विद्रोह- डॉ. ज़िबरील, इतिहास विभाग, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

ब्लॉक तीन

इकाई सात- प्रेस एवं समाचार पत्र- डॉ. जी.एम.जैसवाल,अवकाश प्राप्त आचार्य(इतिहास) कुमाऊं विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा परिसर
इकाई आठ-भारत पर ब्रिटिश शासन का आर्थिक प्रभाव- डॉ. जी.एम.जैसवाल,अवकाश प्राप्त आचार्य(इतिहास) कुमाऊं विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा परिसर
इकाई नौ- देश का विभाजन एवं स्वतंत्र भारत की चुनौतियां- डॉ. इलियास हुसैन, इतिहास एवं संस्कृति विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली

आई.एस.बी.एन.	:
कॉपीराइट :	उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
प्रकाशन वर्ष	:
Published by	: उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
Printed at	:

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी अंश उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथ्वा किसी अन्य साधन से पुन: प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इकाई एक

असहयोग आन्दोलन के कारण, रॉलट एक्ट एवं उसका विरोध, जलियांवालाबाग हत्याकाण्ड, चौरी-चौरा काण्ड और आन्दोलन की समाप्ति

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 असहयोग आन्दोलन के कारण

1.3.1 स्वदेशी आन्दोलन से लेकर मान्टेग्यू की घोषणा तक का राजनीतिक घटना चक्र

1.3.2 रॉलट एक्ट एवं उसका विरोध

1.3.3 जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड

1.3.4 खिलाफ़त आन्दोलन

1.4 असहयोग आन्दोलन

1.4.1 असहयोग आन्दोलन के लक्ष्य

1.4.2 असहयोग आन्दोलन का निषेधात्मक एवं सृजनात्मक स्वरूप

1.4.2.1 असहयोग आन्दोलन का निषेधात्मक स्वरूप

1.4.2.2 असहयोग आन्दोलन का सृजनात्मक स्वरूप

1.4.2.3 सरकार द्वारा असहयोग आन्दोलन को कुचलने के प्रयास

1.5 चौरीचौरा काण्ड और आन्दोलन की समाप्ति

1.6 असहयोग आन्दोलन का आकलन

1.7 सारांश

1.7 पारिभाषिक शब्दावली

1.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1.9 संदर्भ ग्रंथ सूची

1.10 सहायक उपयोगी पाठ्य सामग्री

1.11 निबंधात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

प्रथम विश्वयुद्ध में मित्र राष्ट्रों द्वारा लोकतान्त्रिक मूल्यों की रक्षार्थ युद्ध में भाग लेने के दावे और विश्व युद्ध में भारत के सक्रिय सहयोग के वातावरण में ब्रिटिश सरकार से भारतीयों को स्वशासन अथवा होमरूल दिए जाने की आशा थी और होमरूल आन्दोलन के बाद 1917 की मान्टेग्यू की घोषणा से इसकी आशा भी की जा रही थी किन्तु युद्ध में जीत हासिल करने के बाद इंग्लैण्ड की और ब्रिटिश भारत की सरकार अपने वादों से पलट गई और भारत में राजनीतिक दमन का एक नया दौर प्रारम्भ हो गया। रॉलट एक्ट तथा जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड के बाद भारत में राजनीतिक असन्तोष चरम सीमा पर पहुंच गया।

भारत के अधिकांश मुसलमान तुर्की के सुल्तान को अपना खलीफ़ा मानते थे। विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद उसको अपदस्थ किए जाने की योजना के विरुद्ध भारत में खिलाफ़त आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। गांधीजी ने मुसलमानों को मुख्य राष्ट्रीय धारा में जोड़ने के उद्देश्य से खिलाफ़त आन्दोलन के समर्थन में अगस्त 1920 में असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ किया।

असहयोग आन्दोलन की गणना विश्व इतिहास के सबसे बड़े जन-आन्दोलनों में की जाती है। इसका अहिंसक और शान्तिपूर्ण स्वरूप इसे और भी अधिक महत्व प्रदान करता है। इस आन्दोलन में स्वदेशी आन्दोलन की बहिष्कार की रणनीति अपनाते हुए उसके लक्ष्य स्वराज, आर्थिक व शैक्षिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करने और राष्ट्रीय एकता स्थापित करने का प्रयास किया गया था, साथ ही साथ इसमें अस्पृश्यता निवारण, मद्य-निषेध, ग्राम-स्वराज्य और नारी-उत्थान के लक्ष्यों को भी जोड़ दिया गया था।

डेढ़ साल तक चले इस आन्दोलन ने सरकार की जड़ें तक हिला दी थीं और विश्व को अहिंसा का मार्ग अपनाते हुए अन्याय का प्रतिकार करना सिखाया था। चौरीचौरा में क्रुद्ध आन्दोलनकारियों द्वारा पुलिसकर्मियों की हत्या की नैतिक ज़िम्मेदारी लेते हुए गांधीजी ने असहयोग आन्दोलन को स्थगित कर दिया किन्तु इस आन्दोलन को असफल नहीं कहा जा सकता। इस आन्दोलन से गांधीजी पूरे विश्व में शान्ति और अहिंसा के मसीहा माने गए और अंग्रेज़ों को शान्तिपूर्ण अहिंसात्मक प्रतिरोध की शक्ति के सामने पूरी तरह से तो नहीं तो आंशिक रूप से अवश्य झुकना पड़ा।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य आपको असहयोग आन्दोलन की पृष्ठभूमि, उसके उद्देश्य, उसके सृजनात्मक एवं निषेधात्मक पक्ष, उसकी व्यापकता, सरकार के दमन चक्र, आन्दोलन के स्थगन तथा भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन व विश्व इतिहास में असहयोग आन्दोलन की महत्ता पर प्रकाश डालना है। इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप अग्रांकित के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे-

1. प्रथम विश्वयुद्ध के उपरान्त भारतीयों में अंग्रेज़ों के विश्वासघात के कारण व्याप्त आक्रोश
2. रॉलट एक्ट तथा जलियांवालाबाग हत्याकाण्ड
3. अधिकांश मुसलमानों के खलीफ़ा तुर्की के सुल्तान को अपदस्थ किए जाने के विरोध में भारतीय मुसलमानों द्वारा खिलाफ़त आन्दोलन का प्रारम्भ।
4. खिलाफ़त आन्दोलन के समर्थन में तथा रॉलट एक्ट व पंजाब में सरकार के दमन चक्र के विरोध में असहयोग आन्दोलन का प्रारम्भ।
5. असहयोग आन्दोलन लक्ष्य और उसका निषेधात्मक व सृजनात्मक पक्ष।
6. असहयोग आन्दोलन का स्थगन।
7. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन व विश्व इतिहास में असहयोग आन्दोलन का महत्व।

1.3 असहयोग आन्दोलन के कारण

1.3.1 स्वदेशी आन्दोलन से लेकर मान्टेग्यू की घोषणा तक का राजनीतिक घटना चक्र

प्रथम अखिल भारतीय राजनीतिक आन्दोलन - स्वदेशी आन्दोलन में बंगाल विभाजन को रद्द कराने के अतिरिक्त स्वशासन, आर्थिक व शैक्षिक आत्मनिर्भरता तथा राष्ट्रीय एकता को स्थापित करने के लक्ष्य रखे गए थे और इन्हें हासिल करने के लिए आयरलैण्ड के होमरूल आन्दोलन में प्रयुक्त बॉयकाट की रणनीति को अपनाया गया था। परवर्ती राजनीतिक आन्दोलनों ने इसके लक्ष्य और इसकी रणनीति को अपनाया। स्वदेशी आन्दोलन को बंगाल विभाजन के अन्यायपूर्ण निर्णय को बदलवाने का बहुत कुछ श्रेय दिया जा सकता है।

मित्र राज्यों ने प्रथम विश्वयुद्ध में लोकतान्त्रिक मूल्यों की रक्षार्थ भाग लेने का दावा किया था। प्रथम विश्वयुद्ध में मित्र राज्यों के सहयोगी के रूप में अपना योगदान देने के कारण भारतीयों की राजनीतिक आकांक्षाओं में वृद्धि 1916 के होमरूल आन्दोलन के अन्तर्गत श्रीमती एनीबीसेन्ट तथा लोकमान्य तिलक के नेतृत्व में होमरूल अर्थात् डोमिनियन स्टेटस की मांग के रूप में दिखाई दी।

गांधीजी 1915 में भारत लौटे थे। बिहार में चम्पारन जिले के नील की खेती करने वाले किसानों की दुर्दषा सुधारने के लिए चम्पारन जिले में 1917 में अपना चम्पारन आन्दोलन प्रारम्भ किया। चम्पारन आन्दोलन को व्यापक जन-समर्थन मिलता देख सरकार को झुकना पड़ा। नील के बागानों के मालिकों के किसानों पर किए जाने वाले अत्याचार रोकने के लिए 1917 का 'चम्पारन एग्रेरियन बिल' प्रस्तावित किया गया और दमनकारी तिनकथिया प्रणाली रद्द कर दी गई।

1917-18 में गुजरात के अधिकांश भाग में, विशेषकर अहमदाबाद से 32 किलोमीटर दूर स्थित खेड़ा में भयंकर अकाल पड़ा था। किसानों ने 3 साल की लगान की माफ़ी दिए जाने की प्रार्थना

की किन्तु बाम्बे प्रेसीडेन्सी की सरकार द्वारा लगान की माफ़ी की प्रार्थना ठुकरा दी गई अपितु कर में और वृद्धि कर दी गई। गांधीजी इस समय 'गुजरात सभा' के अध्यक्ष थे। 1918 में गुजरात के किसानों के हितों की रक्षार्थ गांधीजी ने खेड़ा सत्याग्रह में प्रवेश किया किन्तु इसमें उन्होंने मुख्य रूप से मार्गदर्शक की भूमिका निभाई थी। इसके वास्तविक नेता तो सरदार वल्लभ भाई पटेल, रविशंकर व्यास आदि थे।

इस व्यापक आन्दोलन की संगठित शक्ति के सामने सरकार को झुकना पड़ा। वर्तमान वर्ष और अगले साल की लगान माफ़ कर दी गई और कर में की गई बढ़ोत्तरी को स्थगित कर दिया गया। इस सत्याग्रह ने आने वाले समय के बारदोली सत्याग्रह की पृष्ठभूमि तैयार कर दी।

चम्पारन व खेड़ा आन्दोलनों से यह संकेत अवश्य मिल गया कि आने वाले समय में भारतीय राजनीतिक मंच पर गांधीजी की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण होने वाली है।

अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में इंग्लैण्ड और तुर्की के सम्बन्धों में दरार पड़ चुकी थी। तुर्की के सुल्तान की राजसत्ता को कमज़ोर करने की कोशिश तथा मुसलमानों के पवित्र तीर्थस्थलों मक्का, मदीना, येरुशलम आदि की सुरक्षा पर मण्डराते खतरे ने भारतीय मुसलमानों की ब्रिटिश स्वामिभक्ति तथा स्वयं को भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन से पृथक रखने की नीति के औचित्य पर प्रश्नचिह्न लगा दिया था। इसका फ़ायदा उठाकर कांग्रेस और मुस्लिम लीग को एक राजनीतिक मंच पर लाने के प्रयास तेज़ हो गए। मुहम्मद अली जिन्ना और वज़ीर हसन जैसे मुसलमान भी कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग को एक सूत्र में बांधना चाहते थे। यह समय भेदभाव भुलाकर स्वशासन के लक्ष्य को प्राप्त करने का था। 1916 में लखनऊमेंनरमपंथी, गरमदल, होमरूल समर्थक तथा मुस्लिम लीगी एकत्र हुए और उन्होंने सर्वसम्मति से एक निर्णय लिया जिसको लखनऊ समझौते के नाम से जाना जाता है। हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रतीक इस समझौते में मुसलमानों को प्रांतीय विधानपरिषदों तथा इम्पीरियल लेजिसलेटिव काउंसिल में विशिष्ट प्रतिनिधित्व तथा भारतीयों को स्वशासन प्रदान किए जाने की मांग रखी गई।

प्रथम विश्वयुद्ध में मेसोपोटामिया में ब्रिटिश सेना की तुर्कों से पराजय के बाद भारतीय सहयोग की युद्ध में उपयोगिता को देखते हुए भारत को स्वशासन प्रदान किया जाना भारत सचिव मॉन्टेग्यू ने समय की आवश्यकता बताया। 20 अगस्त, 1917 को उसने ऐतिहासिक घोषणा की जिसमें होमरूल आन्दोलन की स्वशासन की मांग को सरकार को आंशिक रूप से स्वीकार किया गया। इस घोषणा में यह स्पष्ट नहीं किया गया था कि भारतीयों को स्वशासन कब, कितना और किस प्रकार प्रदान किया जाएगा। आगे चल कर सुधारों के विषय में यही अस्पष्टता भारतीयों के व्यापक असन्तोष का कारण बनी।

1.3.2 रॉलट एक्ट एवं उसका विरोध

मॉन्टेग्यू की घोषणा के तुरन्त बाद विश्वयुद्ध में मित्र राष्ट्रों का पलड़ा भारी होते देख सरकार ने भारत में राजनीतिक प्रतिरोध को कुचलने के प्रयास प्रारम्भ कर दिए। 10 सितम्बर, 1917 को आतंकवाद के दमन के लिए जस्टिस रॉलट की अध्यक्षता में सेडिशन कमेटी गठित की गई। 1918 में सेडिशन कमेटी की सिफ़ारिशों को प्रकाशित किया गया। भारतीय प्रेस ने इस दमनकारी व्यवस्था को लागू न करने की मांग की परन्तु इन सिफ़ारिशों को 1919 में इम्पीरियल लेजिसलेटिव काउंसिल में रखा गया। इसके गैर सरकारी भारतीय सदस्यों ने एकमत से इन सिफ़ारिशों के आधार पर एक्ट बनाए जाने का विरोध किया। विश्वयुद्ध के दौरान बनाए गए विशेष सुरक्षा कानूनों को उसकी समाप्ति के बाद भी लागू रखना उनकी दृष्टि में भारतीयों के नागरिक अधिकारों का हनन था। रॉलट एक्ट के अंतर्गत सरकार विरोधी गतिविधियों के शक के आधार पर बिना मुकदमा चलाए किसी को भी गिरफ़्तार किया जा सकता था और उसे दो साल तक के लिए बन्दी बनाया जा सकता था। किसी के पास यदि सरकार विरोधी साहित्य मिले तो उसे गिरफ़्तार किया जा सकता था। पुलिस को शक की बिना पर तलाशी, गिरफ्तारी तथा ज़मानत मांगने के असीमित अधिकार मिल गए। इस दमनकारी कानून के पारित किए जाने के पीछे उन अंग्रेज़ अधिकारियों का हाथ था जो मॉन्टेग्यू की 1917 की घोषणा में भारतीयों को स्वशासन दिए जाने के आश्वासन से तथा 1919 के एक्ट में प्रान्तों में आंशिक रूप से उत्तरदायी शासन स्थापित किए जाने की व्यवस्था से नाराज़ थे।

इस एक्ट का घोर विरोध हुआ क्योंकि इससे पुलिस के हाथों जनता को परेशान करने की खुली छूट मिल रही थी। गांधी जी ने रौलट एक्ट के विरुद्ध फ़रवरी, 1919 में सत्याग्रह सभा का गठन कर देशव्यापी आन्दोलन का आवाहन किया। गांधीजी ने होमरूल लीग तथा मुस्लिम विश्व बंघुत्व की अवधारणा में विश्वास करने वाले (पैन इस्लामिक) दल को अपनी सत्याग्रह सभा के साथ शामिल किया। उन्होंने लखनऊ के फ़िरंगी महल के उलेमा अब्दुल बारी का सहयोग प्राप्त किया। 23 मार्च, 1919 को गांधीजी ने देश-व्यापी हड़ताल का आवाहन किया।

1.3.3 जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड

प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद स्वशासन न दिए जाने से निराश जनता सरकार के विरुद्ध आन्दोलन करने को तत्पर थी। रॉलट एक्ट के पारित होने से जनता का आक्रोश अपने चरम बिन्दु तक पहुंच रहा था। पंजाब का लेफ़्टिनेन्ट गवर्नर माइकिल ओडवेयर तथा अन्य अंग्रेज़ अधिकारी हिन्दू-मुस्लिम-सिख एकता तथा पंजाब में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध बढ़ते हुए जन-आक्रोश नाराज़ थे। पंजाब के अमृतसर, लाहौर, गुर्जनवाला, गुजरात तथा लायलपुर में रॉलट एक्ट विरोधी आन्दोलन हो रहे थे। 9 अप्रैल, 1919 को रॉलट एक्ट के विरोध में जुलूस का नेत्त्व

कर रहे डॉ. सत्य पाल तथा सैफुद्दीन किचलू को गिरफ्तार कर निर्वासित कर दिया गया। 10 अप्रैल को अपना विरोध जताने के लिए डिप्टी कमिश्नर के घर जा रही भीड़ पर पुलिस ने गोली चला दी। 11 अप्रैल, 1919 को माइकिल ओडवेयर ने पंजाब में मार्शल लॉ लगा दिया था परन्तु इसके बाद भी रॉलट एक्ट के विरुद्ध आन्दोलन जारी रहा। डॉ. सत्य पाल तथा सैफुद्दीन किचलू को रौलट एक्ट का विरोध करने के कारण गिरफ़्तार किए जाने के विरोध में हुई बैसाखी के दिन 13 अप्रैल, 1919 को अमृतसर के जलियांवाला बागमेंजनसभा में उपस्थित निहत्थे आन्दोलनकारियों पर बिना चेतावनी दिए जनरल डायर ने गोलीबारी की जिससे सैकड़ों लोग मारे गए और घायल हो गए। जनरल डायर के सिपाही तब तक भागती भीड़ पर गोलियां बरसाते रहे जब तक कि उनकी गोलियां खत्म नहीं हुईं। बाग की तंग गलियों में भारी फ़ौजी गाड़ी ले जाना कठिन था नहीं तो जनरल डायर भीड़ को इन भारी गाड़ियों से कुचलना भी चाहता था। जनरल डायर भारतीयों को इस हत्याकाण्ड से सबक देना चाहता था। इस हत्याकांड के बाद भी पुलिस की ज़्यादतियों का दौर चलता रहा। कूचा कूचियानवाला में एक अंग्रेज़ महिला का अपमान करने की सज़ा के तौर पर लोगों को पेट के बल रेंग कर चलने के लिए मजबूर किया गया। भारतीयों को यह पता चल गया कि अंग्रेज़ शासक भारतीयों की राजनीतिक मांगों तथा सरकार की नीतियों के विरोध को कुचलने के लिए अत्याचार की किस सीमा तक जा सकते हैं। इस निर्मम अत्याचार की खबर अखबारों में नहीं छपने दी गई। सरकार की दमनकारी नीतियों की आलोचना करने एवं उसका विरोध करने पर पूर्ण नियन्त्रण लगाने के लिए ही तो रॉलट एक्ट बनाया गया था। मशहूर शायर अकबर इलाहाबादी ने जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड को समाचार पत्रो में प्रकाशित न किए जाने के सरकारी आदेश पर कटाक्ष करते हुए कहा था -

हम आह भी भरते हैं तो, हो जाते हैं बदनाम।

वो क़त्ल भी करते हैं तो, चर्चा नहीं होता।।

30 मई, 1919 को जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड के विरोध में रबीन्द्रनाथ टैगोर ने नाइटहुड की उपाधि का परित्याग किया क्योंकि उनके कथनानुसार अब ऐसी उपाधियां और सम्मान धारण करते हुए अपने देशवासियों के सामने खड़े होने में उन्हें शर्म आ रही थी। जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड की जांच के लिए बैठी हंटर कमेटी ने इस काण्ड के हत्यारों को बेदाग छोड़ दिया था।

1.3.4 खिलाफ़त आन्दोलन

प्रथम विश्वयुद्ध में तुर्की की पराजय के बाद से ही यह निश्चित हो गया था कि उसके सुल्तान को अपदस्थ कर दिया जाएगा। तुर्की के सुल्तान को भारत सहित अनेक देशों के मुस्लिम सम्प्रदाय अपना खलीफा या धार्मिक गुरु मानते थे। खिलाफ़त का प्रश्न भारतीय मुसलमानों के लिए एक भावनात्मक मुद्दा था। भारतीय मुसलमान आमतौर पर अंग्रेज़ों के प्रति सहयोग की नीति अपना रहे थे। उन्हें विश्वास था कि उनकी भावनाओं का सम्मान करते हुए ब्रिटिश भारतीय सरकार तथा

इंग्लैण्ड की गृह सरकार मित्र राष्ट्रों पर तुर्की के सुल्तान अर्थात् मुसलमानों के खलीफ़ा को अपदस्थ न किए जाने के लिए दबाव डालेंगी। परन्तु मई, 1920 में सेव्र की सन्धि से तुर्की के सुल्तान और मुसलमानों के खलीफ़ा को अपदस्थ कर दिया गया।

31 अक्टूबर, 1918 में तुर्की की पराजय के बाद खिलाफ़त के विषय में मुस्लिम लीग तथा कांग्रेस की बैठक हुई। भारत में अली बन्धु, मुहम्मद अली एवं शौकत अली ने खिलाफ़त कमेटी का गठन कर पूरे भारत में आन्दोलन प्रारम्भ किया। खिलाफ़त आन्दोलनकारी जानते थे कि अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उन्हें हिन्दुओं का समर्थन प्राप्त करना होगा। हिन्दू-मुस्लिम एकता को महत्व देने वाला यह खिलाफ़त आन्दोलन पूर्णरूपेण अहिंसक था।

फ़रवरी, 1920 को मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की अध्यक्षता में हुई खिलाफ़त कॉन्फ्रेन्स ने असहयोग आन्दोलन का प्रस्ताव रखा। 14 मई, 1920 को सेव्र की सन्धि द्वारा तुर्की के सुल्तान को अपदस्थ कर दिया गया। 1 से 3 जून, 1920 को 'सेन्ट्रल खिलाफ़त कमेटी' ने असहयोग की नीति अपनाने का निश्चय किया। इसमें उपाधियां ी, प्रशासनिक, पुलिस तथा सैनिक सेवाओं का परित्याग और करों का भुगतान न करना शामिल थे। ख़िलाफ़त आन्दोलन के नेता मौलाना मुहम्मद अली ने अपने अंग्रेज़ी पत्र कामरेड तथा उर्दू पत्र हमदर्द में खलीफ़ा की सत्ता को पुनर्स्थापित करने की मांग को रखा था। गांधीजी ने अपने पत्र यंग इण्डिया में अपने मुसलमान भाइयों की संकट की घड़ी में उनके साथ रहने और उनके अहिंसक आन्दोलन में पूर्ण सहयोग करने का वचन दिया। जुलाई, 1920 में सिंध में आयोजित खिलाफ़त कॉन्फ्रेन्स में गांधीजी ने भी भाग लिया।

1.4 असहयोग आन्दोलन

1.4.1 असहयोग आन्दोलन के लक्ष्य

20 अगस्त, 1920 को गांधीजी ने असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ किया। इस आन्दोलन को खिलाफ़त आन्दोलन के समर्थन में, पंजाब में पुलिस की ज़्यादतियों के विरोध में तथा एक साल के भीतर स्वराज प्राप्ति के उद्देश्य से प्रारम्भ किया गया था। गांधी जी ने आर्थिक व शैक्षिक आत्मनिर्भरता की प्राप्ति, अस्पृश्यता निवारण, मद्य-निषेध, नारी-उत्थान, ग्राम स्वराज्य तथा साम्प्रदायिक सद्भाव की स्थापना को भी असहयोग आन्दोलन के लक्ष्यों में सम्मिलित किया था।

1.4.2 असहयोग आन्दोलन का निषेधात्मक एवं सृजनात्मक स्वरूप

1.4.2.1 असहयोग आन्दोलन का निषेधात्मक स्वरूप

गांधीजी ने स्वदेशी आन्दोलन में अपनाई गई बहिष्कार की रणनीति का असहयोग आन्दोलन में व्यापक प्रयोग किया। भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के आर्थिक आधार को कमज़ोर

करने के उद्देश्य से बॉयकाट अर्थात बहिष्कार में भारत में विदेशी उत्पादों के उपयोग पर तथा भारत से विदेशों में कच्चे माल के निर्यात पर प्रतिबन्ध लगाया गया। विदेशी कपड़ों की होली जलाकर आन्दोलनकारियों ने अपना आक्रोश व्यक्त किया। विदेशी वस्तुओं की दुकानों के सामने आन्दोलनकारियों ने धरना देकर उनके व्यापार में बाधा पहंुचाने का प्रयास किया। देशभक्त महिलाओं से अपेक्षा की गई कि वो विदेशी वस्त्रों का तथा अपने आभूषणों परित्याग कर दें और स्व-निर्मित खादी के वस्त्रों को धारण करें। हिन्दी पत्र स्वराज्य के 18 जुलाई, 1921 के अंक में गया प्रसाद शुक्ल सनेही 'त्रिशूल' की एक क़ौमी ग़ज़ल प्रकाशित हुई थी जिसमें उन्होंने भारतीय महिलाओं को विदेशी वस्त्र और अपने आभूषणों का परित्याग कर स्वदेश-निर्मित खादी को अपनाने के लिए प्रेरित किया था -

निहायत बेहया हैं अब भी जो ज़ेवर पहिनते हैं।
जिन्हें है मुल्क का कुछ दर्द, वो खद्दर पहनते हैं।।

बॉयकाट के अंतर्गत सरकारी स्कूलों, अदालतों, कार्यालयों आदि का भी बहिष्कार किया गया। गांधीजी के आवाहन पर हज़ारों लोगों ने सरकारी नौकरियों, जमी हुई वकालत और सरकारी उपाधियों को त्याग दिया। 1920 में प्रिंस ऑफ़ वेल्स के भारत आगमन पर उसका बहिष्कार किया गया।

1.4.2.2 असहयोग आन्दोलन का सृजनात्मक स्वरूप

स्वदेशी के अंतर्गत भारत में बनी वस्तुओं के प्रयोग का प्रण लिया गया। स्वदेशी वस्तुओं की बिक्री के लिए स्वदेशी स्टोर खोले गए तथा स्वदेशी मेलों का आयोजन किया गया। असहयोग आन्दोलन ने कुटीर उद्योग के पुनरुत्थान को बढ़ावा दिया। चर्खे को गांधीजी ने आर्थिक आत्मनिर्भरता के प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठित किया। लंकाशायर और मानचेस्टर के कपड़ा मिलों के भारतीय कपड़ा बाज़ार पर एकाधिकार को तोड़ने के लिए चर्खा किसी ब्रह्मास्त्र से कम सिद्ध नहीं हुआ। 1920-21 में विदेशी वस्त्रों का आयात 102 करोड़ रुपये था जो कि 1921-22 में घटकर 57 करोड़ रुपये रह गया था। क्रांतिकारी शहीद पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल अपनी देशभक्तिपूर्ण उर्दू नज़्मों के लिए विख्यात हैं। यह बात कम लोग जानते हैं कि बिस्मिल ने स्वदेशी व्रत भी धारण किया था। उनकी कामना थी कि -

तन में बसन स्वदेशी, मन में लगन स्वदेशी,
फिर से भवन भवन में, विस्तार हो स्वदेशी।
सब हों स्वजन स्वदेशी, होवे चलन स्वदेशी,
मरते समय कफ़न भी दरकार हो स्वदेशी।।
उमड़े दिलों में फिर से, गंगा बहे स्वदेशी,
माता व भगनियों का, श्रृंगार हो स्वदेशी।

इस आन्दोलन में स्वदेशी न्याय-व्यवस्था का भी पोषण किया गया तथा ग्राम पंचायतों के विकास के प्रयास किए गए।

सरकारी शिक्षा संस्थानों में महंगी अंग्रेज़ी शिक्षा पद्धति से विद्यार्थियों को मानसिक रूप से गुलाम बनाया जाता था और अपनी संस्कृति तथा अपने संस्कारों के प्रति घृणा करना सिखाया जाता था। असहयोग आन्दोलन का एक लक्ष्य राष्ट्रीय शिक्षा का विकास था। ऐसी शिक्षा जिसमें विद्यार्थी को आरम्भ से ही स्वावलम्बी बनने का प्रशिक्षण दिया जाता हो तथा उसमें नैतिक उत्थान, देश भक्ति, मानवीयता, सत्य, अहिंसा और भ्रातृत्व के संस्कार दिए जाते हों। डॉक्टर ज़ाकिर हुसेन द्वारा जामिया मिलिया इस्लामिया, काशी विद्यापीठ तथा गुजरात विद्यापीठ की स्थापना इसी उद्देश्य से की गई।

गांधीजी यह मानते थे कि भारत की आत्मा उसके गांवों में बसती है। ग्राम स्वराज के लक्ष्य के अन्तर्गत उन्होंने गांवों को आर्थिक, शैक्षिक तथा न्याय-वितरण की दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया।

नारी-उत्थान के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उन्होंने स्त्री शिक्षा के प्रसार, पर्दा प्रथा तथा दहेज प्रथा के उन्मूलन तथा स्त्रियों की आर्थिक आत्मनिर्भरता पर बल दिया।

जीवन भर रंगभेद, जातिभेद व अन्य किसी भी प्रकार के अन्याय के विरुद्ध लड़ने वाले गांधीजी अस्पृश्यता को भारत का सबसे बड़ा सामाजिक एवं धार्मिक कलंक एवं अन्याय मानते थे। असहयोग आन्दोलन में तथाकथित अस्पृश्यों को आदर एवं सम्मान दिया गया तथा अस्पृश्यता निवारण कार्यक्रम को अत्यन्त महत्व दिया गया।

गांधीजी मद्य-निषेध को भारतीयों के चारित्रिक, सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान के लिए एक आवश्यक शर्त मानते थे। मद्य-निषेध हेतु व्यापक प्रचार को उन्होंने अपने राजनीतिक आन्दोलनों का अन्तरंग भाग बना दिया।

राष्ट्रीय एकीकरण असहयोग आन्दोलन का लक्ष्य था। इस आन्दोलन में हिन्दू-मुस्लिम एकता, साम्प्रदायिक सद्भाव तथा सर्व-धर्म सम्भाव को महत्व दिया गया।

असहयोग आन्दोलन ने किसान आन्दोलनों और मज़दूर आन्दोलनों को नया बल प्रदान किया।

1.4.2.3 सरकार द्वारा असहयोग आन्दोलन को कुचलने के प्रयास

सरकार ने असहयोग आन्दोलन को कुचलने के लिए शान्तिपूर्ण प्रदर्शनों, भाषणों, जुलूसों, जन-सभाओं, विदेशी वस्तुओं की दुकानों के सामने धरनों, सरकार विरोधी प्रकाशन सामग्री आदि पर प्रतिबन्ध लगा दिया। लाखों आन्दोलनकारियों पर लाठियां और गोली बरसाई गई और लाखों को जेल में डाल दिया गया। आन्दोलन को कमज़ोर करने के लिए हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य को भड़काया गया तथा भारतीय शासकों, ज़मींदारों, उद्योपतियों, व्यापारियों, विद्यार्थियों व

सरकारी कर्मचारियों को इस आन्दोलन से दूर रहने के लिए कहा गया किन्तु इस आन्दोलन की व्यापकता ने इस आन्दोलन को कुचलने की तमाम सरकारी कोशिशें नाकाम कर दीं।

1.5 चौरीचौरा काण्ड और आन्दोलन की समाप्ति

4 फ़रवरी, 1922 को संयुक्त प्रान्त के गोरखपुर जिले के एक गांव चौरीचौरा में आन्दोलनकारी जुलूस निकाल रहे थे। जुलूस को रोकने के लिए सिपाहियों ने भीड़ पर गोली चला दी। 26 आन्दोलनकारी मारे गए और अनेक घायल हो गए। गोलियां समाप्त होने पर सिपाही थाने में छुप गए। क्रोधित भीड़ ने थाने को आग लगाकर 22 सिपाहियों को मार डाला। इस हत्याकांड की नैतिक ज़िम्मेदारी लेते हुए गांधी जी ने 12 फ़रवरी, 1922 को असहयोग आन्दोलन स्थगित कर दिया। गांधीजी ने घोषित किया -

मैं स्वराज्य सिर्फ़ अहिंसा और सत्य के द्वारा प्राप्त करना चाहता हूँ।

कांग्रेस समिति के 1922 के बारदोली प्रस्ताव द्वारा असहयोग आन्दोलन को स्थगित कर दिया गया और कांग्रेसियों को यह निर्देश दिया गया कि वह राष्ट्रीय पाठशाला, अस्पृश्यता निवारण तथा हिन्दू-मुस्लिम एकता के कार्यों में अपना समय लगाएं। इस निर्णय से आन्दोलनकारियों को भारी धक्का लगा। छुटपुट हिंसा की घटनाओं के कारण देश-व्यापी आन्दोलन के स्थगन का निर्णय उन्होंने कभी भी अपने दिल से स्वीकार नहीं किया। सुभाषचन्द्र बोस ने इस निर्णय की खुलकर आलोचना की। इस निर्णय का विरोध होने पर भी गांधीजी ने इसे वापस नहीं लिया क्योंकि उनके लिए स्वराज से भी अधिक महत्व अहिंसा का था।

1.6 असहयोग आन्दोलन का आकलन

असहयोग आन्दोलन अपने किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल नहीं रहा।गांधीजी देश को एक साल के भीतर स्वराज दिलाने में असफल रहे।अक्टूबर, 1923 में मुस्तफ़ा कमाल पाशा के नेतृत्व में हुई क्रान्ति ने तुर्की में गणतन्त्र की स्थापना कर दी जिससे खलीफ़ा की सत्ता की पुनर्स्थापना के लिए भारत में आन्दोलन किए जाने का औचित्य ही समाप्त हो गया। इसके बाद से अधिकांश मुसलमान राष्ट्रीय आन्दोलन की मुख्य धारा से एक बार फिर दूर चले गए और हिन्दू-मुस्लिम सम्बन्धों में एक बार फिर से दरार पड़ने लगी।

चौरीचौरा काण्ड तथा कई स्थानों पर आन्दोलनकारियों द्वारा लूटमार किए जाने का हवाला देकर अंग्रेज़ों ने असहयोग आन्दोलन को पूर्णरूपेण अहिंसक, अनुशासित व शान्तिपूर्ण नहीं माना। किन्तु लगभग डेढ़ साल तक चले इतने बड़े आन्दोलन में छुटपुट हिंसा तथा लूटमार की घटना होना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी।इस आदोलन ने समस्त राष्ट्र को अनुशासन तथा अहिंसा का पाठ पढ़ाया। इतिहास में इस आन्दोलन का अत्यन्त महत्व है। यह भारतीय इतिहास का पहला व्यापक राजनीतिक जन-आन्दोलन था और विश्व इतिहास का पहला अहिंसक राजनीतिक जन-आन्दोलन। इसमें धर्म, जाति, क्षेत्र और वर्ग का भेद किए बिना राष्ट्र को एकसूत्र

में बांधा गया था। महिलाओं, किसानों, मज़दूरों तथा अन्य सभी वर्गों की सहभागिता ने इस आन्दोलन को व्यापकता प्रदान की थी। यह आन्दोलन आगे चल कर भारत ही नहीं अपितु समस्त विश्व के दलित, परतन्त्र समाजों तथा जातियों के अपने अधिकारों के संघर्ष के लिए प्रेरणा स्रोत बना।

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का राजनीतिक लक्ष्य अब और आगे - पूर्ण स्वराज और फिर स्वतन्त्रता तक पहुंच गया। सरकार को असहयोग आन्दोलन की स्वराज की मांग को आगे चलकर आंशिक रूप से स्वीकार करना पड़ा।असहयोग आन्दोलन के सृजनात्मक पक्ष - आर्थिक, शैक्षिक आत्मनिर्भरता, मद्य-निषेध, नारी-उत्थान, अस्पृश्यता निवारण, ग्राम्य स्वराज तथा राष्ट्रीय एकता पर आन्दोलन के स्थगन बाद भी निरन्तर काम होता रहा।

असहयोग आन्दोलन ने राजनीतिक सुधार एवं सामाजिक परिष्कार के प्रति प्रतिबद्ध पत्रकारिता व साहित्य के विकास में अभूतपूर्व योगदान दिया। हर भाषा के साहित्यकारों व पत्रकारों ने राष्ट्रवादी विचारधारा का पोषण किया। गोरखपुर से प्रकाशित पत्र स्वदेश ने 6 अप्रैल, 1919 को प्रकाशित अपने पहले ही अंक में भारतीयों को स्वतन्त्रता दिए जाने की आवश्यकता पर बल दिया था -

हम चाहते हैं कि संसार के अन्य स्थानीय देशों के मनुष्यों की भांति हिन्दुस्तानियों की भी गणना मनुष्यों में हो । इसलिए जो स्वत्व और जितनी स्वतन्त्रता एक स्वाधीन राष्ट्र के व्यक्ति को प्राप्त है, उतनी ही स्वतन्त्रता भारतवासियों को भी प्राप्त हो ।

इलाहाबाद से प्रकाशित पत्र भविष्य ने 27 मई, 1920 के अंक में अपनी सम्पादकीय टिप्पणी में भारतीयों को स्वतन्त्रता-प्राप्ति हेतु संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया-

सभी भारतीयों को स्वतन्त्रता के लिए आगे कदम बढ़ाना चाहिए। -- अब वह समय दूर नहीं है जब कि भारतवासी इस योग्य हो जाएँगे कि वन्देमातरम् के जयघोष के साथ भारत के सिर पर स्वतन्त्रता का मुकुट धारण करेंगे।

इस आन्दोलन ने गांधीजी को विश्व-शान्ति, अहिंसा, प्रेम, जातीय समानता, वर्णगत समानता और दलितोद्धार का मसीहा बना दिया।

अभ्यास प्रश्न

निम्नांकित पर चर्चा कीजिए -

1 - रॉलट एक्ट तथा उसका विरोध।

2 - गांधीजी द्वारा खिलाफ़त आन्दोलन का समर्थन।

3 - चौरीचौरा काण्ड ।

1.7 सारांश

असहयोग आन्दोलन में स्वदेशी आन्दोलन के स्वशासन, आर्थिक व शैक्षिक आत्मनिर्भरता तथा राष्ट्रीय एकता को स्थापित करने के लक्ष्यों को अंगीकार किया गया था। विश्वयुद्ध में भारतीयों के सहयोग की आशा में भारत सचिव मॉन्टेग्यू की 20 अगस्त, 1917 की ऐतिहासिक घोषणा में होमरूल आन्दोलन की स्वशासन की मांग को सरकार को आंशिक रूप से स्वीकार किया गया किन्तु इस घोषणा के तुरन्त बाद विश्वयुद्ध में मित्र राष्ट्रों का पलड़ा भारी होते देख सरकार ने भारत में राजनीतिक प्रतिरोध को कुचलने के प्रयास प्रारम्भ कर दिए। आतंकवाद के दमन के लिए जस्टिस रॉलट की अध्यक्षता में सेडिषन कमेटी गठित की गई। रॉलट एक्ट राजनीतिक दमन की पराकाष्ठा का प्रमाण था। गांधी जी ने रौलट एक्ट के विरुद्ध फ़रवरी, 1919 में सत्याग्रह सभा का गठन कर देशव्यापी आन्दोलन का आवाहन किया। पंजाब के अमृतसर, लाहौर, गुर्जनवाला, गुजरात तथा लायलपुर में रॉलट एक्ट विरोधी आन्दोलन हो रहे थे। 9 अप्रैल, 1919 को रॉलट एक्ट के विरोध में जुलूस का नेत्त्व कर रहे डॉ. सत्य पाल तथा सैफुद्दीन किचलू को गिरफ्तार कर निर्वासित कर दिया गया। 11 अप्रैल, 1919 को माइकिल ओडवेयर ने पंजाब में मार्शल लॉ लगा दिया। डॉ. सत्य पाल तथा सैफुद्दीन किचलू को रौलट एक्ट का विरोध करने के कारण गिरफ़्तार किए जाने के विरोधमेंहुई 13 अप्रैल, 1919 को अमृतसर के जलियांवाला बागमेंजनसभा में उपस्थित निहत्थे आन्दोलनकारियों पर बिना चेतावनी दिए जनरल डायर ने गोलीबारी की जिससे सैकड़ों लोग मारे गए और घायल हो गए।

कांग्रेस और मुस्लिम लीग को एक राजनीतिक मंच पर लाने के प्रयास तेज़ हो गए थे। 1916 का लखनऊ समझौता हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रतीक था। मई, 1920 में सेव्र की सन्धि से तुर्की के सुल्तान और मुसलमानों के खलीफ़ा को अपदस्थ कर दिया गया। तुर्की के सुल्तान को भारत सहित अनेक देशों के मुस्लिम सम्प्रदाय अपना खलीफा या धार्मिक गुरु मानते थे। भारत में अली बन्धु, मुहम्मद अली एवं शौकत अली ने खिलाफ़त कमेटी का गठन कर पूरे भारत में आन्दोलन प्रारम्भ किया। 20 अगस्त, 1920 को गांधीजी ने असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ किया। इस आन्दोलन को खिलाफ़त आन्दोलन के समर्थन में, पंजाब में पुलिस की ज़्यादतियों के विरोध में तथा एक साल के भीतर स्वराज प्राप्ति के उद्देश्य से प्रारम्भ किया गया था। गांधी जी ने आर्थिक व शैक्षिक आत्मनिर्भरता की प्राप्ति, अस्पृश्यता निवारण, मद्य-निषेध, नारी-उत्थान, ग्राम स्वराज्य तथा साम्प्रदायिक सद्भाव की स्थापना को भी असहयोग आन्दोलन के लक्ष्यों में सम्मिलित किया था।

गांधीजी ने स्वदेशी आन्दोलन में अपनाई गई बहिष्कार की रणनीति का असहयोग आन्दोलन में व्यापक प्रयोग किया। बॉयकाट के अंतर्गत सरकारी स्कूलों, अदालतों, कार्यालयों आदि का भी बहिष्कार किया गया। स्वदेशी के अंतर्गत भारत में बनी वस्तुओं के प्रयोग का प्रण लिया गया।

स्वदेशी वस्तुओं की बिक्री के लिए स्वदेशी स्टोर खोले गए तथा स्वदेशी मेलों का आयोजन किया गया। असहयोग आन्दोलन ने कुटीर उद्योग के पुनरुत्थान को बढ़ावा दिया। चर्खे को गांधीजी ने आर्थिक आत्मनिर्भरता के प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठित किया।

असहयोग आन्दोलन का एक लक्ष्य राष्ट्रीय शिक्षा का विकास था। गांधीजी ने ग्राम स्वराज के लक्ष्य के अन्तर्गत गांवों को आर्थिक, शैक्षिक तथा न्याय-वितरण की दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया।नारी-उत्थान के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए गांधीजी ने स्त्री शिक्षा के प्रसार, पर्दा प्रथा तथा दहेज प्रथा के उन्मूलन तथा स्त्रियों की आर्थिक आत्मनिर्भरता पर बल दिया।असहयोग आन्दोलन में तथाकथित अस्पृश्यों को आदर एवं सम्मान दिया गया तथा अस्पृश्यता निवारण कार्यक्रम को अत्यन्त महत्व दिया गया।मद्य-निषेध हेतु व्यापक प्रचार को गांधीजी ने उन्होंने अपने राजनीतिक आन्दोलनों का अन्तरंग भाग बना दिया।

राष्ट्रीय एकीकरण असहयोग आन्दोलन का एक प्रमुख लक्ष्य था। असहयोग आन्दोलन ने किसान आन्दोलनों और मज़दूर आन्दोलनों को नया बल प्रदान किया। सरकार ने असहयोग आन्दोलन को कुचलने के लिए शान्तिपूर्ण प्रदर्शनों, भाषणों, जुलूसों, जन-सभाओं, विदेशी वस्तुओं की दुकानों के सामने धरनों, सरकार विरोधी प्रकाशन सामग्री आदि पर प्रतिबन्ध लगा दिया। लाखों आन्दोलनकारियों पर लाठियां और गोली बरसाई गई और लाखों को जेल में डाल दिया गया।

4 फ़रवरी, 1922 को गोरखपुर जिले के एक गांव चौरीचौरा में पुलिस वालों की गोलीमारी से क्रोधित आन्दोलनकारियों ने थाने को आग लगाकर 22 सिपाहियों को मार डाला। इस हत्याकांड की नैतिक ज़िम्मेदारी लेते हुए गांधी जी ने 12 फ़रवरी, 1922 को असहयोग आन्दोलन स्थगित कर दिया।असहयोग आन्दोलन अपने किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल नहीं रहा। गांधीजी देश को एक साल के भीतर स्वराज दिलाने में असफल रहे। 1923 में तुर्की में गणतन्त्र की स्थापना के बाद खलीफ़ा की सत्ता की पुनर्स्थापना के लिए भारत में आन्दोलन किए जाने का औचित्य ही समाप्त हो गया। अंग्रेज़ों ने असहयोग आन्दोलन को पूर्णरूपेण अहिंसक, अनुशासित व शान्तिपूर्ण नहीं माना।

इस आदोलन ने समस्त राष्ट्र को अनुशासन तथा अहिंसा का पाठ पढ़ाया। यह भारतीय इतिहास का पहला व्यापक राजनीतिक जन-आन्दोलन था और विश्व इतिहास का पहला अहिंसक राजनीतिक जन-आन्दोलन। इसमें धर्म, जाति, क्षेत्र और वर्ग का भेद किए बिना राष्ट्र को एकसूत्र में बांधा गया था। महिलाओं, किसानों, मज़दूरों तथा अन्य सभी वर्गों की सहभागिता ने इस आन्दोलन को व्यापकता प्रदान की थी। यह आन्दोलन आगे चल कर भारत ही नहीं अपितु

समस्त विश्व के दलित, परतन्त्र समाजों तथा जातियों के अपने अधिकारों के संघर्ष के लिए प्रेरणा स्रोत बना।

इस आन्दोलन ने गांधीजी को विश्व-शान्ति, अहिंसा, प्रेम, जातीय समानता, वर्णगत समानता और दलितोद्धार का मसीहा बना दिया।

1.7 पारिभाषिक शब्दावली

मित्र शक्तियां: (प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान) इंग्लैण्ड, फ्रांस, रूस, इटली, जापान, संयुक्त राज्य अमेरिका आदि।

सेडिशनः राजद्रोह।

पैन-इस्लामिकः मुस्लिम विश्व बन्धुत्व की भावना के अन्तर्गत विश्व के मुसलमानों को एकसूत्र में बांधने के लिए आन्दोलन।

नाइटहुडः ग्रेट ब्रिटेन की सरकार द्वारा 'सर' की उपाधि।

डोमिनियन स्टेटसः स्वशासित स्थिति (उपनिवेषों के सन्दर्भ में स्वशासित उपनिवेश)

ब्रह्मास्त्रः अचूक हथियार

मद्य-निषेधः नशाबन्दी

1.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1 - देखिए 2.3.2 रॉलट एक्ट एवं उसका विरोध

2 - देखिए 2.3.4 खिलाफ़त आन्दोलन

3 - देखिए 2.5 चौरीचौरा काण्ड और आन्दोलन की समाप्ति।

1.9 संदर्भ ग्रंथ सूची

ताराचन्दः भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास (भाग 3), नई दिल्ली, 1984

मजूमदार, आर0 सी0 (सम्पादक) - स्ट्रगल फा़ॅर फ्रीडम, बॉम्बे, 1969

चन्द्रा, बिपन - नेशनलिज़्म एण्ड कोलोनियलिज़्म इन मॉडर्न इण्डिया, नई दिल्ली, 1979

चन्द्रा, बिपन तथा अन्य - इण्डियाज़ स्ट्रगल फा़ॅर फ्रीडम, नई दिल्ली, 1988

दत्त, आर0 पी0 - इण्डिया टुडे, कलकत्ता, 1970

सिंह, अयोध्या - भारत का मुक्ति संग्राम, दिल्ली, 1977

1.10 सहायक उपयोगी पाठ्य सामग्री

देसाई, ए0 आर0 - भारतीय राष्ट्रवाद की अधुनातन प्रवृत्तियां, दिल्ली, 1977

1.11 निबंधात्मक प्रश्न

1. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में असहयोग आन्दोलन के महत्व का आकलन कीजिए।

इकाई दो

राष्ट्रीय आन्दोलन और समाजवादी विचारधारा

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 भारत में समाजवादी विचारधारा का उदय

2.3.1 समाजवाद क्या है

2.3.2 समाजवाद का उदय कब और कैसे हुआ

2.3.3 भारत में समाजवाद का उदय

2.4 कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना

2.4.1 1920-1934 तक

2.4.2 1934-1942 तक

2.4.3 1942 से स्वतंत्रता प्राप्ति तक

2.5 कांग्रेस के अन्दर समाजवादी विचारधारा – नेहरू और सुभाष

2.6 कांग्रेस समाजवादी पार्टी की स्थापना

2.7 मजदूर तथा किसान आन्दोलन

2.8 सारांश

2.9 पारिभाषिक शब्दावली

2.10 स्वमूल्यांकित प्रश्नों के उत्तर

2.11 संदर्भ ग्रन्थ सूची

2.12 निबंधात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

भारत में श्रमिक आन्दोलन के विकास ने उन परिस्थितियों को जन्म दिया जिसके फलस्वरूप भारतीय राजनीति व राष्ट्रीय आन्दोलन में वामपंथी विचारधारा का उदय हुआ। उन्नीसवीं सदी के अन्तिम तथा बीसवीं सदी के प्रथम दशक में मजदूरों के बार-बार होने वाले आन्दोलनों ने

अनेक राष्ट्रवादियों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया। परन्तु इस दौर में किसानों और मजदूरों के प्रति कांग्रेस की उदासीनता ने अपरोक्ष रूप से वामपंथ के उदय में सहायता प्रदान की। वामपंथ के उदय के फलस्वरूप भारतीय मुक्ति संघर्ष में समाजवादी (socialist) तथा साम्यवादी (communist) विचारधारा का समावेश हुआ। फ्रांसीसी क्रान्ति के समय पहली बार दक्षिणपंथी और वामपंथी शब्द का प्रयोग किया गया। राजा के समर्थकों को दक्षिणपंथी तथा विरोधियों को वामपंथी कहा गया। कालान्तर में समाजवाद तथा साम्यवाद के उत्थान के पश्चात वामपंथी शब्द का प्रयोग इनके लिए होने लगा। 1917 की रूसी क्रान्ति के बाद सिर्फ भारत में ही नहीं वरन् विश्व के अनेक राष्ट्रों में समाजवादी विचारधारा तेजी से प्रवाहित होने लगी थी। भारतीय राजनीति में समाजवादी विचारधारा के पनपने से न केवल राष्ट्रीय आन्दोलन का क्षेत्र ही विस्तृत हुआ वरन् इसके स्वरूप में भी महत्वपूर्ण बदलाव आए। समाजवादी विचारधारा के पोषकों ने कृषकों व श्रमिकों के सामाजिक तथा आर्थिक समस्या को राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ जोड़कर इसको एक व्यापक आधार प्रदान किया। इस समाजवादी विचारधारा को एक ओर तो कम्युनिस्टों ने आगे बढ़ाया, दूसरी ओर जवाहरलाल नेहरू व सुभाषचन्द्र बोस इसके प्रतीक बन गए।

भारत में वामपंथी आन्दोलन की दो मुख्य धाराएँ विकसित हुईः- (1) साम्यवाद (कम्युनिज्म), जिसको कामिन्टर्न, जो कि रूस का अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी संगठन था, नियन्त्रित करता था और (2) कांग्रेस समाजवादी पार्टी, जो कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का वामपन्थी दल था।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य आपको समाजवादी विचारधारा से अवगत कराना है तथा यह भी बताना है कि भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में समाजवादी विचारधारा का क्या योगदान रहा। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप समझ पाएँगे कि –

- समाजवादी विचारधारा क्या है,
- भारत में समाजवादी विचारधारा का उदय कब और कैसे हुआ,
- कम्युनिस्ट पार्टी की राष्ट्रीय आन्दोलन में क्या भूमिका रही,
- भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में समाजवादी विचारधारा की क्या भूमिका रही,
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस समाजवादी विचारधारा से किस हद तक प्रभावित हुआ,

2.3 भारत में समाजवादी विचारधारा का उदय

2.3.1 समाजवाद क्या है

समाजवादी विचारधारा वह वैचारिक आयाम है जो समाज का वैज्ञानिक विश्लेषण करता है तथा इसमें समाए हुए विसंगतियों को दूर करता है। समाजवाद का अर्थ एक ऐसे समाज के निर्माण से है जो शोषण मुक्त हो। समाजवादी समाज में किसी एक वर्ग द्वारा दूसरे वर्ग का शोषण नहीं होता है। समाजवादी समाज समानता पर आधारित होता है एवं श्रमिकों तथा किसानों के अधिकारों का पोषक होता है। समाजवादी समाज में स्त्रियों को भी पुरूषों के समान स्वतंत्रता प्राप्त होता है। समाजवादी समाज वह समाज होता है जहाँ उत्पादन के साधनों तथा समस्त सम्पत्ति पर समाज के सभी वर्गों के लोगों का समान रूप से आधिपत्य होता है। समाजवादी विचारधारा एक ओर जहाँ सामंतवादी प्रथा तथा पूँजीवादी व्यवस्था पर आघात करता है वहीं दूसरी ओर किसानों तथा मजदूरों के हितों का पोषण भी करता है। समाजवादी समाज में सभी वर्गों के लोगों को रोजगार, आवाश, स्वास्थ्य सुरक्षा, वृद्धावस्था में सुरक्षा, अवकाश, शिक्षा के अधिकार इत्यादि प्राप्त होता है। अतः जो लोग उपरोक्त विचारों के पोषक होते हैं वे समाजवादी विचारधारा के लोग माने जाते हैं।

2.3.2 समाजवाद का उदय कब और कैसे हुआ

बड़े-बड़े उद्योगों की स्थापना सर्वप्रथम पश्चिमी राष्ट्रों में ही संभव हो पाया। औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप समाज में दो वर्गों का उदय एक साथ ही अस्तित्व में आया – एक पूँजीपती वर्ग, जो इन उद्योगों के मालिक थे, तथा दूसरा श्रमिक वर्ग, जो इन उद्योगों में मेहनत मजदूरी करके उत्पादन को बढ़ाते थें। पूँजीपती वर्गों द्वारा श्रमिकों का प्रत्येक स्तर पर शोषण किया जाता था। 15-18 घंटे काम करने पर भी उन्हें उचित मजदूरी प्राप्त नहीं हो पाता था। उनके आवास, शिक्षा, पोषण आदि पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता था। इसी के फलस्वरूप समाजवादी विचारधारा का उदय हुआ जो मजदूरों का पोषक और पूँजीपतियों का विरोधी था। इस काल में पश्चिमी राष्ट्रों में श्रमिकों के हितैषी के रूप में अनेक समाजवादी विचारकों का उदय हुआ। सबसे प्रमुख समाजवादी विचारक कार्ल मार्क्स थे, किन्तु वे अपने समय के सभी समाजवादी विचारकों से आगे निकल गए और उन्होंने साम्यवादी (कम्युनिस्ट) समाज के निर्माण का स्वप्न देखा।

2.3.3 भारत में समाजवाद का उदय

भारत में समाजवादी विचारधारा के उदय में ब्रिटिश शासन की महत्वपूर्ण भूमिका रही। प्लासी विजय के बाद अंग्रेजों ने बंगाल के समस्त संसाधनों को हस्तगत कर लिया। लैंड रिवेन्यू सिस्टम को लागू करने के बाद किसानों का जबरदस्त शोषण प्रारम्भ हुआ। करों के अधिक बोझ, ब्रिटिश आर्थिक नीति तथा बार-बार पड़ने वाले अकालों ने किसानों के मनोबल को पूरी तरह से

तोड़ दिया और उनकी दशा अत्यन्त दयनीय हो गयी। अंग्रेजों ने भारत में अपना शासन स्थायी करने के लिए यहाँ के राजाओं-महाराजाओं, जमींदारों, साहूकारों, व्यापारिक घरानों तथा पूँजीपतियों को अपना मित्र बनाया एवं इन्हें किसानों एवं मजदूरों का शोषण करने की पूर्ण स्वतंत्रता दे दी। इस काल में करों में इतनी अधिक वृद्धि की गयी कि उसे चुकाने के बाद किसानों के पास कुछ नहीं बचता था। भारतीय जमींदारों तथा देशी राजवाड़ों ने अंग्रेजों के साथ मिलकर किसानों के शोषण की एक ऐसी प्रवृति को जन्म दिया जो दुनिया के किसी अन्य देश में उदाहरण रूप में नहीं था।

इंगलैंड में औद्योगिक क्रान्ति के बाद जो अवशेष पूँजी भारत में निवेश की गयी उसके फलस्वरूप अनेक नए-नए उद्योगों तथा बागानों की स्थापना की गयी जिसके फलस्वरूप एक नए मजदूर वर्ग का उदय हुआ। विभिन्न कारखानों तथा बागानों में काम करने वाले मजदूरों के शोषण की एक जैसी गाथा थी – अत्यधिक श्रम और कम मजदूरी। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद भारत में औद्योगिक क्षेत्रों में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। अनेक नए-नए कल कारखानों के साथ-साथ बगानों की संख्या में भी असीम वृद्धि हुई। इसलिए यह स्वाभाविक ही था कि मजदूरों की संख्या भी बढ़ती चली गई। युद्ध के समय मजदूरों ने दिन-रात मेहनत करके उत्पादन को बढ़ाया जिससे कारखानों के मालिकों की आय में अत्यधिक वृद्धि हुई। परन्तु उसी अनुपात में मजदूरों की मजदूरी नहीं बढ़ी वरन् विश्वयुद्ध के बाद जिस तरह से महंगाई बढ़ी, उनकी मजदूरी में कमी ही आ गई। 15-18 घंटों तक काम करने के बाद भी मजदूरों को इतना मजदूरी नहीं मिल पाता था कि वे दो वक्त का भोजन ठीक से कर सके। इन्हें गन्दी बस्तियों में, अंधेरे कमरे में रखा जाता था, जहाँ पानी, सफाई आदि की कोई व्यवस्था नहीं थी। विभिन्न कल कारखानों में स्त्रियों तथा बच्चों तक को काम पर लगाया गया था। मिल मालिकों तथा सरकार की तरफ से इन मजदूरों के लिए आवास, चिकित्सा, शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं की गई थी। इस समय कारखानों में अत्यधिक उत्पादन के लिए कच्चे मालों की आवश्यकता थी। अतः किसानों ने भी जी-तोड़ मेहनत की परन्तु इसके एवज में उन्हे भी वह लाभ प्राप्त नहीं हुआ जिसकी उन्हें आशा थी। मिल मालिकों तथा बगान मालिकों के इस शोषण के फलस्वरूप किसानों तथा श्रमिकों में जबरदस्त असंतोष की भावना पनपने लगी। इन्हीं परिस्थितियों के कारण भारत में समाजवादी विचारधारा का प्रवेश हुआ।

भारत के अनेक युवा शिक्षित वर्ग जब पश्चिमी देशों के सम्पर्क में आए तो इन्होंने पश्चिमी साहित्य का गहन अध्ययन किया। 1917 की रूसी क्रान्ति ने अनेक भारतीय युवा शिक्षित वर्गों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। क्योंकि इस क्रान्ति ने विश्व के इतिहास में पहली बार, रूस में, एक साम्यवादी सरकार की स्थापना का मार्ग प्रसस्त किया, जिसमें मजदूरों का शोषण नहीं था। अतः कई शिक्षित युवा वर्ग इस विचारधारा से प्रभावित होकर भारत के किसानों तथा मजदूरों को

लामबद्ध करना शुरू कर दिया। इसके फलस्वरूप भारत में अनेक मजदूर यूनियन तथा किसान पार्टी का जन्म हुआ। प्रथम विश्वयुद्ध से पहले भी मजदूरों ने कई बार हड़ताल तथा प्रदर्शन करके अपने असंतोष को उजागर किया था परन्तु प्रथम विश्वयुद्ध के पहले मजदूर मूलतः असंगठित थे और वे अपने अधिकारों को लेकर उतने सजग नहीं थे जितने कि बाद के वर्षों में देखे गए। इस समय के आन्दोलनों को ज्यादातर स्वतः स्फूर्त आन्दोलन कहा गया है। क्योंकि इस समय के आन्दोलनों को कोई केन्द्रीय नेतृत्व प्राप्त नहीं होता था तथा हड़तालियों का कोई ठोस कार्यक्रम या संगठन नहीं था। हालांकि मजदूरों के बार-बार होने वाले आन्दोलनों ने एक केन्द्रीय संगठन की आवश्यकता को अनिवार्य बना दिया और इसी के फलस्वरूप 31 अक्टूबर 1920 को एक अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (ए.आई.टी.यू.सी) की स्थापना की गयी। हालांकि यह यूनियन एक राष्ट्रवादी नेता लाला लाजपत राय की अध्यक्षता में स्थापित की गई थी। परन्तु इसके बाद अनेक वामपंथियों ने समाचारपत्रों तथा पत्रिकाओं के माध्यम से मजदूरों के बीच समाजवादी विचारधारा का प्रचार किया। समाजवादी विचारधारा के तहत अब मजदूर अपने अधिकारों को लेकर पहले की अपेक्षा अधिक सजग हो उठे।

प्रथम विश्वयुद्ध के पहले तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेताओं ने कभी भी भारतीय समाज के एक बहुत बड़े समूह को, किसानों तथा मजदूरों को, अपने साथ जोड़ने की कोशिश नहीं की। किसानों तथा मजदूरों के प्रति कांग्रेस की नीति प्रारम्भ से ही ढ़ूल-मूल रवैया अपनाने वाली रही। श्रमिकों के मामले में कांग्रेस तभी अपनी कोई भूमिका निभाता था जब विरोध ब्रिटिश पूँजीपतियों का किया जा रहा होता था। परन्तु जहाँ भारतीय पूँजीपतियों का विरोध होता था वहाँ कांग्रेस मजदूरों से कोई सरोकार नहीं रखता था। कांग्रेस पर दक्षिणपंथी बुर्जुआओं का वर्चस्व था। इसमें अनेक बड़े-बड़े पूँजीपती तथा जमींदार लोग शामिल थे। ये लोग कांग्रेस को बहुत बड़े पैमाने पर आर्थिक सहायता पहुँचाते थे। असहयोग आन्दोलन की विफलता ने कांग्रेस के बहुत बड़े तबके में निराशावादी भावना का विकास किया। कांग्रेस में विश्वास करने वाले बहुत से लोगों को गाँधीवाद के प्रति आस्था कमजोर होने लगी। क्योंकि बहुत से लोगों ने गांधी के इस बात पर यकीन कर लिया था कि एक वर्ष के भीतर उन्हें स्वराज मिल जाएगा। परन्तु उनका यह सपना टूट चुका था। बहुत से राष्ट्रवादी अब राष्ट्रीय आन्दोलन में समाज के सभी तबकों यथा किसानों, मजदूरों, महिलाओं के सहयोग की आवश्यकता को महसूस करने लगे थे और इस प्रकार बहुत से बुद्धिजीवियों का ध्यान उन किसानों, मजदूरों तथा महिलाओं की तरफ गया जो कई दशकों से शोषण की जिन्दगी जी रहे थे। ऐसा नहीं है कि प्रथम विश्वयुद्ध के पहले राष्ट्रवादी नेता समाजवादी विचारों से परिचित नहीं थे। कांग्रेस के अनेक राष्ट्रवादी नेता पश्चिमी देशों में ही शिक्षा ग्रहण किए थे और समाजवादी विचारधारा से भली-भाँती परिचित थे परन्तु भारतीय

राजनीति में वे इस विचारधारा को नहीं अपनाना चाह रहे थे क्योंकि शोषित किसानों और मजदूरों की समस्या की तरफ ध्यान देने से जमींदारों तथा पूँजीपतियों का एक बहुत बड़ा तबका, जो कि कांग्रेस का आधार था, उनसे विमुख हो जाता।

राष्ट्रवादियों का यह मानना था कि स्वराज प्राप्ति के बाद शोषण और दरिद्रता अपने आप समाप्त हो जाएगी, इसलिए इनलोगों ने मजदूरों और किसानों की समस्या पर विशेष ध्यान नहीं दिया। परन्तु असहयोग आन्दोलन के पश्चात उभरी निराशा ने कुछ राष्ट्रवादियों को यह सोंचने पर मजबूर कर दिया कि वह कौन सा रास्ता अख्तियार किया जाए जिससे समाज के सभी वर्गों को राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल किया जा सके और इसी सोंच का परिणाम था भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में समाजवादी विचारधारा का उदय हुआ।

स्वमूल्यांकित प्रश्न

1. समाजवाद के विषय में अपने विचार निम्नांकित पंक्तियों में लिखिये –

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.4 कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना

2.4.1 1920-1934 तक

अक्टूबर 1920 में एम. एन. राय ने ताशकंद में भारतीय साम्यवादी (कम्युनिस्ट) दल का गठन किया। इसके फलस्वरूप भारत में भी कई जगहों पर कम्युनिस्ट पार्टी का गठन किया गया। एस. ए. डांगे ने बंबई में, मुजफ्फर अहमद ने बंगाल में, गुलाम हुसैन ने पंजाब में तथा सिगारवेलु चेटियार ने मद्रास में कम्युनिस्ट पार्टी का गठन किया। 1924 में भारत में, कानपुर षड्यन्त्र के मुकद्दमे का अन्त होते ही, सत्यभक्त ने यह घोषणा कर दी कि उसने भारतीय साम्यवादी दल की स्थापना कर दी है। इन्होंने पार्टी के एक अंतरिम संविधान की भी घोषणा की जिसमें भारतीय समाज के सभी समुदायों को उत्पादन के साधनों तथा संपत्ति पर समान हक की बात कही गयी। साम्यवादी दलों के नेताओं ने अपने विचारों से लोगों को अवगत कराने के लिए कई प्रकार के पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारम्भ किया। एस. ए. डांगे ने सोशलिस्ट, मुहम्मद अहमद ने नवयुग, मुहम्मद हुसैन ने इकबाल, सिगारवेलु चेटियार ने लेबर किसान गजट का प्रकाशन प्रारम्भ किया।

1920-1934 के दौर में कम्युनिस्टों को एक ओर जहाँ जबरदस्त ब्रिटिश दमन का सामना करना पड़ा वहीं दूसरी ओर अपनी संकीर्णतावादी सोच के कारण भी उन्हें बहुत नुकसान उठाना पड़ा। इस दौर में उन्होंने उस आन्दोलन से अपने को अलग रखा जिसका नेतृत्व कांग्रेस कर रही थी, क्योंकि कांग्रेस पर बुर्जुआ वर्ग का वर्चस्व था जो मजदूरों के हित में काम नहीं कर सकता था। इस प्रकार कम्युनिस्टों ने राष्ट्रीय संघर्ष की मुख्य धारा पर वर्चस्व स्थापित करने का मौका खो दिया। हालांकि इस दौर में उन्होंने अनेक प्रान्तीय किसान तथा मजदूर पार्टी का गठन करके किसानों तथा मजदूरों को बड़े पैमाने पर संगठित करने का प्रयास किया। इनमें प्रमुख थी, बंगाल की लेबर स्वराज पार्टी, बंबई की कांग्रेस लेबर पार्टी, पंजाब में कीर्ति किसान पार्टी तथा मद्रास में लेबर किसान पार्टी आफ हिन्दुस्तान। इन पार्टियों ने अखबारों के माध्यम से अपने विचारों तथा कार्यक्रमों को मजदूरों के बीच प्रचारित-प्रसारित करने की कोशिश की। अक्टूबर 1928 में मेरठ में एक कान्फ्रेंस हुई और वहाँ भी एक किसान और मजदूर पार्टी बनी। इस कान्फ्रेंस में एक प्रस्ताव पारित किया गया जिसमें मजदूरों तथा किसानों के अनेक अधिकारों को सम्मिलित किया गया जैसेः- जमींदारी प्रथा का अंत, भूमिहीन किसानों के लिए भूमि, औद्योगिक मजदूरों के लिए न्यूनतम वेतन, काम के अधिकतम आठ घंटे, राष्ट्रीय स्वाधीनता, राजशाही व्यवस्था की समाप्ति, मजदूरों के ट्रेड यूनियन बनाने के अधिकार को मान्यता इत्यादि। 1928 में कलकत्ता अखिल भारतीय मजदूर किसान पार्टी की स्थापना की गयी। कम्युनिस्टों ने मजदूरों के बीच विभिन्न समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, तथा पर्चे बाँटकर उन्हें अपने अधिकारों के प्रति सजग बनाया। कम्युनिस्टों का यह मानना था कि भारत के शोषित वर्गों यथा किसानों तथा मजदूरों की मुक्ति का प्रश्न तथा देश की मुक्ति का प्रश्न अलग-अलग नहीं वरन् आपस में जुड़ा हुआ है। कम्युनिस्ट यह चाहते थे कि कांग्रेस पूर्ण स्वतंत्रता की प्राप्ति को अपना लक्ष्य निर्धारित करे। परन्तु कांग्रेस के भीतर दक्षिणपंथी विचारधारा वाले इस मत से सहमत नहीं थे। इसलिए 1928 में जब कलकत्ता में कांग्रेस का अधिवेशन हो रहा था तब हजारों मजदूर कम्युनिस्ट के नेतृत्व में कांग्रेस के पंडाल को घेर कर घंटो बैठे रहे और कांग्रेस के सामने उन्होंने यह माँग रखा कि कांग्रेस का लक्ष्य पूर्ण स्वाधीनता घोषित किया जाए।

ब्रिटिश सरकार राष्ट्रवादियों की अपेक्षा कम्युनिस्टों के कट्टर शत्रु थे। इसलिए उन्होंने यह पूरा प्रयास किया कि किसी भी प्रकार से कम्युनिस्ट आन्दोलन का दमन कर दिया जाए। पेशावर केस (1922), कानपुर केस (1924), मेरठ केस (1929) के माध्यम से अनेक कम्युनिस्ट नेताओं को लम्बी सजाएँ दी गयी। मेरठ केस ब्रिटिशों द्वारा किए गए कम्युनिस्टों के दमन में सबसे अहम था। 14 मार्च 1929 को 31 कम्युनिस्टों को गिरफ्तार करके मेरठ में इन पर मुकद्दमा चलाया गया। यह मुकद्दमा तीन वर्ष तक चला। इनमें दो अंग्रेज कम्युनिस्ट तथा एक अंग्रेज पत्रकार भी शामिल

था। इनमें से कई राष्ट्रवादी तथा व्यापार संघ के लोग थे। चूँकि कम्युनिस्ट कट्टर ब्रिटिश विरोधी थे अतः राष्ट्रवादी उनके प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करने लगे। इस कारण से कांग्रेस कार्यकारिणी ने इनके मुकद्दमे के लिए एक केन्द्रीय सुरक्षा समिति का गठन किया। इस मुकद्दमे में कम्युनिस्टों की तरफ से वकील के रूप में जवाहरलाल नेहरू, कैलाश नाथ काटजू और डा एफ. एच. अंसारी जैसे लोगो ने बहश किया। अन्ततः 1934 में ब्रिटिश सरकार ने कम्युनिस्ट पार्टी को प्रतिबन्धित कर दिया। क्योंकि ब्रिटिश सरकार नहीं चाहती थी कि कम्युनिस्ट पार्टी जनता के बीच सक्रिय रूप से काम करे और एक मजबूत संगठन बन जाए।

2.4.2 1934-1942 तक

द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारम्भ होने से पहले कम्युनिस्टों ने अपनी नीति में परिवर्तन किया और कांग्रेस के अन्दर रहकर काम करने का फैसला किया। उनकी यह नीति सफल साबित हुई। इस दौर में कम्युनिस्ट कांग्रेस के अन्दर अपने लिए महत्वपूर्ण स्थान बनाने में सफल रहे तथा किसान एवं मजदूरों के साथ-साथ वह छात्रों और लेखकों को भी संगठित करने में अग्रणी भूमिका निभा सके। अखिल भारतीय किसान सभा, अखिल भारतीय छात्र संगठन, प्रगतिशील लेखक संघ इन सभी का गठन इस काल में ही हुआ। इस बीच कम्युनिस्टों ने मजदूरों के अनेकों हड़तालों का नेतृत्व करके ट्रेड यूनियन संगठनों पर अपना प्रभाव बढ़ा लिया।

1934 के बाद कांग्रेस के भीतर तथा बाहर वामपंथियों की शक्ति में इतना अधिक उछाल आ गया कि राष्ट्रीय राजनीति में यह प्रश्न उठने लगा कि राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व किसके हाथ में चला जाएगा – दक्षिणपंथी सुधारवादियों के हाथ में या वामपंथियों के हाथ में। कांग्रेस के भीतर तथा बाहर वामपंथियों के मतों में अनेक प्रकार की भिन्नताएँ थी। कांग्रेस सोशलिस्ट इस तथ्य से पूर्णरूपेण अवगत थे कि साम्राज्यवादी शासन तब तक समाप्त नहीं किया जा सकता जब तक कि जनता के अधिकाधिक हिस्से को संघर्ष में सम्मिलित नहीं कर लिया जाता। दक्षिणपंथी अनेक वामपंथी जनसंगठनों के स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकारने के पक्ष में तो थे परन्तु वे चाहते थे कि उनके कार्य आर्थिक प्रश्नों तक ही सीमित रहे तथा राजनीतिक प्रश्नों को कांग्रेस के हाथ में ही छोड़ दिया जाए। परन्तु वामपंथी इससे सहमत नहीं थे। वे चाहते थे कि जन संगठन आर्थिक एवं राजनीतिक दोनों प्रश्नों को लेकर चले। हालांकि कुछ बिन्दुओं पर सभी वामपंथियों में सहमति भी थी। 1935 का भारत सरकार अधिनियम लागू हो जाने पर दक्षिणपंथियों का यह मत था कि कांग्रेस को चुनाव में भागीदारी करनी चाहिए और बहुमत मिलने पर सरकार बनानी चाहिए। परन्तु वामपंथी बहुमत प्राप्त होने पर सरकार बनाने के विरूद्ध थे। उनका मानना था कि सरकार बनाने से कांग्रेस ब्रिटिश शासकों के साथ सहयोग के मार्ग पर चली जाएगी, जिसके फलस्वरूप साम्राज्यवाद विरोधी आन्दोलन कमजोर पड़ जाएगा। हालांकि देखा जाए तो द्वितीय विश्वयुद्ध तक वामपंथियों के बीच एकता बनी रही और वे सभी कांग्रेस के साथ काम करते रहे।

1939 में द्वितीय विश्वयुद्ध आरंभ होते ही वामपंथियों के बीच दरार पड़ने लगा। कम्युनिस्ट पार्टी, कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी तथा 1939 में सुभाषचन्द्र बोस द्वारा स्थापित फोरवर्ड ब्लाक तीनों वामपंथी पार्टियाँ थी और तीनों ब्रिटिश शासकों को किसी भी प्रकार युद्ध में सहयोग नहीं देना चाहती थी। परन्तु तीनों के विचारों में बहुत अन्तर था। पहले तो कम्युनिस्टों ने इस युद्ध को साम्राज्यवादी युद्ध घोषित कर दिया परन्तु जब 1941 में हिटलर ने सोवियत रूस पर आक्रमण कर दिया तब उन्होंने उसे जनयुद्ध घोषित कर दिया। अब सोवियत रूस की मदद करना कम्युनिस्टों का धर्म बन गया। चूँकि ब्रिटिश रूस के साथ थे इसलिए यह स्वाभाविक ही था कि कम्युनिस्ट भी ब्रिटिशों के साथ हो गए। अतः इस समय जब कांग्रेस ने 1942 का भारत छोड़ो आन्दोलन चलाया तो कम्युनिस्टों ने इस आन्दोलन से अपने को अलग रखा। अतः यह कम्युनिस्टों के लिए बहुत बड़ी भूल थी। इसके कारण एक ओर जहाँ उनका विकास अवरूद्ध हुआ वहीं दूसरी ओर उन्होंने जनता के एक बहुत बड़े हिस्से का बहुमत भी खो दिया।

2.4.3 1942 से स्वतंत्रता प्राप्ति तक

1934 से 1942 तक कम्युनिस्ट पार्टी प्रतिबन्धित रही। इस बीच इसने कांग्रेस के साथ मिलकर अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए। परन्तु 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन का विरोध करके इन्होंने जनता के बहुत बड़े समुदाय का समर्थन खो दिया। परन्तु इसके बाद भी राष्ट्रीय आन्दोलन में ये सक्रिय भूमिका निभाते रहे। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद महंगाई बढ़ने और मजदूरों की छटनी के कारण 1945 में लगभग सभी उद्योगों में हड़ताल की लहर फैल गई। इस समय मजदूरों को कम्युनिस्टों का समर्थन प्राप्त होता रहा। 1946 में जब सेना और नौसेना का विद्रोह हुआ तब कम्युनिस्टों ने न केवल इसे अपना समर्थन दिया वरन् मजदूरों तथा आम जनता को शांतिपूर्ण हड़ताल के लिए आह्वान भी किया। 1945-46 में जब तेलंगाना, पुन्नप्रा बायालार एवं तेभागा आन्दोलन छिड़ा तो कम्युनिस्टों ने इसमें जबरदस्त भूमिका निभायी। तेलंगाना में कम्युनिस्टों ने जमींदारों की जमीन किसानों में बाँट दी। पुन्नप्रा बायालार का संघर्ष सामंतवाद के विरूद्ध था जिसका नेतृत्व मजदूर यूनियन तथा कम्युनिस्ट पार्टी ने किया। 1946 में बंगाल के तेभागा आन्दोलन का नेतृत्व किसान सभा ने किया जिसके प्रमुख नेता कम्युनिस्ट थे।इस प्रकार भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में किसानों तथा मजदूरों को लामबद्ध करने तथा उन्हें अपना अधिकार दिलाने एवं कांग्रेस की नीति में परिवर्तन कराने में कम्युनिस्टों ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। परन्तु फिर भी यह कोई बहुत बड़ी पार्टी के रूप में नहीं उभर सकी तथा इसके सदस्यों की संख्या भी कोई बहुत बड़ी नहीं थी। फिर भी राष्ट्रीय आन्दोलन में इसके महत्व को नकारा नहीं जा सकता।

स्वमूल्यांकित प्रश्न

1. कम्यूनिज्म के विषय में अपने विचार निम्नांकित पंक्तियों में लिखिये –

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.5 कांग्रेस के अन्दर समाजवादी विचारधारा – नेहरू और सुभाष

बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक की अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक था कांग्रेस के अन्दर वामपंथ का उदय। आतंकवादी आन्दोलनों से सम्बन्धित होने के आरोप में जेल में बन्द सुभाषचन्द्र बोस को 1927 में रिहा कर दिया गया। जेल से बाहर आने के बाद बोस का मुख्य उद्देश्य था युवा वर्गों एवं छात्रों को संगठित करना। इस प्रकार वे वामपंथी विचारधारा के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने लगे।

इधर 1927 में जवाहरलाल नेहरू ने सोवियत रूस की यात्रा की थी जिस कारण वे समाजवादी विचारधारा से अत्यधिक प्रभावित हुए। नेहरू पर समाजवाद का प्रभाव किस कदर हावी होता जा रहा था इसे 1927 के मद्रास अधिवेशन से समझा जा सकता है जब नेहरू ने पूर्ण स्वाधीनता को कांग्रेस का लक्ष्य घोषित करने का प्रस्ताव रखा था। हालांकि कांग्रेस में दक्षिणपंथियों के प्रभाव के कारण यह प्रस्ताव पारित नहीं हो पाया। इसके बाद नेहरू और बोस ने मिलकर भारत के कई शहरों में इंडिपेंडेंस लीग की स्थापना की जिसका मुख्य उद्देश्य युवा वर्गों को राजनीति की ओर आकर्षित करना था। नेहरू ने जहाँ एक ओर किसानों की समस्यओं की तरफ ध्यान देना शुरू किया वहीं दूसरी ओर बोस ने औद्योगिक मजदूरों पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। नेहरू तथा बोस में कई सारे वैचारिक मतभेदों के बावजूद उनका उद्देश्य एक था कि कांग्रेस की नीति समाजवाद से प्रभावित हो। नेहरू के प्रयास से ही 1931 में करांची अधिवेशन में कांग्रेस ने मौलिक अधिकारों तथा आर्थिक कार्यक्रमों की घोषणा कि जो कि उसके समाजवाद की तरफ बढ़ने के स्पष्ट लक्षण थे। 1935-1936 के दौर में समाजवादी विचारधारा अपने चरम सीमा पर था। इस दौर में नेहरू ने अपना ध्यान किसानों और मजदूरों की समस्या पर, विशेष रूप से राजस्व एवं लगान में कमीं, जबरन मजदूरी की समाप्ति, ऋणों को कम किया जाना, तथा किसान यूनियनों को मान्यता देना इत्यादि, पर केन्द्रित किया। लखनऊ(1935) तथा फैजपुर (1936) के कांग्रेस अधिवेशन में नेहरू अध्यक्ष थे और इस समय उन्होंने अपने भाषणों तथा वक्त्वयों द्वारा अपने समाजवादी विचारों का अधिक खुलासा किया। नेहरू यह बात भली-भाँति जानते थे कि राष्ट्रीय संघर्ष में तब तक सफलता प्राप्त नहीं हो सकता जब तक कि समाज के सभी वर्गों का

राष्ट्रीय आन्दोलन में संलिप्तता न हो जाए। इसके लिए यह जरूरी था कि सबों के हितों का ध्यान रखा जाए। इसलिए उन्होंने व्यस्क मताधिकार पर आधारित चुनाव, सभी भारतीयों के अधिकारों और सुविधाओं हेतु एक संविधान सभा, तथा समाजिक एवं आर्थिक असमानता का अंत जैसे कार्यक्रम कांग्रेस के सामने रखे। इन अधिवेशनों में उन्होंने किसानों के अनेक समस्याओं को कांग्रेस के साथ जोड़ दिया। 1936 में स्टेट पीपुल्स कांफ्रेंस के पांचवे अधिवेशन में नेहरू के नेतृत्व में पहली बार किसानों के मांगों की एक कार्यक्रम की रूपरेखा बनाई गई जिसमें भू-राजस्व में एक-तिहाई की कटौती, ऋणों में कमीं तथा विभिन्न क्षेत्रों से आए किसानों के शिकायतों की जाँच आदि मुद्दों को शामिल किया गया। लखनऊ के कांग्रेस अधिवेशन में नेहरू ने सलाह दी कि ट्रेड यूनियनों तथा किसान सभाओं को सामूहिक सदस्यता दी जाए। जयप्रकाश नारायण, नरेन्द्रदेव, और अच्युत पटवर्धन समजवादी नेता थे जिन्हें लखलऊ अधिवेशन के बाद नेहरू की वर्किंग कमेटी में सम्मिलित किया गया। 1938 एवं 1939 में बोस कांग्रेस के अध्यक्ष बने। हालांकि उनके दुबारा अध्यक्ष बनने पर गांधीवाद की पराजय तथा समाजवाद की जीत थी परन्तु बोस को अत्यधिक विरोध का सामना करना पड़ा। क्योंकि अभी भी कांग्रेस में दक्षिणपंथियों का वर्चस्व था। अंततः बोस ने अध्यक्ष पद से इस्तिफा दे दिया परन्तु फिर भी भारत के औद्योगिकरण और सोवियत नमूने पर आधारित योजनाबद्ध आर्थिक विकास पर जोर देकर सुभाष ने कांग्रेस पर अपनी समाजवादी छाप छोड़ दी थी। इसके बाद बोस 1939 में फारवार्ड ब्लाक की स्थापना करके युवाओं के बीच समाजवादी विचारधारा का प्रचार प्रसार करते रहे। अनेक युवा जिसका कांग्रेस से मोहभंग हो रहा था तथा जिसका झुकाव समाजवाद कि तरफ था, बोस के फोरवार्ड ब्लाक में शामिल होने लगे। इस प्रकार नेहरू तथा बोस ने युवा, छात्रों, किसानों तथा मजदूरों के बीच अपने प्रभाव को बनाए रखा तथा उन्हे स्वतंत्रता के संघर्ष के पथ पर चलने को प्रेरित किया एवं कांग्रेस के नीति में परिवर्तन करके राष्ट्रीय आन्दोलन को गति प्रदान किया।

2.7 मजदूर तथा किसान आन्दोलन

राष्ट्रीय आन्दोलन में सुधारवादी बुर्जुआओं का प्रभुत्व था। इस कारण बहुत से युवा वर्ग इनसे असंतुष्ट थे। कम्युनिस्ट पार्टी की विचारधारा इन असंतुष्ट युवा वर्गों को अपनी ओर आकर्षित कर रहा था। इन असंतुष्ट युवाओं को कम्युनिस्ट पार्टी की ओर जाने से रोकने के लिए 1934 में कुछ समाजवादी विचारधारा से प्रभावित नेता जैसे कि, जयप्रकाश नारायण, आचार्य नरेंद्र देव, अशोक मेहता आदि ने मिलकर कांग्रेस के भीतर ही एक कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना की। इस संगठन का सदस्य वही होता था जो कांग्रेस का भी सदस्य हो। इस संगठन के लोगों का मानना था कि वे कांग्रेस के साथ काम करके कांग्रेस को समाजवादी सिद्धांत अपनाने के लिए बाध्य करेंगे। इस संगठन के सदस्य यह मानते थे कि कांग्रेस समस्त भारतीय जनता का

प्रतिनिधित्व करता है इसलिए मजदूरों की कोई अलग राजनीतिक भूमिका नहीं होनी चाहिए। इसलिए इन लोगों ने मजदूरों को कांग्रेस में शामिल होकर राष्ट्रीय मुक्ति के लिए सम्मिलित प्रयास करने पर जोर दिया। अपने प्रचार प्रसार के बल पर कांग्रेस समाजवादी पार्टी ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं को किसानों की समस्या तथा मजदूरों की समस्या पर ध्यान देने के लिए बाध्य किया। कांग्रेस समाजवादी पार्टी के नेताओं ने अनेक प्रान्तों में किसान सभा के उभरते हुए आन्दोलनों से घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित किया, विशेष रूप से बिहार और आन्ध्र में। स्वामी सहजानन्द सरस्वती, जो कि किसानों के बहुत बड़े नेता थे, प्रारम्भ में जमींदारी-उन्मूलन के विरोधी थे परन्तु कांग्रेस समाजवादी पार्टी ने उनपर बहुत दबाब बनाया जिसके कारण 1935 में बिहार किसान सभा के हाजीपुर अधिवेशन में इस माँग को स्वीकार कर लिया गया। कांग्रेस समाजवादी पार्टी ने मजदूरों तथा किसानों के हितों का ख्याल रखते हुए एक संविधान का निर्माण किया जिसमे अनेक समाजवादी तथ्यों को शामिल किया, जैसे- रोजगार का अधिकार, किसानों के बीच भूमि का वितरण, राजाओं तथा जमिंदारों के विशेषाधिकारों का अंत, किसानों तथा मजदूरों के ऋण समाप्त करना, मजदूरों के लिए ट्रेड यूनियन बनाने की स्वतंत्रता तथा हड़ताल पर जाने का अधिकार, जीवनयापन योग्य वेतन, मुफ्त चिकित्सा तथा बीमा, सभी शक्तियों का जनता को हस्तांतरण, जातीय समुदाय के आधार पर भेदभाव समाप्त, राजनीति को धर्म से मुक्त करना तथा व्यस्क मताधिकार इत्यादि। अंततः 1935 में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी और कम्युनिस्ट पार्टी के बीच समझौता हो गया कि अनेक अखिल भारतीय संगठनों को कांग्रेस में शामिल कर लिया जाए। 1935 से 1939 तक सभी वामपंथी पार्टी आपस में मिलकर कांग्रेस को समाजवादी रास्ते पे लाने में सफल हुए परन्तु अंततः दक्षिणपंथियों का कांग्रेस पर प्रभाव बना रहा। परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं कि कांग्रेस की नीति पर समाजवादी विचारधारा का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता था।

1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में समाजवादियों ने अत्यंत महत्वपूर्ण तथा प्रशंसनीय भूमिका निभायी। 8 अगस्त 1942 को आन्दोलन की घोषणा होते ही 9 अगस्त को सभी महत्वपूर्ण नेता गिरफ्तार कर लिए गए। तब विभिन्न क्षेत्रों के समाजवादी युवा छात्रों ने आन्दोलन का नेतृत्व किया। उद्योगों में काम करने वाले सारे मजदूर सड़क पर निकल आए। समाजवादी नेता भूमिगत होकर आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान करने लगे, इनमें मुख्य थे – जयप्रकाश नारायण तथा अरूणा आसफ अली। समाजवादियों का सबसे महत्वपूर्ण कार्य था कांग्रेस रेडियो की स्थापना जिसके माध्यम से वे अपने विचार लोगों तक पहुँचाते रहे। आन्दोलन के समय अवसर का लाभ उठाने के लिए प्रमुख समाजवादी नेता सुभाषचंद्र बोस ने सिंगापुर में आजाद हिंद फौज की कमान संभाली और इसके माध्यम से ब्रिटिश अधिकृत भारत पर हमला करके अंग्रेजी शक्ति को

कमजोर करने का प्रयास किया। इस प्रकार भारत छोड़ो आन्दोलन में समाजवादी अग्रिम पंक्ति में खड़े दिखाई दिए।

1917 की रुस की क्रांति और इसके परिणामस्वरूप भारत में समाजवादी विचारों के विकास के फलस्वरूप भारत में किसान तथा मजदूर आन्दोलन में तेजी आयी। 1920 ई. में एटक (ए.आई.टी.यू.सी) की स्थापना होने से पहले भी मजदूरों के लगातार होने वाले आन्दोलनों के कारण कई राष्ट्रवादियों द्वारा उनकी दशा में सुधार करने के लिए प्रयास किए गए परन्तु मजदूरों की समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही थी और इस कारण विभिन्न कारखानों में हड़तालें भी बढ़ती जा रही थी। राष्ट्रवादियों को यह भय लग रहा था कि कहीं ऐसी स्थिति में मजदूरों के बीच कम्युनिज्म न फैल जाए इसलिए एटक की स्थापना की गई। एटक की स्थापना के बाद 1925 की बंबई की कपड़ा मिल की हड़ताल सबसे सफल रही। 1921-25 के पाँच वर्षों में हड़ताल और तालाबंदी की संख्या 1,154 रही। 1926-29 के चार वर्षों में 601 हड़तालें व तालाबन्दी हुई। 1929 में आए वैश्विक मंदी के कारण भारत में बहुत सारी फैक्ट्रियाँ बन्द हो गयी जिसके कारण हजारों मजदूर बेरोजगार हो गए। इसी समय ब्रिटिश सरकार ने *रायल कमीशन आन लेबर* की नियुक्ति की। कांग्रेस के उदारवादी नेता इसके समर्थन के पक्ष में थे परन्तु उग्रवादी इसका बहिष्कार करना चाहते थे। इसी कारण उदारवादियों ने एटक से रिश्ता तोड़कर 1929 में *इंडियन ट्रेड यूनियन फेडरेशन* की स्थापना की। जवाहरलाल नेहरू इस समय एटक के अध्यक्ष थे। 1931 में जब मिल मालिकों ने हजारों मजदूरों को नौकरी से निकाल दिया तब कम्युनिस्टों ने एटक से रिश्ता तोड़कर रेड *ट्रेड यूनियन कांग्रेस* की स्थापना की और मजदूरों को संगठित किया। 1936 से 1939 के बीच, चूँकि इस समय कम्युनिस्ट भी कांग्रेस में शामिल होकर काम कर रहे थे, सभी संगठन फिर से एटक में शामिल हो गए। अक्टूबर 1939 में बंबई में 90 हजार मजदूरों की राजनीतिक हड़ताल साम्राज्यवादी युद्ध तथा दमन के विरोध में हुई। 1946-47 में 3,400 के लगभग हड़तालें व तालाबन्दी हुई। इनमें 38 लाख के करीब मजदूरों ने हिस्सा लिया।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक विभिन्नताएँ होने के बावजूद भारतीय किसानों की समस्या एक जैसी थी- अत्यधिक कर, जमींदारों द्वारा शोषण, बेगारी, नजराना इत्यादि। इसलिए 1920 और 1930 के दशक में कई महत्वपूर्ण किसान आन्दोलन हुए। उत्तर प्रदेश में बाबा रामचन्द्र ने जमींदारों के विरूद्ध अवध के किसानों को संगठित किया। बिहार में स्वामी विद्दानंद ने किसानों को संगठित कर आन्दोलन चलाया। 1928 में बारदोली में बल्लभ भाई पटेल ने किसानों के पक्ष से सत्याग्रह किया। 1931 में किसानों ने उत्तर प्रदेश में लगानबंदी आन्दोलन चलाया। मद्रास में आन्ध्र रैयत एसोसिएशन के नेतृत्व में किसानों ने आन्दोलन चलाया।

1920 तक अनेक प्रान्तीय किसान सभा का संगठन हो चुका था। परन्तु समाजवादियों और कम्युनिस्टों ने किसानों के एक केन्द्रीय संगठन के लिए प्रयास किया और 1936 में अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना की गई। अनेक समाजवादी जैसे, एन. जी. रंगा, नरेन्द्र देव, इंदुलाल यागनिक, स्वामी सहजानंद, अखिल भारतीय किसान सभा के नेता थे। अखिल भारतीय किसान सभा ने किसानों की समस्या की तरफ विशेष ध्यान दिया तथा इसे दूर करने के लिए अथक प्रयास किया। कांग्रेस के दक्षिणपंथी नेता किसानों द्वारा किए जा रहे जमींदारों के विरोध से सहमत नहीं थे। उन्हें समाज के सभी वर्गों को, जमींदारों तथा पूँजीपतियों को भी, साथ लेकर चलना होता था इसलिए वे किसान आन्दोलन को समर्थन नहीं देते थे। इसलिए अखिल भारतीय किसान सभा ने कांग्रेस से अलग होकर संघर्ष करने का निर्णय लिया। इसके बावजूद भी किसान सभा ने कांग्रेस के विरूद्ध कार्य नहीं किया वरन् वे राष्ट्रीय आन्दोलन में कांग्रेस के महत्व को भली-भांति समझते थे।

स्वमूल्यांकित प्रश्न

1. भारत मे किसान-मजदूर आंदोलन विषय में अपने विचार निम्नांकित पंक्तियों में लिखिये –

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.8 सारांश

सारांशतः हम कह सकते हैं कि भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में वामपंथी विचारधारा की अपनी एक अलग एवं महत्वपूर्ण भूमिका रही है। किसानों और श्रमिकों के लम्बे समय के शोषण के फलस्वरूप वह परिस्थिति पैदा हुई जिसके कारण भारतीय राजनीति में समाजवाद का प्रवेश हुआ। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में समाजवादी विचारधारा का निरंतर एवं क्रमिक विकास हुआ। समाजवादी विचारधारा के प्रसार के कारण ही राष्ट्रीय आन्दोलन में किसानों तथा मजदूरों के एक बहुत बड़े समुदाय की संलिप्तता संभव हो पायी। कम्युनिस्टों, नेहरू, सुभाष तथा कांग्रेस समाजवादी पार्टी के नेताओं के अथक प्रयास से कांग्रेस के नीति में परिवर्तन हुआ और राष्ट्रीय आन्दोलन का क्षेत्र व्यापक बन गया। वामपंथी विचारधारा ने श्रमिकों तथा किसानों की समस्या को भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ जोड़कर न केवल इस

आन्दोलन को ठोस आधार प्रदान किया वरन् इसकी रफ्तार को भी गती प्रदान की। किसान, मजदूर, छात्र व लेखकों के संगठन वामपंथ की उपलब्धि है।

2.9 पारिभाषिक शब्दावली

दक्षिणपंथी : मूलत: फ्रांस की क्रांति के समय राजा के समर्थकों को दक्षिणपंथी कहा गया।

वामपंथी : मूलत: फ्रांस की क्रांति के समय राजा के विरोधियों को वामपंथी कहा गया। कालान्तर में समाजवाद तथा

साम्यवाद के उत्थान के पश्चात वामपंथी शब्द का प्रयोग इनके लिए होने लगा।

2.10 स्वमूल्यांकित प्रश्नों के उत्तर

उत्तर के लिए इकाई का मनोयोग से अध्ययन कीजिए।

2.11 संदर्भ ग्रन्थ सूची

ग्रोवर, बी.एल. एवं यशपाल (1981), आधुनिक भारत का इतिहासः एक नवीन मूल्यांकन (1707 से वर्तमान समय तक), एस. चन्द एण्ड कम्पनी लि., नई दिल्ली।

चन्द्र, बिपिन एवं अन्य, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष.

चन्द्र, बिपिन, आधुनिक भारत, एन.सी.ई.आर.टी.

बंद्योपाध्याय, शेखर (2007), प्लासी से विभाजन तक, ओरिएन्ट लाँग्मैन, नई दिल्ली।

सरकार, सुमित (1993), आधुनिक भारतः1885-1947, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

2.12 निबंधात्मक प्रश्न

1. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में समाजवादी विचारधारा की क्या भूमिका रही?
2. वामपंथी विचारधारा ने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को किस सीमा तक प्रभावित किया?

इकाई तीन

भारत में दलित आन्दोलन

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 कारण

3.4 महाराष्ट्र में दलित आन्दोलन

3.5 केरल में दलित आन्दोलन

3.6 पंजाब में आदि-धर्म आन्दोलन

3.7 उत्तर प्रदेश में दलित आन्दोलन

3.8 डा. वी. आर. अम्बेडकर एवं दलित आन्दोलन

3.9 महात्मा गाँधी एवं हरिजन सेवक संघ

3.10 सारांश

3.11 पारिभाषिक शब्दावली

3.12 स्वमूल्यांकित प्रश्नों के उत्तर

3.13 संदर्भ ग्रन्थ सूची

3.14 निबंधात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

भारत में प्राचीन काल से ही जाति एवं धर्म के नाम पर वर्ग विशेष का शोषण होता रहा है जिन्हें विभिन्न नामों से जाना जाता है – अछूत, शूद्र, पंचम वर्ग, अनुसूचित जाति, हरिजन तथा दलित इत्यादि। इस रूढ़ सामाजिक व्यवस्था के विरूद्ध संघर्ष करने वालों की भी एक लम्बी परम्परा रही है जिनमें महात्मा बुद्ध, महाबीर, रामानन्द, कबीर, नानक, तुकाराम, एकनाथ, नामदेव, आर्य समाज, ब्रम्ह समाज इत्यादि। परन्तु इन आन्दोलनों से निम्न वर्गों के सामाजिक स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। परिणामस्वरूप आधुनिक काल में इन निम्न वर्गों में से ही अतिसुधारवादी नेतृत्व ने जन्म लिया जिन्होंने इनके सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक समानता के लिए संगठित रूप से संघर्ष प्रारम्भ किया। इस संघर्ष को दलित आन्दोलन के नाम से जाना जाता है।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई में आप आधुनिक भारत के विभिन्न प्रान्तों में हुए दलित आन्दोलन, उसके नेतृत्व, स्वरूप एवं संगठन के बारे में जान पाऐंगे।

3.3 कारण

जाति के आधार पर समाज का विभाजन भारतवर्ष का एक ऐसा विलक्षण गुण है जो दुनिया के इतिहास में इसके पहचान का प्रतीक बन चुका है। भारतीय समाज में एक ओर जहाँ सुविधासम्मपन्न सवर्ण लोग हैं वहीं दूसरी ओर शोषित और दमित अवर्ण लोग। प्राचीन काल से ही भारतीय समाज वर्ण व्यवस्था में विभाजित रहा है तथा इन वर्णों के अधीन जातियों एवं उपजातियों में विभक्त रहा है। प्राचीन काल में भारत जहाँ अपने ज्ञान-विज्ञान के कारण विश्व के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा है वहीं अपनी जाति संबंधी संकीर्णतावादी सोंच के लिए भी जाना जाता रहा है। वर्तमान समय में भारत में 3000 से अधिक जातियाँ है। भारतीय वर्ण व्यवस्था में शूद्र सबसे निम्न स्तर पर था तथा इन के साथ जाति एवं धर्म के नाम पर अमानवीय शोषण होता था। दलितों की बस्ती गाँव के सबसे आखिरी छोड़ पर हुआ करती थी। इन्हे सार्वजनिक स्थलों से पानी लेने का अधिकार नहीं था। इन्हें शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार भी नहीं था। ये वर्ग न केवल आर्थिक रूप से वरन् सामाजिक और धार्मिक रूप से भी शोषण के शिकार थे। इनके मस्तिष्क में यह बात डाल दिया गया था कि तुम अछूत हो और तुम्हे इसी हाल में रहना है, तुम्हारे जीवन की यही सच्चाई है और ये ईश्वरकृत है।

ब्रिटिश शासन एक ओर जहाँ भारत के लिए अभिशाप था वहीं दलित शोषण के मामले में वह मुक्तिदाता बना। ब्रिटिश शासन के भारत में आने के बाद एक पश्चिमी विचारधारा का भी प्रवेश हुआ। इसके फलस्वरूप दलित उद्धार की संभावनाएँ बनने लगी। भारतीय बुद्धिजीवी वर्ग जब पश्चिमी ज्ञान-विज्ञान के संपर्क में आए तब उन्हें एहसास हुआ कि उनके समाज में बहुत सारी कुरीतियाँ है जिन्हें दूर करने की आवश्यकता है। दलित आन्दोलन के प्रमुख वाहक फुले, अम्बेडकर, महात्मा गाँधी इत्यादि लोग पाश्चात्य शिक्षा की ही उपज थे। ब्रिटिश शासन से जब यह देश त्रस्त होने लगा तो समाज के कुछ बुद्धिजीवी वर्गों को यह लगा कि बिना समाज का संगठन किए ब्रिटिशों का विरोध नहीं किया जा सकता इसलिए उन्होंने जातिवाद पर प्रहार करना शुरू किया।

1813 ई. के बाद जब इस देश में ईसाई मिशनरियों का बड़े पैमाने पर आगमन हुआ तब उनलोगों ने अनेक स्कूल तथा चिकित्सालय खोला जहाँ जाति के आधार पर कोई भेदभाव नहीं था। इन लोगों ने अपने शिक्षा के माध्यम से दलितों के बीच सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का विकास किया। इसके दो मुख्य परिणाम निकले। पहला, दलितों को यह एहसास हुआ कि

उनका जो शोषण है वह मानवकृत है। दूसरा, दलित लोग ईसाई धर्म की ओर झूकने लगे इसके फलस्वरूप अनेक भारतीय समाजसुधारकों का ध्यान इनकी ओर गया और वे इस समस्या से बचने के लिए अपने धर्म और सामाजिक स्थिति में बदलाव के लिए विमुख हुए। इसी के परिणामस्वरूप अनेक बुद्धिजीवीयों ने अनेक संस्थाओं के माध्यम से दलितों की स्थिति में सुधार के लिए प्रयास करना शुरू किया जिनमें ब्रम्ह समाज, आर्य समाज, परमहंस मण्डली आदि मुख्य थे। परन्तु इन तमाम कोशिशों के बावजूद दलितों की स्थिति में कोई खास अंतर नहीं आ रहा था और दलितों के बीच असंतोष बढ़ता ही जा रहा था। आर्य समाज, ब्रम्ह समाज, प्रार्थना समाज एवं धर्म सुधार आन्दोलन के कारण निम्न वर्गों के सामाजिक स्थिति में कोई विशेष सुधार नहीं आया। इसलिए अब एक अतिसुधारवादी आन्दोलन की जरूरत थी जो इन वर्गों को इनकी व्यथा से मुक्त कर सके। परिणामस्वरूप इन्ही वर्गों में से कई अतिसुधारवादी नेतृत्व का जन्म हुआ।

आधुनिक भारत के विभिन्न प्रान्तों में एक योग्य एवं प्रतिभाशाली दलित नेतृत्व का उत्पन्न होना जिन्होंने इस आन्दोलन को सांगठनिक स्वरूप प्रदान करने एवं दलित चेतना के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की उनमें प्रमुख रूप से जोतिबा फुले, पेरियार, नारायणगुरू, साहूजी महाराज, अम्बेडकर, अछूतानन्द और गंगुराम का नाम उल्लेखनीय है।

3.4 महाराष्ट्र में दलित आन्दोलन

आधुनिक भारत के दलित आन्दोलन के नायकों में ज्योतिबा फुले का नाम उल्लेखनीय है जिन्होंने पश्चिमी भारत में दलित आन्दोलन को व्यापक आधार दिया। फुले का जन्म 1827 ई. में पुणे (महाराष्ट्र) के एक माली परिवार में हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा एक मिशनरी स्कुल में हुई थी। ज्योतिबा को सामाजिक रूप से जाति भेद-भाव एवं छुआ-छूत जैसे अमानवीय व्यवहार का सामना करना पड़ा जिससे इन कुरीतियों के विरूद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा मिली।

फुले जाति व्यवस्था को मानव समानता के विरूद्ध मानते थे। उनका विचार था कि भारतीय समाज में जब तक जाति व्यवस्था विद्दमान है तब तक अछूत गुलामी का जीवन जीने को मजबूर रहेगा। वे मूर्ति-पूजा, कर्मकाण्ड, पुर्नजन्म एवं स्वर्ग की कटु आलोचना करते थे। वे एकेश्वरवाद में विश्वास करते थे।

फुले का मानना था कि आर्य विदेशी मूल के है और उन्होंने द्रविड़ लोगों को हराकर जाति व्यवस्था स्थापित किया है। शूद्र इस भारत भूमि के मूल निवासी है। वैदिक ग्रंथों को वह इसके प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करते थे। वेदों में इस तरह के तथ्य वर्णित है कि आर्यों ने किस प्रकार भारत के मूल निवासियों का दमन कर दास बनाया। उन्होंने पुरूष-स्त्री समानता पर भी बल दिया। वह महिलाओं के शोषण के खिलाफ थे।1 जनवरी 1848 भारत में स्त्री शिक्षा के इतिहास की एक महत्वपूर्ण तिथि है। इस दिन ज्योतिबा ने पुणे में लड़कियों की शिक्षा के लिए एक पाठशाला

खोला तथा बाद में स्त्री शिक्षा एवं शूद्रों की शिक्षा हेतु उन्होंने विद्यालयों की एक श्रृंखला स्थापित की। रूढ़िवादी विचारों के विरूद्ध उन्होंने पण्डित रमाबाई का समर्थन किया क्योंकि रमाबाई ने स्त्री शिक्षा पर व्यापक जोर दिया था। उन्होंने खेतिहर मजदूरों और छोटे किसानों की समस्याओं को लेकर भी संघर्ष किया। इस तरह ब्राम्हणवादी व्यवस्था के विरूद्ध एक व्यापक गठजोड़ बनाने का प्रयास किया। अपने विचारों के प्रसार हेतु फुले ने मराठी में **दीनबंधु** नामक पत्रिका की शुरूआत की। 1873 ई. में उनकी महत्वपूर्ण पुस्तक **गुलामगिरी** का प्रकाशन हुआ जिसमें उन्होंने ब्राह्मण व्यवस्था द्वारा शूद्रों के शोषण को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है तथा शुद्रों के गुलामी की तुलना अमेरिकी नीग्रों से किया है। अपने विचारधारा एवं संघर्ष को सांगठनिक स्वरूप देने के लिए उन्होंने 1875 ई. में सत्य सोधक समाज (सत्य को खोजने वाला समाज) की स्थापना की। 1876 ई. में फूले पुणे नगरपालिका के सदस्य बने। उनकी मृत्यु (1890) के बाद सत्य सोधक समाज का प्रभाव कम होता चला गया। इस प्रकार फुले ने ब्राम्हणवादी व्यवस्था, जाति आधारित भेदभाव के विरूद्ध व सामाजिक न्याय हेतु पूरे जीवन संघर्ष किया। यद्दपि वे उपनिवेशिक शासन की वास्तविकता को समझने में असफल रहे परन्तु दलित आन्दोलन के इतिहास में वह एक नायक के तौर पर हमेशा याद किए जाऐंगे।

3.5 केरल में दलित आन्दोलन

केरल में दलित आन्दोलन एक महत्वपूर्ण नेता नानु असन (जिनको लोग नारायण गुरू के नाम से जानते हैं) के नेतृत्व में बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में आरम्भ हुआ। उनका जन्म 1854 ई. में एझवा जाति (अस्पृश्य जाति) में हुआ था। नारायण गुरू ने केरल एवं केरल के बाहर एस. एन. डी. पी. (श्री नारायण धर्म परिपालन योगम्) नामक संस्था की शाखाएँ स्थापित की। उन्होंने अस्पृश्यता के विरूद्ध आन्दोलन का नेतृत्व किया। मन्दिर में अछूतों के प्रवेश को लेकर भी संघर्ष किया और ऐसे मंदिरों की स्थापना की जो समाज के सभी वर्गों के लिए खुले थे। उन्होंने एक धर्म एक जाति एक ईश्वर का नारा दिया। नारायणगुरू वर्ण व्यवस्था के कटु आलोचक थे। उनका विचार था कि भारत में जाति प्रथा एवं छुआ-छूत का मूल जड़ वर्ण व्यवस्था ही है।

3.6 पंजाब में आदि-धर्म आन्दोलन

पंजाब में दलित आन्दोलन के प्रमुख वाहक बाबू मंगू राम थे जिनका जन्म 14 जनवरी 1886 ई. को होशियारपुर जिले में एक चमार परिवार में हुआ था। इनके पिता पारंपरिक रूप से चमड़े का कार्य करते थे। मंगू राम की प्राथमिक शिक्षा गाँव के ही एक संत द्वारा हुई और बाद में अलग-अलग स्कूलों में। बाद में वे अपने बड़े भाई के पास देहरादून चले गए। वहाँ पर एक विद्यालय में प्रवेश लिया जिसमें वह एक मात्र निम्नजातीय छात्र थे। विद्यालय में उन्हें विभिन्न प्रकार से जातीय भेदभाव एवं घृणा का शिकार होना पड़ा। 1905 ई. में उन्होंने स्कूल छोड़ दिया।

1909 ई. में गंगू राम अमेरिका में कृषि मजदूर के रूप में चले गए क्योंकि वहाँ उनके गाँव के आस-पास के उच्च जाति के किसान रहते थे। 1913 में सैन फ्रांसिसको में जब गदर पार्टी की स्थापना हुई तो इन्होंने गदर पार्टी में सम्मिलित होकर गदर के लिए सक्रिय रूप से कार्य करने लगे। मंगू राम 1925 ई. में वापस भारत लौटे। उन्होंने भारत के विभिन्न शहरों का भ्रमण किया और अछूतों की दयनीय दशा को महसूस किया। उन्होंने गदर पार्टी के मुख्यालय को भी सामाजिक परिवर्तन हेतु पत्र लिखा। 11-12 जनवरी 1926 ई. को उन्होंने एक सम्मेलन अपने गाँव मोगयाल में आयोजित किया और आदि-धर्म आन्दोलन के स्थापना की घोषणा की। मंगू राम इसके अध्यक्ष निर्वाचित हुए। अपने गाँव में एक विद्यालय की स्थापना किए जिसका नाम आदि-धर्म स्कूल रखा। उन्होंने पंजाब के विभिन्न शहरों में आदि धर्म की शाखाएँ स्थापित किया। उनका मानना था कि अछूत भारत भूमि के मूल निवासी है। वे स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी सामाजिक सुधार एवं रूढ़ियों के विरूद्ध संघर्षरत रहे। 22 अप्रैल 1980 को 94 वर्ष की अवस्था में वे मृत्यु को प्राप्त हुए।

3.7 उत्तर प्रदेश में दलित आन्दोलन

उत्तर भारत के दलित आन्दोलन का प्रारम्भ उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में स्वामी अछूतानन्द के आविर्भाव के साथ माना जा सकता है। उनका जन्म 1879 ई. में मैनपुरी जनपद में हुआ था। इनके पिता मूलतः फर्रूखाबाद के निवासी थे परन्तु उच्च जातियों के अत्याचार के कारण मैनपुरी में बस गए। इनका वास्तविक नाम हीरा लाल था। इन्होंने मिडिल स्कूल तक शिक्षा प्राप्त किया था। आर्य समाज द्वारा चलाए जा रहे समाज सुधार आन्दोलन से प्रभावित होकर स्वामी सच्चिदानन्द से दीक्षा ले लिया और इनका नाम हरिहरानन्द हो गया। परन्तु यह देख कर कि आर्य समाज के अन्दर भी जाति भेद-भाव है तो इनका मोह भंग होने लगा और वे आर्य समाज से बाहर हो गए।

आर्य समाज छोड़ कर उन्होंने भारत के विभिन्न शहरों का भ्रमण किया और दलितों के वास्तविक स्थिति को समझने का प्रयास किया। अन्ततः 1917 में अछूतानन्द ने एक विशाल सम्मेलन आयोजित किया। इसी सम्मेलन में इनका नाम हरिहरानन्द से बदल कर अछूतानन्द रखा गया। उन्होंने 1919 ई. में मांटेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार में दलितों के समस्याओं से सम्बन्धित एक ज्ञापन दिया, जिसमें अछूतों के लिए पृथक शिक्षा, पृथक निर्वाचन एवं नौकरियों में आरक्षण की मांग शामिल थी। प्रिंस आफ वेल्स के भारत आगमन पर भी उन्होंने दलितों के कल्याण हेतु सत्रह सूत्रीय ज्ञापन सौंपा। दिल्ली के अखिल भारतीय अछूत सम्मेलन में इनकी मुलाकात डा. अम्बेडकर से हुई और दोनों एक दुसरे को सहयोग करने लगे। 1924-25 ई. में उन्होंने आदि-हिंदू आन्दोलन की शुरूआत कानपुर से की। उनका मानना था कि हम न तो मुसलमान हैं न इसाई, हम तो हिन्दुस्तान के आदि निवासी हैं। अतः हम सब आदि हिन्दू है। आर्य तो विदेशी है। उनका

मानना था हम अछूत है अर्थात अ + छूत जिसमें कोई छूत नहीं हो, अर्थात सबसे पवित्र हम है। उन्होंने अछूत एवं आदि हिन्दू के नाम से पत्र भी निकाला तथा भारत में दलित पत्रिकारिता के सूत्रधार बने। उन्होंने साइमन कमीशन के 29-30 सितंबर 1928 को लखलऊ पहुँचने पर भव्य स्वागत किया इस कारण कांग्रेसियों द्वारा उनका विरोध किया गया। उन्होंने कमीशन को दलितों के स्थिति के बारे में ज्ञापन भी दिया। 1929 ई. के कुम्भ मेले में आदि-हिन्दू सभा का विशाल सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें भारत के विभिन्न प्रांतों के दलित प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। उन्होंने 1930-31 के गोलमेज सम्मेलन में दलित प्रतिनिधि के रूप में डा. अम्बेडकर को मजबूती से समर्थन दिया। 22 जुलाई 1933 ई. को दलित आन्दोलन का यह पुजारी मृत्यु को प्राप्त हुआ। डा. अम्बेडकर को उत्तर भारत में लाने और परिचित कराने का श्रेय अछुतानन्द जी को जाता है।

3.8 डा. वी. आर. अम्बेडकर एवं दलित आन्दोलन

फुले की मृत्यु के बाद दलित आन्दोलन कमजोर पड़ने लगा क्योंकि सत्यसोधक समाज जैसा संगठन उच्च जाति के गैर ब्राह्मणों के हाथों में चला गया। विठ्ठल राम जी शिन्दे ने डिप्रेस्ड क्लास मिशन की स्थापना 1906 में की। शिन्दे के इस मिशन के अध्यक्ष प्रसिद्ध ब्राह्मण समाज सुधारक नारायण राव चन्दावरकर थे। 1910 के दशक में अस्पृश्यों में काम करने वाला यह महत्वपूर्ण संगठन था।

परन्तु दलित समाज के मध्य दलित नेतृत्व को लेकर उथल-पुथल था। दलित आन्दोलन के नए वाहक थे युवा भीम राव राम जी अम्बेडकर। इनका जन्म 14 अप्रैल 1891 ई. को एक महार परिवार में हुआ था। 1905 ई. में चौदह साल की उम्र में इनका विवाह रमाबाई के साथ हुआ। 1935 ई. में रमाबाई की मृत्यु हो गई। 1948 ई. में डा. अम्बेडकर ने दूसरा विवाह डा. शारदा कबीर से किया जो एक सारस्वत ब्राह्मण परिवार से थी। अम्बेडकर एलफिन्सटन महाविद्यालय से स्नातक थे। वे तीन वर्ष कोलम्बिया विश्वविद्यालय व एक साल लन्दन स्कूल आफ इकोनोमिक्स में अध्ययनरत थे। शिन्दे द्वारा चलाया जा रहा अस्पृश्यता निवारण कांग्रेस व उच्च वर्गों द्वारा प्रायोजित था जिसका अम्बेडकर ने तीखी आलोचना की।

कोल्हापुर जिले के माने गाँव में 20 मार्च 1920 ई. को साहू जी महाराज द्वारा आयोजित ब्राह्मण विरोधी सम्मेलन में अम्बेडकर को दलितों के समक्ष प्रस्तुत किया गया। बाद में 30-31 मई 1920 को आल इण्डिया डिप्रेस्ड क्लास सम्मेलन (All India Depressed Class Conference) नागपुर में आयोजित किया गया। सही अर्थों में अम्बेडकर दलित संगठन के लिए फुले के उत्तराधिकारी थे। इस प्रकार 1920 की घटनाओं द्वारा अम्बेडकर ने दलित आन्दोलन को प्रारम्भ कर दिया। इसी वर्ष उन्होंने **मुक नायक** (Voice of Mute) नामक

पत्रिका का संपादन एवं प्रकाशन शुरू किया। 1920 के अंत में अम्बेडकर अपनी कानून की पढ़ाई पूरी करने के लिए लन्दन वापस चले गए। 1923 ई. में वापस आ गए। उन्होंने वकालत प्रारम्भ की और सिन्दम कालेज में पढ़ाते भी थे। डा. अम्बेडकर ने 1924 ई. में बहिष्कृत हितकारिणी सभा की स्थापना की। इस सभा के द्वारा उन्होंने दलित समाज को संगठित करने का प्रयास किया। 1926 ई. में उन्हें विधान परिषद के सदस्य का रूप में नामांकित किया गया।

बहिष्कृत हितकारिणी सभा के बैनर तले ही उन्होंने 19-20 मार्च 1927 को महाराष्ट्र के कोलाबा जिले के महाद तालुका में महाद तालाब सत्याग्रह की शुरूआत की। अस्पृश्यों को सार्वजनिक तालाबों से पानी लेने पर सामाजिक रूप से मनाही थी जबकि महाद नगरपालिका ने अस्पृश्यों के लिए तालाब को खोलने पर प्रस्ताव पारित कर चुकी थी। सभा के अंत में सीधी कार्यवाही की घोषणा की गयी सभी लोग तालाब पर चले और पानी पिएं। जब वे वापस लौट रहे थे तो ऊँची जातियों द्वारा हमला किया गया। तालाब का पानी पीना, पुलिस द्वारा शिकायत दर्ज होना, ब्राह्मणों द्वारा तालाब की शुद्धि किया जाना इन सारी घटनाओं की प्रतिध्वनि पुरे महाराष्ट्र में फैल गयी और दलित समाज के बीच अम्बेडकर को समर्थन बढ़ता चला गया और बाद में एक और सत्याग्रह सम्मेलन हुआ। 20 मार्च के दिन को बहुत दिनों तक दलित अस्पृश्य स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाते रहे। वह गांधी के बड़े आलोचक थे परन्तु गांधी के प्रति उनके हृदय में सहानुभूति भी थी। दिसम्बर के महाद सत्याग्रह सम्मेलन में अम्बेडकर के साथ गाँधी के भी चित्र लगे हुए थे।

अम्बेडकर प्रारम्भ से ही हिन्दू धर्म के आलोचक थे और वे हिन्दू धर्म को असमानतावादी धर्म मानते थे। परन्तु 1930-32 की घटनाओं ने अम्बेडकर को पूरी तरह से हिन्दू धर्म विरोधी बना दिया। 1935 ई. में धर्मांतरण की प्रसिद्ध घोषणा तथा उनका वाक्य मैं हिन्दू पैदा जरूर हुआ था, पर हिन्दू मरूंगा नहीं, उनके मानसिक सोंच को पूरी तरह दर्शाता है।

दलित आन्दोलन को एक नया स्वरूप देने हेतु अम्बेडकर ने 1930 ई. में आल इण्डिया डिप्रेस्ड क्लास लीग का सम्मेलन नागपुर में आयोजित किया जिसमें स्वतंत्रता की मांग करते हुए ब्रटिश शासन पर प्रहार किया। उनका कहना था कि ब्रिटिश सरकार ने अस्पृश्यता एवं मजदूरों तथा किसानों के शोषण के लिए कुछ नहीं किया। पहली बार 1930 ई. में प्रथम गोलमेज सम्मेलन में अम्बेडकर ने दलितों को एक नयी वाणी प्रदान की। उन्होंने एकीकृत राष्ट्र, व्यस्क मताधिकार आरक्षण एवं अस्पृश्यता हेतु उचित प्रावधान की मांग की। द्वितीय गोलमेज सम्मेलन से पूर्व अम्बेडकर की मुलाकात गांधी जी से हुई। यह मुलाकात विक्षुब्ध वातावरण में हुआ। द्वितीय सम्मेलन में भी एक बार फिर विवाद हुआ। दोनों ही यह सिद्ध करने का प्रयास कर रहे थे कि दलितों के वास्तविक प्रतिनिधि वे ही हैं। एक तरह से अम्बेडकर के दलित प्रतिनिधित्व को गाँधी द्वारा चुनौती दी जा रही थी।

1932 ई. में रैम्जे मैकडोनाल्ड का पंचनिर्णय की घोषणा हुई जिसके विरोध में गांधी ने 20 सितम्बर से अनिश्चित उपवास की घोषणा की। इसमें मुख्य प्रावधान दलितों के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्र की व्यवस्था थी। अंततः तेजबहादुर सप्रु और अम्बेडकर के बीच चर्चा के बाद 24 सितम्बर को अम्बेडकर गाँधी के बीच समझौता हुआ जिसे पूना पैक्ट के नाम से जाना जाता है। इस समझौते के अनुसार दलित वर्गों के लिए प्रांतीय विधान मंडलों में 198 सीटें दी गयी जो संप्रदायिक पंचाट के सीटों से दुगुनी थी। इस अंतिम परिणाम से अम्बेडकर संतुष्ट थे। एक तरह से यह स्वीकार कर लिया गया कि अम्बेडकर दलितों के एकछत्र नेता है। अंतिम बैठक में अम्बेडकर ने भी गाँधी की प्रशंसा करते हुए कहा – मैं महात्मा का बहुत आभारी हूँ। अम्बेडकर को यह प्रतीत होता था कि यदि दलितों को राजनीतिक शक्ति मिल जाए तो वे अपने आपको स्वयं मुक्त करा लेंगे। अम्बेडकर-गांधी मतभेद पुनः सतह पर आ गया जब गाँधी ने हरिजन सेवक संघ बनाकर अस्पृश्यता विरोधी अभियान शुरू किया। 15 अगस्त 1936 ई. में अम्बेडकर ने इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी का पठन किया।

अम्बेडकर दलितों के अलावा किसान एवं मजदूर से संबंधित मुद्दे को उठाकर एक व्यापक गठबंधन बनाने का प्रयास कर रहे थे। 1937 ई. के चुनाव में लेबर पार्टी ने हरिजनों के आरक्षित 15 सीटों में 13 सीटे जीती थी बाकी जगहों पर अधिकांश सीटे कांग्रेस जीती थी। 1942 ई. में अम्बेडकर ने अनुसूचित जाति संघ (Scheduled Caste Federation) की स्थापना की परन्तु 1946 ई. के चुनाव में अनुसूचित जाति संघ को असफलता ही हाथ लगी। संविधान सभा के सदस्य के रूप में वे मुस्लिम लीग के सहयोग से बंगाल से चुने गए परन्तु विभाजन के कारण यह सदस्यता उन्हें खोनी पड़ी और पुनः जुलाई 1947 में बाम्बे से संविधान सभा के सदस्य चुने गए और प्ररूप समिति के अध्यक्ष नियुक्त हुए। डा. अम्बेडकर स्वतंत्र भारत के नेहरू मंत्रिमंडल में विधि मंत्री के रूप में सम्मिलित हुए परन्तु सरकार में रहते हुए भी वह दलितों के लिए संघर्षरत रहे। 27 सितम्बर 1951 ई. को हिन्दू कोड बिल विवाद पर उन्होंने मंत्री पद से त्यागपत्र दे दिया। 14 अक्तूबर 1956 ई. को डा. अम्बेडकर ने नागपुर में एक विशाल सम्मेलन में बौद्द धर्म की दीक्षा ग्रहण की। 4 दिसम्बर 1956 ई. को दलित आन्दोलन का यह महानायक पंचतत्व में विलिन हो गया।

3.9 महात्मा गाँधी एवं हरिजन सेवक संघ

छुआ-छूत, जाति-प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों एवं निम्न वर्गों के उत्थान हेतु संघर्ष करने वालों में महात्मा गाँधी (1869-1948) का नाम अग्रगण्य है। गाँधी भारत आने से पूर्व (1915) दक्षिण अफ्रीका में 21 वर्ष तक ब्रिटिश सरकार के रंगभेद नीति के विरूद्ध संघर्ष कर चुके थे। गाँधी अस्पृश्यता को भारतीय समाज पर कलंक की तरह मानते थे। कांग्रेस के नागपुर सत्र में उन्होंने

हिन्दू धर्म से अस्पृश्यता को समाप्त करने के लिए विशेष प्रयास किए जाने पर बल दिया। गाँधी जी ने दक्षिण भारत में वाइकोम सत्याग्रह (मंदिर की तरफ जाने वाले मार्ग का प्रयोग) का पूर्ण समर्थन दिया। उनके रचनात्मक कार्यक्रम का प्रमुख भाग था – अस्पृश्यता निवारण, अंतर्जातीय भोज। गाँधी ने शुद्रों को एक नाम दिया हरिजन (ईश्वर की संतान) परन्तु अम्बेडकर द्वारा इस नाम का विरोध किया गया। गाँधी का मानना था कि अगर हिन्दू धर्म को जीवित रखना है तो अस्पृश्यता को मारना होगा। यदि अस्पृश्यता जीवित रही तो हिन्दू धर्म समाप्त हो जाएगा। गाँधी जब भी दिल्ली आते थे वह भंगी कालोनी में जाते थे। उन्होंने हिन्दुओं से हरिजनों के लिए मंदिरों के दरवाजे खोलने की अपील की। वह उस मंदिर में नहीं जाते थे जिसके दरवाजे हरिजनों के लिए नहीं खुले है। उन्होंने तीन समाचारपत्रों का संपादन एवं प्रकाशन किया **हरिजन** (अंग्रेजी), **हरिजन सेवक** (हिन्दी), **हरिजन बन्धु** (गुजराती)। अम्बेडकर और गाँधी का मतभेद द्वितीय गोलमेज सम्मेलन के दौरान सतह पर आ गया जहाँ दोनों अपने को दलितों के वास्तविक प्रतिनिधि बता रहे थे। गाँधी रैम्जे मैक्डोनाल्ड के सांप्रदायिक निर्वाचन क्षेत्र का विरोध कर रहे थे जब कि अम्बेडकर की यह मांग थी। गाँधी जी सार्वजनिक मताधिकार के सिद्धांत का समर्थन कर रहे थे। अंततः पूना के यरवदा जेल में गाँधी ने अनिश्चितकालीन अनशन प्रारम्भ किया और परिणामस्वरूप पूना पैक्ट के रूप में गाँधी एवं अम्बेडकर के मध्य 25 सितम्बर 1932 को समझौता हो गया। गाँधी ने अखिल भारतीय अछूतोद्धार सभा के स्थान पर हरिजन सेवक संघ की स्थापना की तथा अम्बेडकर को भी इसके बोर्ड में सम्मिलित होने के लिए आमंत्रित किया परन्तु अम्बेडकर ने यह कह कर मना कर दिया कि इसका नियंत्रण ब्राह्मणों के हाथ में है। गाँधी ने नवम्बर 1933 में अस्पृश्यता निवारण एवं हरिजनों के उत्थान हेतु पूरे देश में पदयात्रा का प्रारम्भ किया जो दस माह तक चलता रहा। इसी दौरान पुणे में 25 जून 1934 में गाँधी पर बम द्वारा जानलेवा हमला हुआ जिसमें वह बाल-बाल बच गए। 1937 ई. के चुनाव के बाद कांग्रेस शासित प्रांतों में मंदिर प्रवेश विद्देयक पारित किया गया। गाँधी एवं अम्बेडकर का मतभेद अछूतोद्धार के तरीकों को लेकर था। गाँधी जी मानते थे कि अस्पृश्यता हिन्दू समाज का दोष है अतः हिन्दुओं को इसे निकाल फेंकना होगा तथापि वे वर्ण व्यवस्था के विरोधी नहीं थे। जबकि अम्बेडकर वर्ण व्यवस्था को ही मूल जड़ मानकर समाप्त करना चाहते थे।

स्वमूल्यांकित प्रश्न

नोट - **निम्नलिखित प्रश्नों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।**

1. ज्योतिबा फुले ने 1873 ई. में महत्वपूर्ण पुस्तक ..... प्रकाशित की।
2. दलित आन्दोलन एक महत्वपूर्ण नेता नानु असन (जिनको लोग ..... के नाम से जानते हैं) का जन्म 1854 ई. में एझवा जाति (अस्पृश्य जाति) में हुआ था।

3. ..... ने1920 में **मुक नायक** (Voice of Mute) नामक पत्रिका का संपादन एवं प्रकाशन शुरू किया।

.

3.10 सारांश

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतवर्ष में दलित सदियों से शोषण के शिकार होते रहे हैं। इन्हें प्रत्येक मानवीय अधिकारों से वंचित कर दिया गया था। ब्रिटिशों के आने के बाद पश्चिमी सभ्यता से संपर्क के फलस्वरूप न केवल दलितों को वरन् अनेक बुद्धिजीवी वर्गों को यह एहसास हुआ कि यह शोषण मानवकृत है तथा इसे हर हाल में दूर किया जाना चाहिए। अन्ततोगत्वा दलित वर्ग के अन्दर से ही कई सुधारवादी लोगों का पदार्पण हुआ और उन्होंने अपनी सामाजिक स्थिति को बदलने के लिए एक इस समाज से संघर्ष किया जो आज तक अनवरत चालू है। भारत के अनेक क्षेत्रों में हुए दलित आन्दोलन ने दलितों के अन्दर न केवल चेतना जगायी वरन् उन्हें अपने अधिकार के लिए लड़ना भी सिखाया। भारतीय संविधान में आज दलितों को जो अधिकार प्राप्त हैं वह एक लम्बी लड़ाई का ही परिणाम है।

3.11 पारिभाषिक शब्दावली

अछूत : जिसमें कोई छूत नहीं हो, अर्थात सबसे पवित्र

दलित : दबा-कुचला

अस्पृश्य : न छूने योग्य

3.12 स्वमूल्यांकित प्रश्नों के उत्तर

1.गुलामगिरी

2. नारायण गुरू

3. भीम राव राम जी अम्बेडकर

3.13 संदर्भ ग्रन्थ सूची

ओमवेट, गेल (2009), दलित और प्रजातांत्रिक क्रांति, सेज, नई दिल्ली।

ग्रोवर, बी.एल. एवं यशपाल (1981), आधुनिक भारत का इतिहासः एक नवीन मूल्यांकन (1707 से वर्तमान समय तक), एस. चन्द एण्ड कम्पनी लि., नई दिल्ली।

गुप्ता, नंदिनी (2006), स्वामी अछुतानन्द एण्ड आदि हिन्दू मूवमेन्ट

चन्द्र, बिपिन एवं अन्य, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष.

3.14 निबंधात्मक प्रश्न

1. आधुनिक भारत में दलितों के उत्थान के लिए किए गए प्रयासों पर एक निबंध लिखें।

2. आधुनिक भारत के विभिन्न क्षेत्रों में हुए दलित आन्दोलनों के स्वरुपों की व्याख्या करें।

इकाई चार

भू–स्वामी, पेशेवर और मध्य वर्ग

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 भूस्वामी

4.4 मध्यवर्ग

4.4.1 बुद्धिजीवी

4.4.2 पेशेवर वर्ग

4.4.3 पूंजीपति

4.5 सारांश

4.6 स्वमूल्यांकित प्रश्नों के उत्तर

4.7 संदर्भ ग्रंथ सूची

4.8 सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री

4.9 पारिभाषिक शब्दावली

4.10 निबंधात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रवादी विचारधारा निश्चय ही आधुनिक पाश्चात्य विचारधारा की देन है. पूर्व–औपनिवेशिक भारत में हम राष्ट्रवाद की कल्पना नही कर सकते. फिर भी, भारतीय राष्ट्रवाद पाश्चात्य राष्ट्रवाद से सर्वथा भिन्न परिस्थितियों में उत्पन्न हुआ. आधुनिक योरोप में राष्ट्रवाद का जन्म उन आर्थिक-सामाजिक परिवर्तनों से जुड़ा हुआ था, जिन्हें हम आरम्भिक पूंजीवाद के रूप में पहचान सकते हैं. योरोप में वाणिज्यीकरण, रेनेसां, धर्मसुधार, समुद्री मार्गों की खोज, विज्ञान एवं धर्मनिरपेक्ष शिक्षा के आरम्भ आदि जैसे परिवर्तनों के फलस्वरूप राष्ट्रवाद की विचारधारा का जन्म हुआ. यही परिवर्तन योरोप में पूंजीवाद के जन्म के लिये भी उत्तरदायी थे. इसके

विपरीत भारत अट्ठारहवीं सदी में उपनिवेशवाद का शिकार हो गया. भारत में राष्ट्रवाद के विचार उन्नीसवीं सदी में अंग्रेज़ी शिक्षा के माध्यम से आये. अत: भारत में राष्ट्रवाद का उदय उपनिवेशवाद के विरोध में हुआ. आधुनिक विचारों से जागरुक भारतीय बुद्धिजीवी वर्ग नें सबसे पहले उपनिवेशवाद का विरोध आरम्भ किया और राष्ट्रवादी विचारधारा का प्रचार किया. भारत में राष्ट्रवाद के जन्म एवं उसके विकास के बारे में आप पिछले अध्यायों में पढ़ चुके हैं. इस ब्लाक में हम विभिन्न सामाजिक वर्गों में राष्ट्रवाद के प्रसार की चर्चा करेंगे. राष्ट्रवादी विचारधारा का प्रभाव सर्वप्रथम पढ़े-लिखे मध्यवर्ग पर पड़ा. इसी मध्यवर्ग को अक्सर भारतीय बुद्धिजीवी वर्ग भी कहा जाता है, जो राष्ट्रवादी विचारधारा का वाहक भी था. परंतु, राष्ट्रवाद का प्रभाव अन्य भारतीय वर्गों पर भी पड़ा. भारतीय किसानों तथा पारम्परिक जमींदार वर्गों की उपनिवेशवाद-विरोध की एक परम्परा रही थी, जिसे सदैव राष्ट्रवादी विचारधारा के खांके में ही नही देखा जा सकता. परंतु, उन्नीसवीं सदी में राष्ट्रवाद के प्रसार ने इन वर्गों को भी प्रभावित किया. नवोदित भारतीय पूंजीपति एवं श्रमिक वर्ग भी राष्ट्रवादी विचारधारा के प्रभाव से अछूते नहीं थे. इस अध्याय में हम ऐसे ही कुछ वर्गों का अध्ययन करेंगे.

4.2 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य कुछ प्रमुख भारतीय सामाजिक वर्गों पर राष्ट्रवाद के प्रभाव एवं प्रसार का अध्ययन करना है. हम जानते हैं कि राष्ट्रवाद की विचारधारा का प्रभाव सर्वप्रथम पढ़े-लिखे बुद्धिजीवी मध्यवर्ग पर पड़ा. इसी वर्ग ने विभिन्न् संस्थाओं के माध्यम से राष्ट्रवाद का प्रचार किया. परंतु, दूसरे अनेक भारतीय समूहों में भी राष्ट्रवादी विचारों का जन्म हो रहा था. अक्सर यह माना गया है कि जमींदार एवं भूस्वामी वर्ग औपनिवेशिक शासन के अभिन्न अंग थे. कुछ हद यह बात ठीक भी है, परंतु हम पाते हैं कि बीसवीं शताब्दी तक आते-आते इस वर्ग में भी राष्ट्रीय जागरुकता आ रही थी. पेशेवर वर्गों में वकील, पत्रकार एवं शिक्षकों को शामिल किया जा सकता है. ये वर्ग भी राष्ट्रवादी विचारधारा से प्रभावित होने वाले पहले वर्ग थे. हम जानते हैं कि कांग्रेस की स्थापना एवं राष्ट्रीय आन्दोलन में इन वर्गों ने काफी अहम भूमिका का निर्वाहन किया. प्रकारांतर से देसी पूंजीपति वर्ग को भी मध्यवर्ग में शामिल किया जा सकता है. राष्ट्रीय आन्दोलन का गाँधीवादी युग आते-आते भारतीय पूंजीपतियों के एक वर्ग ने भी राष्ट्रीय आन्दोलन का साथ देना आरम्भ कर दिया था. फिर भी, पूंजीपति एवं भूस्वामी वर्गों के बारे में हम निश्चित रूप से जानते हैं कि उपनिवेशवाद अथवा राष्ट्रवाद को उनका समर्थन उनके अपने हितों से ही अधिक प्रभावित था. इस अध्याय मे हम उपरोक्त सामाजिक वर्गों और राष्ट्रवाद से इसके सम्बन्धों का अध्ययन करेंगे.

4.3 भूस्वामी वर्ग

अंग्रेजों के आगमन के समय भारत एक राष्ट्र नहीं था। राष्ट्रवाद आधुनिक युग की सोंच थी जिसका तत्कालीन भारत में अस्तित्व नहीं था। ब्रिटिश शासन काल में ही भारतीय राष्ट्रवाद का उदभव एवं विकास हुआ। हालांकि इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि वे सभी तत्व जो राष्ट्रवाद के जन्म के लिए उत्तरदायी होते हैं, उनका अस्तित्व भारत में पूर्व से ही विद्दमान था। परन्तु ब्रिटिश आलोचक इस तथ्य से इन्कार करते हैं। इस राष्ट्रवाद के उत्थान तथा विकास में कई वर्गों की महत्वपूर्ण भूमिका रही, जिसमें कि एक जमींदार वर्ग भी था। भारतीय इतिहास में राष्ट्रवाद के विकास में जमींदारों की भूमिका संदिग्ध तथा ढुलमूल रही है।

अंग्रेजों के आगमन के समय भारतीय समाज सामंतवादी व्यवस्था पर आधारित थी, परन्तु यह व्यवस्था यूरोपीय सामंतवाद से सर्वथा भिन्न थी। भारतीय सामंतवाद की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि यहाँ भूमि व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं थी। जमीन का मालिक न तो सामंत सरदार था न ही किसान। इसका मालिक ग्राम-समाज था। अंग्रेजों ने भारत में अपनी सत्ता को सुदृढ़ आधार प्रदान करने और अधिक से अधिक लाभ अर्जित करने के लिए यहाँ की भूमि तथा राजस्व-व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन किया। उत्तरी भारत में उन्होंने स्थायी बन्दोवस्त लागू की जिससे जमींदारों का एक नया वर्ग पैदा हुआ। अब उन्होंने जमीन को व्यक्तिगत सम्पत्ति बना दिया जिसे जब चाहे बेचा, खरीदा या गिरवी रखा जा सकता था। इस व्यवस्था को कायम करने के पीछे अंग्रेजी हुकूमत का एक तो मुख्य उद्देश्य यह था कि वे लगान की एक निश्चित रकम समय पर प्राप्त कर सके तथा दूसरा मुख्य उद्देश्य था जनता तथा सरकार के बीच एक ऐसे वर्ग को स्थापित करना जो सरकार का वफादार हो। क्योंकि जमींदारों का गाँव के किसानों तथा मजदूरों से सीधा सम्बन्ध था। वे जनता के स्वाभाविक नेता समझे जाते थे। इसलिए प्रारम्भिक दौर में, जब ब्रिटिश सत्ता कमजोर थी, ये जमींदार रुपी नये नेता उपनिवेशी राजसत्ता के विश्वसनीय सहयोगी हो सकते थे। और इसमें कोई संदेह नहीं कि ब्रिटिश शासन के मुसीबत के दिनों में इसी नवोदित जमींदार वर्ग ने आगे बढ़कर मदद किया और ब्रिटिश शासन को मजबूती प्रदान की।भारत में अपने शासन को सुचारू रूप से चलाने के लिए ब्रिटिश सरकार को बड़े पैमाने पर क्लर्कों एवं अन्य कर्मचारियों की आवश्यकता थी। इस आवश्यकता की पूर्ति इंगलैंड से करना काफी महंगा साबित हो सकता था क्योंकि अंग्रेज कर्मचारियों को भारतीयों की तुलना में अधिक वेतन देना पड़ता था। दूसरी तरफ भारत में सस्ते कर्मचारी उपलब्ध थे परन्तु इस कार्य में अंग्रेजी भाषा एक बहुत बड़ी समस्या थी। अतः भारत से सस्ते क्लर्क एवं कर्मचारी प्राप्त करने के उद्देष्य से ब्रिटिश सरकार को यहाँ अंग्रेजी शिक्षा की व्यवस्था करनी पड़ी। इस कारण से भारतीय जमींदार वर्ग की शक्ति बढ़ने लगी। क्योंकि प्रारम्भ में, और आगे बहुत लम्बे समय तक, इन

जमींदार वर्गों के बच्चे ही अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करते थे। ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रारम्भ किए गए विद्यालयों में जमींदार वर्गों के बच्चों की संख्या सबसे अधिक थी। क्योंकि तत्कालीन समय में शिक्षा निःशुल्क नहीं थी और जनसाधारण की शक्ति से यह परे था कि वे अपने बच्चों को महंगी फीस देकर अंग्रेजी विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेज सके। वैसे भी ब्रिटिश शासन की शिक्षा की नीति का उद्देश्य भी यही था कि पहले एक समूह को शिक्षित किया जाए फिर शिक्षा अपने आप वहाँ से नीचे की तरफ प्रसारित होती चली जाएगी। इसलिए प्रारम्भिक समय में जमींदार वर्गों के बच्चों ने अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करके डॉक्टर, वकील, शिक्षक जैसे महत्वपूर्ण पदों पर कब्जा जमा लिया। राष्ट्रवाद के प्रचार प्रसार में इन वर्गों की अहम भूमिका थी। सरकारी नौकरियों पर कब्जा जमाकर इस वर्ग ने आर्थिक प्रगति भी की। पहले तो इन लोगों ने इस पैसों को जमीन में लगाया फिर बाद में उद्योग-धन्धों में लगाया और समय के साथ-साथ ये बुर्जुआ वर्ग के प्रतिनिधि बन गए।

इन अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त किए भारतीयों में, जिनमें कि एक बड़ा तबका जमींदार वर्ग से भी था, भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को हीन समझना शुरू कर दिया और अंग्रेजी सभ्यता की तरफ अधिक आकर्षित होने लगे। यह स्मरण करने लायक तथ्य है कि अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त अधिसंख्यक भारतीयों ने 1857 के क्रान्ति का विरोध किया था।

परन्तु क्रमशः जमींदार वर्ग दो वर्गों में बट गया। एक वर्ग तो वह था जो अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने के बाद वाल्टेयर, रूसो, मैजिनी आदि के विचारों से अभिप्रेरित होकर राष्ट्रीयता के भाव से ओत-प्रोत होने लगे थे। दूसरा वर्ग वह था जो यह जानता था कि उनको जन्म देने वाला और उसका पोषक ब्रिटिश सरकार था। अतः यह स्वाभाविक ही था कि यह दूसरा जमींदार वर्ग ब्रिटिश सरकार के समर्थक बने रहे। क्योंकि ये वर्ग अच्छी तरह जानते थे कि जब तक ब्रिटिश सरकार का अस्तित्व है तब तक इनका भी अस्तित्व बना हुआ है। कांग्रेस के जन्म तथा विकास ने सिर्फ ब्रिटिश सरकार पर ही नहीं बल्कि भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों पर भी अलग-अलग प्रभाव डाला। कांग्रेस जैसे-जैसे प्रभावशाली एवं शक्तिशाली होता जा रहा था वैसे-वैसे सामंतवादी वर्ग तथा नए जमींदार वर्ग चाहे वे हिन्दू हो या मुसलमान भयभीत होने लगे। जैसे-जैसे कांग्रेस पर उदारवादियों की पकड़ मजबूत होने लगी, कांग्रेस उस राजनीतिक व्यवस्था के लिए खतरे के रूप में दिखाई पड़ने लगी जिस व्यवस्था ने इस जमींदार वर्ग को जन्म दिया और पाला-पोसा था। फलतः इस दूसरे वर्ग की ब्रिटिश सरकार से निकटता बढ़ती चली गयी।

ब्रिटिश सरकार द्वारा स्थापित भू-राजस्व व्यवस्था में लगान की दर काफी ऊँची रखी गई थी जिसने किसानों तथा खेतिहर मजदूरों की कमर तोड़ दी। इस कारण से लगभग भारत के प्रत्येक क्षेत्रों में किसान विद्रोह हुए। परन्तु जमींदारों ने इन किसानों के हितों को कुचलने का प्रयास किया और सुधार के कोई उपाए नहीं किए। क्योंकि वे अच्छी तरह जानते थे कि वे

ब्रिटिश सरकार द्वारा पदस्थापित किए गए हैं और प्रत्येक विद्रोह को दबाने में ब्रिटिश सरकार उनकी मदद करेंगे, और ऐसा हुआ भी। जहाँ कहीं भी किसान विद्रोह द्वारा जमींदार वर्गों के अस्तित्व को खतरा पहुँचा, ब्रिटिश सरकार ने सेना भेज कर विद्रोह का दमन किया। इस प्रकार जमींदार वर्ग ने प्रत्येक दृष्टिकोण से भारतीय राष्ट्रवाद को कुचलने का प्रयास किया।

प्रारम्भ में कांग्रेस पर जमींदारों, पूँजीपतियों तथा बुर्जुआ वर्ग का प्रभाव था। इसलिए कांग्रेस ने किसानों तथा मजदूरों के हितों को अनदेखा किया और कभी भी उनके हितों की रक्षा के लिए खुलकर सामने नहीं आए। परन्तु 1930 के दशक में, जब कांग्रेस पर समाजवादियों की पकड़ मजबूत हुई तो किसानों और मजदूरों के हितों के लिए अनेक प्रयास किए गए। उस समय जमींदार, पूँजीपति तथा बुर्जुआ वर्ग कांग्रेस के दूसरे खेमें में खड़े पाए गए। इस वर्ग ने भारतीय राष्ट्रवाद को समर्थन अपने आवश्यकतानुसार ही दिया। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में इस वर्ग की भूमिका वहीं महत्वपूर्ण होती थी जहाँ इनके हितों का पोषण होता था। जैसे 1857 की क्रान्ति में अवध के उन जमींदारों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया था जिनकी जमींदारी अंग्रेज सरकार ने छीन लिया था या भविष्य में जिसे छीने जाने का खतरा था। अन्यथा ऐसे बहुत से जमींदार थे जिन्होंने न केवल क्रान्ति का विरोध किया बल्कि इसे दबाने में अंग्रेजों की मदद भी की। यह वर्ग तभी ब्रिटिश शासन के खिलाफ अपनी आवाज बुलन्द करता था जब इनके हितों का टकराव होता था। अन्यथा भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के लगभग सभी अवसर पर यह वर्ग ब्रिटिश खेमा में खड़ा पाया गया। जमींदारों ने अपने हितों की रक्षा के लिए 1838 ई. में लैण्ड-होल्डर्स सोसाइटी नामक संस्था का निर्माण किया। संवैधानिक तरीकों द्वारा राजनीतिक गतिविधि शूरू करने का श्रेय इसी संस्था को है। फिर 1851 ई. में कलकत्ता में ब्रिटिश इंडियन एशोसिएशन की स्थापना की गई। वह भारत का पहला बड़ा स्वयंसेवी संगठन था, जो स्थानीय जमींदारों के हितों का प्रतिनिधित्व करता था। यह संस्था ब्रिटिश संसद को प्रार्थना पत्र भेजकर भारतीय जनता के मुख्य अधिकारों की मांग करती थी। परन्तु वे मुख्य अधिकार वही होते थे जो इन वर्गों के हितों का पोषण कर सके। आम जनता (मजदूरों, किसानों) के लिए इन्होंने कभी कोई मांग नहीं उठायी। हालांकि कभी-कभी नमक और अफीम के एकाधिकार, भारी करों तथा शिक्षा की उपेक्षा को लेकर भी इन्होंने आवाज उठायी। परन्तु इसका यह मतलब नहीं था कि वे ब्रिटिश शासन के विरूद्ध थे, बल्कि वे ब्रिटिश शासन को यह बताना चाहते थे कि ब्रिटेन के साथ जो उनके सम्बन्ध बने हैं उसका उस सीमा तक उन्हें लाभ नहीं मिला है जिस सीमा तक उन्हें पाने की आशा थी। 1850-1870 वाले दशकों में जितने भी संगठन बने वे ब्रिटेन के प्रति वफादार जमींदारों से भरे होते थे।

राष्ट्रीय आन्दोलन में महात्मा गांधी के पदार्पण के बाद इसके क्षेत्र और स्वरूप में परिवर्तन आया। महात्मा गाँधी राष्ट्रीय आन्दोलन में सभी वर्गों को संगठित करना चाहते थे। परन्तु समस्या यह थी कि अगर किसानों तथा मजदूरों के हितों के लिए कदम उठाए जाते तो जमींदारों के हितों पर कुठाराघात होता। क्योंकि, कांग्रेस में जमींदारों की संख्या बहुत अधिक थी। दूसरी तरफ कांग्रेस में कुछ ऐसे राष्ट्रवादी भी थे जो इन जमींदारों के यहाँ बड़ी-बड़ी नौकरियाँ पाते थे। यही कारण था कि कांग्रेस ने मजदूरों और किसानों को लामबन्द करने की कोशिश तो की, परन्तु अधिकांशतः जमींदारों के हितों की रक्षा के लिए उन्होंने किसान विद्रोहों से खुद को दूर रखा। विद्यानंद के नेतृत्व में जब दरभंगा राज के विरूद्ध किसानों का उग्र आन्दोलन चल रहा था, विद्यानंद ने इस आन्दोलन को समर्थन देने के लिए कांग्रेस से बार-बार अपील की परन्तु बिहार कांग्रेस ने उनकी अपील को ठुकरा दिया। अपवाद स्वरूप ही कुछ ऐसे किसान विद्रोह थे जिसके लिए कांग्रेस खुलकर सामने आया। वामपंथी विचारधारा के इतिहासकारों का विचार है कि असहयोग आन्दोलन के स्थगन के पीछे भी जमींदारों तथा पूँजीपतियों के हितों की रक्षा का विचार काम कर रहा था। उनका मानना है कि चौरा-चौरी की घटना के बाद गांधी जी को लगा कि आन्दोलन उनके हाथ से निकलकर क्रान्तिकारियों के हाथ में चला जाएगा और जमींदारों तथा पूँजीपतियों की सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाया जाएगा। अत: गांधीजी ने आन्दोलन को वापस ले लिया. इन इतिहासकारों ने यह भी तर्क दिया कि गांधीजी किसानों के विद्रोहों को समर्थन न देकर जमींदार वर्ग को कांग्रेस में शामिल रखना चाहते थे। भले ही ये तर्क पूरी तरह उचित न पाये गये हों, राष्ट्रीय स्तर पर गांधी जी एवं कांग्रेस एक छतरी वाली भूमिका निभा रही थी जो समाज के सभी वर्गों को एक मंच पर लाने का प्रयास कर रही थी, जिसमें जमींदार वर्ग भी सम्मिलित था. सबल्टर्न इतिहासकारों ने भी यह बात स्वीकार किया है कि राष्ट्रीय आन्दोलन में दो धाराएँ – अभिजन और निम्न वर्ग स्पष्ट रूप से मौजूद थे। उनका मानना है कि निम्न वर्ग उपनिवेशवाद के विरुद्ध वास्तविक संघर्ष कर रहा था जबकि उच्च वर्ग उपनिवेशवाद का ही सहयोगी था. फिर भी, हम पाते हैं कि कुछ जमींदार राष्ट्रवादी आन्दोलन मे शामिल थे. यदि जमींदार वर्ग राष्ट्रवाद की मुख्य धारा में सम्मिलित हुए तो यह उनके परिस्थितियों एवं हितों के उपर था।

4.4 मध्यवर्ग

भारत में आधुनिक मध्यवर्ग का उदय उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ. इस वर्ग के उदय मे निश्चय ही उन परिस्थितियों का हाथ था जिन्हे औपनिवेशिक शासन ने आरम्भ किया था. उन्नीसवीं सदी के आरम्भ में ही अंग्रेजी माध्यम से आधुनिक शिक्षा को अपनाया गया था. इसी सदी के मध्य में परिवहन एवं संचार के साधनों मे भी परिवर्तन हो रहा था. सबसे महत्वपूर्ण था – प्रचार के साधनों का उदय. पहली बार पत्र-पत्रिकाओं एवं अखबारों के माध्यम से विचारों का प्रचार

किया जा सकता था. इन साधनों ने निश्चय ही नये अवसरों को उत्पन्न किया था. पढ़े-लिखे वर्ग को समाचार पत्रों और पत्रिकाओं ने रोज़गार के नये अवसर दिये थे. इसके अलावा औपनिवेशिक प्रशासन में भी शिक्षित वर्ग को रोज़गार के नये अवसर दिये थे. सरकारी नौकरियों में कार्यरत शिक्षित वर्ग को अक्सर 'भारतीय बाबू' कहा जाता था. औपनिवेशिक शासन ने रोज़गार के अनेक दूसरे अवसर भी उत्पन्न किये जिसके परिणामस्वरूप वकील एवं शिक्षक जैसे पेशेवर लोग भी आये. उन्नीसवीं सदी के अंत एवं आरम्भिक बीसवीं सदी में भारतीय पूंजीपतियों का एक वर्ग भी उदित हो रहा था. इन सभी वर्गों को सामूहिक रूप से मध्यवर्ग कहा जाता है. आगे हम इन वर्गों के राष्ट्रवाद से सम्बन्ध की चर्चा करेंगे.

4.4.1 बुद्धिजीवी

भारत में औपनिवेशिक शासन को चलाने के लिये अंग्रेज़ों को एक पढ़े-लिखे वर्ग की आवश्यकता थी. अत: उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में अंग्रेज़ी शिक्षा की नीव डाली गई. अंग्रेज़ी शिक्षा का एक अन्य उद्देश्य शिक्षित भारतीयों के मन का उपनिवेशीकरण करना एवं उनमें वफादारी की भावना भी था. अंग्रेज़ी शिक्षा की सबसे बड़ी कमी इसका वर्गीय एवं क्षेत्रीय आधार पर असमान प्रसार था. जहाँ क्षेत्रीय स्तर पर शिक्षा के प्रसार के केन्द्र तीनों प्रेसीडेंसिया (बंगाल, बम्बई और मद्रास) ही थी, वहीं सामाजिक स्तर पर कुछ वर्ग विशेष का ही वर्चस्व था. बंगाल मे मुख्यत: ब्राह्मण, कायस्थ और वैद्य जाति के लोग ही शिक्षित थे, तो बम्बई मे चितपावन ब्राह्मण और पारसी ही शिक्षा के क्षेत्र मे आगे थे. मद्रास मे भी शिक्षा तमिल ब्राह्मणों एवं आयंगार मे ही सीमित थी. आधुनिक शिक्षा ने एक अन्य असमानता धन के स्तर पर भी उत्पन्न की. आधुनिक अंग्रेज़ी शिक्षा मंहगी होने के कारण केवल सीमित वर्ग ही इससे लाभांवित हो सकता था. सुमित सरकार ने दिखाया है कि 1883-84 में बंगाल के कॉलेज मे पढनेवालों मे केवल 9% ही ऐसे परिवारों से आते थे जिनकी वार्षिक आय 200 रुपए से कम थी. इन असमानताओं के परिणामस्वरुप जो भी शिक्षित वर्ग पैदा हो रहा था उसके लिये रोज़गार का एकमात्र अवसर सरकारी नौकरी ही थी. चूंकि नौकरियों की संख्या सीमित ही थी, अत: लगातार बढ़ते जा रहे इस मध्यवर्ग मे असंतोष भी थी. फिर भी यह मानना कि भारतीय बुद्धिजीवी वर्ग के उदय का कारण ये असंतोष ठीक थे एक अतियुक्ति से अधिक कुछ नही है. यदि हम आरम्भिक उन्नीसवीं शताब्दी के बुद्धिजीवयों का अध्ययन करें तो पायेंगे कि वे आधुनिक पाश्चात्य विचारों से ही अधिक प्रभावित थे. राममोहन राय एवं उनके समकालीन बुद्धिजीवी भारतीय समाज को सुधारने मे अधिक रुचि रखते थे. निश्चय ही वे उपनिवेशवाद के विरुद्ध नही थे.

परंतु, उन्नीसवी शताब्दी के दूसरे अर्धांश में भारतीय बुद्धिजीवी उपनिवेशवाद के विरुद्ध होते चले गये. निश्चय ही इसके कारण वैचारिक ही अधिक थे. ईसाई मिशनरियों के धर्मांतरण के प्रयास ने भारतीय बुद्धिजीवी वर्ग मे एक नई चेतना का विकास किया. 1850 मे सरकार द्वारा बनाए गये लेक्स-लोकी एक्ट ने धर्मांतरण को मान्यता प्रदान कर दी. भारतीय बुद्धिजीवी तब और भी सचेत हो गये जब भारी विरोध के बावजूद 1867 मे मध्यवर्ग पर आयकर का भार भी डाल दिया गया. इससे पश्चात ब्रिटिश सरकार ने उच्च शिक्षा मे कटौती की भी घोषणा की, जिसका बंगाल के बुद्धिजीवियों ने व्यापक विरोध किया. सरकार के कुछ अन्य कार्यों – सिविल सेवा की आयु घटाना, वर्नाकुलर प्रेस एक्ट, आर्म्स एक्ट, एल्बर्ट बिल का विरोध – ने भारतीय बुद्धिजीवी वर्ग को संगठित करने के लिये प्रेरित किया. बंगाल मे सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी ने 1876 मे इंडियन एसोसिएशन की स्थापना की. बम्बई मे बाम्बे एसोसिएशन, पूना मे पूना सार्वजनिक सभा, मद्रास मे मद्रास महाजन सभा आदि का गठन किया गया. इन संगठनों ने राजनीतिक एवं सार्वजनिक मुद्दों पर भारतीय जनमत बनाने का प्रयास किया. ये संगठन ब्रिटिश सरकार के समक्ष भारतीय शिकायतों को रखने का मंच बन गये. इन्होने अक्सर क्षेत्रीय एवं स्थानीय मुद्दों को भी उठाया. राष्ट्रीय स्तर पर भी संगठन की आवश्यकता इन बुद्धिजीवियों को महसूस होने लगी थी. इडियन एसोसिएशन राष्टीय स्तर पर बुद्धिजीवियों को संगठित करने का प्रयास कर रही थी. परंतु राष्ट्रीय संगठन बनाने के प्रयास कांग्रेस के गठन के माध्यम से ही साकार हो पाये. शीघ्र ही कांग्रेस भारतीय विचारों एवं राष्ट्रवादी भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम बन गई. आरम्भिक भारतीय बुद्धिजीवियों का सबसे बड़ा योगदान औपनिवेशिक अर्थतंत्र की विवेचना करना था. इस विवेचना ने भारतीय राष्ट्रवादी आन्दोलन को ब्रिटिश शासन की आलोचना का मौलिक हथियार दिया.

4.4.2 पेशेवर वर्ग

औपनिवेशिक शासन ने भारत में नई सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक संरचना को जन्म दिया. अंग्रेज़ी शिक्षा के प्रसार ने शिक्षक के रूप में एक नये पेशेवर समुदाय को जन्म दिया. इसीप्रकार नई चिकित्सा पद्यति एवं न्यायिक प्रणाली ने डाक्टर एवं वकील जैसे नये पेशों को जन्म दिया. स्पष्ट है कि नये शिक्षित वर्ग के लिये सरकारी नौकरी के बाद ये सबसे वांछित पेशे थे. एक अन्य पेशा, जिसका उदय उपनिवेशकाल के दौरान ही हुआ, पत्रकारिता थी. शिक्षा के प्रसार एवं राष्ट्रवादी चेतना के उदय से पत्र – पत्रिकाओं का प्रसार काफी तेजी से हो रहा था. इसके परिणामस्वरुप पत्रकार वर्ग का उदय हुआ. निश्चित ही इन नवीन पेशों मे भी अवसरों की कमी शीघ्र ही होने लगी. सबसे अधिक असंतोष वकालत और पत्रकारिता से जुड़े लोगों में था. परंतु, यहाँ भी हमें ध्यान रखना चाहिये कि राष्ट्रवाद का जन्म रोज़गार जैसी कुंठा से नही हुआ, जैसा कभी-कभी कैम्ब्रिज इतिहास लेखन ने दिखाने की कोशिश की है. मूलत: आधुनिक शिक्षा

एवं आधुनिक चेतना ने राष्ट्रवाद को जन्म दिया. पत्रकार, वकील, अध्यापक अपने पेशों की विशिष्टता एवं राष्ट्रवादी चेतना के प्रभाव के कारण राष्ट्रवादी आन्दोलन में अधिक मुखर थे. एक अध्ययन के अनुसार कांग्रेस की स्थापना से जुड़े भारतीयों में सबसे अधिक वकील ही थे, पत्रकारों का दूसरा स्थान था. 1888 के इलाहाबाद कांग्रेस अधिवेशन मे शामिल प्रतिनिधियों मे से लगभग 40% वकील थे. वकीलों के पश्चात दूसरे पेशेवर वर्गों में पत्रकारों और अध्यापकों का महत्वपूर्ण संख्या ठीक इसप्रकार नये पेशेवर वर्गों ने राष्ट्रीय आन्दोलन मे अहम भूमिका अदा की.

4.4.3 पूंजीपति

पूर्वी भारत के व्यापार पर अंग्रेज़ी शासन की पकड़ अधिक मज़बूत थी. इसका प्रत्यक्ष कारण था कि ईस्ट इंडिया कम्पनी का व्यापारिक से राजनीतिक अवतरण बंगाल में हुआ था. जबकि पश्चिमी भारत में भारतीय व्यापारियों ने चीन एवं अन्य देशो से होने वाले व्यापार में अपनी भागीदारी को बनाये रखा. भारतीय व्यापारियों के पश्चिमी भारत मे बने रहने का एक कारण वहाँ ब्रिटिश नियंत्रण का देर से स्थापित होना भी था. वस्तुत: उन्नीसवी सदी के उत्तरार्ध में देश के उत्तरी, पूर्वी और मध्य भागों में मारवाड़ी व्यापारी फैल गये. साथ-साथ उपनिवेशवाद के उत्कर्ष ने साहूकारी के पुराने पेशे को एक नई दिशा दे दी. साहूकारों ने ब्रिटिश आयात-निर्यात फर्मों के एजेण्टों के रूप मे काम करना आरम्भ कर दिया. दक्षिण भारत के चेट्टियार व्यापारी एवं साहूकार अंग्रेज़ों के अधीनस्थ सहयोगी के रूप में दक्षिण-पूर्व एशिया में फैल गये. इसप्रकार उपनिवेशवाद के आरम्भिक दौर में भारतीयों की भूमिका विदेशी पूंजी के सहयोगी एवं अधिनस्थ की थी. परन्तु, शीघ्र ही भारतीय पूंजी का उदय हुआ. आश्रित भारतीय व्यापारी व्यापारिक लाभ को पूंजी मे बदल रहे थे. इस भारतीय पूंजी को सूती वस्त्र उद्योग मे प्रारम्भिक विकास का अवसर मिला. बम्बई प्रेसीडेंसी के भीतर ही दक्षिण भारत मे कपास सरलता से उपलब्ध थी. अत: बम्बई और अहमदाबाद भारतीय पूंजीवाद के उदय का केन्द्र बन गये. भारतीय पूंजी एवं पूंजीपतियों को कभी भी औपनिवेशिक सरकार से समर्थन एवं प्रोत्साहन नही मिला. बम्बई के उद्योगों के प्रति ब्रिटिश सरकार की नीति सदैव भेदभावपूर्ण थी. सरकार ने न केवल चुंगी एवं आबकारी के ऊँची दर लगाकर देशी उद्योगों को हतोत्साहित करने की कोशिश की बल्कि दूसरी संरचनात्मक बाधाएँ भी खड़ी की. रेलमार्ग एवं मालभाड़ों की व्यवस्था कुछ ऐसी थी कि आंतरिक व्यापार के बजाय बाहरी व्यापार को ही इसका लाभ मिलता था. 1870 के दशक में बम्बई की कपड़ा मिलों के उदय से इंग्लैण्ड मे कुछ हलचल तो हुई, परंतु लंकाशायर मे उत्पादित माल को सीधी चुनौती अहमदाबाद की मिलों ने दी. जब अंग्रेज़ सरकार ने इंग्लैण्ड के दबाव में चुंगी एवं आबकारी के भेदभावपूर्ण नीति अपनाई तो भारतीय पूंजीपतियों ने राष्ट्रवादी आन्दोलन का साथ

देना आरम्भ कर दिया. अहमदाबाद, बम्बई और पूना पश्चिमी भारत में राष्ट्रवाद के प्रमुख गढ़ बन गये.

राष्ट्रीय आन्दोलन के गॉधीवादी चरण में राष्ट्रवाद को देशी पूंजीपतियों का सहयोग अपने चरम पर था. अंहिसा और ट्रस्टीशिप के गॉधीवादी सिद्धांत निश्चय ही पूंजीपतियों को आकर्षित करते थे. 1930 के दशक में कांग्रेस के भीतर एक अधिक जुझारु प्रवृत्ति तथा वामपंथी झुकाव नेतृत्व के उदय ने भारतीय पूंजीपति वर्ग को आशंकित कर दिया. फिर भी भारतीय पूंजीपतियों का कांग्रेस पर पर्याप्त प्रभाव बना रहा. कांग्रेस के भीतर भारतीय पूंजीपतियों से सहानुभूति रखने वाले प्रभावी भूमिका मे थे. वही इस दौर मे भारतीय पूंजीपतियों ने कांग्रेस के भीतर दक्षिणपंथी ताकतों को समर्थन देना आरम्भ किया ताकि समाजवाद एवं साम्यवाद के खतरों को रोका जा सके. 1936 के जवाहरलाल नेहरु समाजवादी भाषणों की आलोचना करते हुए अनेक भारतीय पूंजीपतियों ने एक उदघोषणा भी जारी की. 1937 के चुनावों मे कांग्रेस की भागीदारी के प्रस्ताव ने कांग्रेस नेतृत्व एवं पूंजीपतियों को पुन: एक साथ ला दिया. चुनावों के पश्चात बने कांग्रेस मंत्रीमण्डलों ने अनेक ऐसे निर्णय लिये जिनसे भारतीय पूंजीपतियों को लाभ था. जहां भारतीय पूंजीपतियों ने कांग्रेस के भीतर एक दक्षिणपंथी समूह को समर्थन दिया वही उपनिवेश्वाद से भी उनके रिश्ते दोहराव भरे ही थे. कुछ इतिहासकारों का मानना है कि राजनीतिक रूप से भारतीय पूंजीपति सरकार के प्रति निष्ठावान ही बने रहे. परंतु अधिकांश इतिहासकारों का विचार है कि पूंजीपतियों ने औपनिवेशिककाल में एक दोहरी नीति अपना रखी थी. सरकार का वे कभी खुले आम विरोध नही करते थे परंतु साथ ही भारतीय राष्ट्रवाद का भी समर्थन करते थे. भारतीय राष्ट्रवाद को पूजीपतियों के समर्थन के कारणों पर भी इतिहासकारों में मतभेद हैं. यह तो तय है कि राष्ट्रवाद को भारतीय पूंजीपतियों का समर्थन निरुद्देश्य नही था. इस तथ्य की पुष्टि कांग्रेस के भीतर दक्षिणपंथी ताकतों को उनके समर्थन से भी होती है. सारांशत: हम कह सकते हैं कि भारतीय राष्ट्रवाद को पूंजीपतियों का समर्थन अपने वर्गीय हितों से ही प्रभावित और संचालित होता था.

स्वमूल्यांकित प्रश्न

कृपया निम्नांकित प्रश्नों के समक्ष सत्य अथवा असत्य लिखिए।

1. जमींदारों ने अपने हितों की रक्षा के लिए 1838 ई. में लैण्ड-होल्डर्स सोसाइटी नामक संस्था का निर्माण किया।

2. अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त अधिसंख्यक भारतीयों ने 1857 के क्रान्ति का विरोध किया था।

3. 1851 ई. में कलकत्ता में ब्रिटिश इंडियन एशोसिएशन की स्थापना की गई।

4.5 सारांश

ऊपर हमनें विभिन्न सामाजिक वर्गों के राष्ट्रवाद से सम्बन्ध का अध्ययन किया है. हमने देखा कि भूस्वामी वर्ग, जिसे भारतीय जनता का स्वाभाविक नेता माना जाता था, अधिकतर औपनिवेशिक सत्ता का साथ ही देता था. बीसवीं सदी में राष्ट्रवाद के प्रसार मुख्यता गॉधीवादी युग में यह वर्ग राष्ट्रवादी प्रभाव मे आया. अंग्रेज़ी शिक्षा के फलस्वरूप भारत में सरकारी कर्मचारियों एवं क्लर्कों, वकीलों, पत्रकारों, अध्यापकों, डॉक्टरों, इंजीनियरों आदि के रूप में एक मध्यवर्ग का उदय हुआ. यह मध्यवर्ग आधुनिक विचारों तथा राष्ट्रवादी चेतना से ओतप्रोत था. इसी वर्ग ने भारत में राष्ट्रवाद के प्रचार के लिये कांग्रेस तथा दूसरे संगठनों का गठन किया. इन मध्यवर्गीय बुद्धिजीवियों एवं पत्रकारों ने राष्ट्रवाद के प्रसार मे अमूल योगदान दिया. उपनिवेशकाल में पूंजीवाद के विकास से भारत भी अछूता नही रहा. भारतीय पूंजीपति वर्ग का विकास प्रारम्भ में औपनिवेशिक पूंजी के सहयोगी या आश्रित के रूप मे हुआ. परंतु, प्रथम विश्वयुद्ध ने भारतीय पूंजी को विकसित होने का अवसर प्रदान किया. अंग्रेज़ो की भेदभावपूर्ण नीति के विरुध एवं गॉधीजी के प्रभाव में भारतीय पूंजीपतियों ने राष्ट्रीय आन्दोलन का साथ दिया. परंतु अधिक गहराई से अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि भारतीय पूंजीपति अपनी आवश्यकता के अनुरूप राष्ट्रवाद अथवा उपनिवेशवाद का समर्थन करते थे. इन्होने कांग्रेस के भीतर अधिक जुझारु नेतृत्व को उभरने से रोकने कि लिये कांग्रेस में दक्षिणपंथी ताकतों को समर्थन दिया.

4.6 स्वमूल्यांकित प्रश्नों के उत्तर

1. सत्य
2. सत्य
3. सत्य

4.7 संदर्भ ग्रंथ सूची

बिपिन चन्द्र, *भारत का स्वतंत्रता संघर्ष,* दिल्ली: हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, 1998

बिपिन चन्द्र, सं., आधुनिक भारत, नई दिल्ली: अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2003

सुमित सरकार, *आधुनिक भारत: 1885-1947,* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2002

4.8 सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री

बिपिन चन्द्र, *भारत का स्वतंत्रता संघर्ष,* दिल्ली: हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, 1998

सुमित सरकार, *आधुनिक भारत: 1885-1947,* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2002

शेखर बन्धोपाध्याय, फ्राम प्लासी टू पार्टीशन: ए हिस्ट्री आफ मॉडर्न इंडिया, दिल्ली: ओरिएण्ट ब्लैकस्वान, 2009

4.9 पारिभाषिक शब्दावली

साम्राज्यवाद: वह नीति है जिसमें कोई राज्य दूसरे राज्यों के भू-क्षेत्रों पर अधिकार करता है अथवा उनकी अर्थ-व्यवस्था व राजनीतिक व्यवस्था पर अपना प्रभुत्व स्थापित करता है।

राष्ट्रवाद : राष्ट्र के निवासियों में देशप्रेम, राजभक्ति तथा परस्पर आत्मीयता की भावना को अभिव्यंजित करता है।

4.10 निबंधात्मक प्रश्न

1. राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान भू–स्वामी, पेशेवर और मध्य वर्ग की भूमिका पर विचार कीजिए।

इकाई पांच

किसान एवं श्रमिक वर्ग

5-1 **प्रस्तावना**

5-2 **उद्देश्य**

5.3 **पुनर्स्थापनात्मक व्यवस्था**

5.4 **परिवर्तनवादी व्यवस्था**

5.5 **महत्वपूर्ण कृषक आन्दोलन**

5.5.**1** **सन्यासी विद्रोह**

5.5.**2** **पागलपंथी विद्रोह**

5.5.**3** **फरायजी विद्रोह**

5.5.**4** **वहाबी आन्दोलन**

5.5.**5** **मोपला आन्दोलन**

5.5.**6** **रामोशी विद्रोह**

5.5.**7** **पाबना आन्दोलन**

5.5.**8** **नील विद्रोह**

5.5.**9** **दिरांग आन्दोलन**

5.6 **20वीं सदी के किसान आन्दोलन**

5.6.**1** **चम्पारण सत्याग्रह (**1917**)**

5.6.**2** **खेडा किसान आन्दोलन (**1918**)**

5.6.**3** **एका आन्दोलन**

5.6.**4** **तेभांगा आन्दोलन**

5.6.**5** **मोपला विद्रोह (**20**वीं सदी)**

5.6.**6** **बारदोली सत्याग्रह**

5.7 **श्रमिक वर्ग (मजदूर)**

5.7.**1** **आल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस**

5.7.**2** **इण्डियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस**

5.8 **प्रमुख श्रमिक आयोग**

5.8.**1** **प्रथम कारखाना कानून (**1881 ई0**)**

5.8.**2** **द्वितीय कारखाना कानून (**1891 ई0**)**

5.8.**3** **त्रितीय कारखाना कानून (**1911 ई0**)**

5.8. **चतुर्थ कारखाना कानून (**1922 **ई0)**
5.9 **सारांश**
5.10 **अभ्यास प्रश्नों के उत्तर**
5.11 **संदर्भ ग्रन्थ सूची:**
5.12 **सहायक उपयोगी पाठ्य सामग्री**
5.13 **निबन्धात्मक प्रश्न**

5-**1** प्रस्तावना

किसान वर्ग (19**वीं-**20**वीं सदी)**

राजनीतिक एवं आर्थिक प्रभुत्व की औपनिवेशिक संरचना ने साम्राज्यवादी एवं भारतीय नागरिकों के विभिन्न घटकों के मध्य निरन्तर संघर्ष को जन्म दिया। भारतीय नागरिकों द्वारा किये गये विद्रोह को आधारभूत कारण शोषण की वह प्रणाली थी जिसके कारण ब्रिटिश उपनिवेशवाद पोषण पा रहा था।

ब्रिटिश सम्राज्यवादी प्रसार के कारण विभिन्न सामाजिक समूह ब्रिटिश शासन के प्रत्यक्ष सम्पर्क में आए और फिर ब्रिटिश औपनिवेशिक शोषण के विरूद्ध उन्होंने प्रतिक्रिया दिखाई। **19**वीं सदी के प्रारम्भ में ब्रिटिश शासन के विरूद्ध होने वाले प्रतिरोध का स्वरूप आद्य राष्ट्रवादी था।

भारत में ब्रिटिश शासनकाल म**sa** कृषक असन्तोष के विभिन्न कारण थे**,** जिनमें सर्वप्रमुख आर्थिक कारण था। प्रारम्भ में जब ईस्ट इंड़िया कम्पनी भारत आयी तो उसका मुख्य लक्ष्य था**,** भारत से अधिकाधिक मुनाफा कमाना। बंगाल विजय के पश्चात् उसने स्थानीय धन से अपने निर्यात के लिए सामान खरीदना प्रारम्भ किया। इस समय भू-राजस्व ही आमदनी का मुख्य स्त्रोत था**,** अतः कम्पनी ने इस ओर विशेष ध्यान दिया। ब्रिटिश शासको ने अधिकाधिक भू-राजस्व प्राप्त करने के लिए भूमिकर इकट्ठा करने का अधिकार नीलामी के माध्यम से बेचा। वह चाहे स्थायी बन्दोबस्त हो**,** रैयतवाड़ी व्यवस्था हो अथवा महालवाड़ी व्यवस्था**,** किसानों से भूमि उत्पादन का अधिकाधिक वसूल किया गया। जमींदारी क्षेत्रों में रैयतों का शोषण एवं अनुपस्थित भू-स्थायित्व महत्वपूर्ण समस्या हो गयी। रैयतवाड़ी क्षेत्रों में महाजनों की उपस्थिति के कारण

कृतिम रूप से जमींदार स्थापित होने लगे। रेलवे तथा यातायात के विकास ने ग्रामीण शोषण को और भी सवल बना दिया।

एक तरफ ब्रिटिश आर्थिक नीतियों की वजह से कृषि पर जनसंख्या का दबाव बढ़ा और भारतीय कृषि व्यवस्था विनाश के कगार पर पहुंच गयी, वही दूसरी ओर ब्रिटिश सरकार ने कृषक असन्तोष को नजरअन्दाज कर दिया। ब्रिटिश शासन द्वारा स्थापित कानून तथा न्यायालय भी किसानों के हक में नही थे। ये सरकार और उनके सहयोगियों मसलन भूमिधर, व्यापारियों तथा महाजनों का पक्ष लेते थे। इस प्रकार औपनिवेशिक शोषण से तंग आकर तथा न्याय से निराश होकर किसानों ने विद्रोह का झण्डा बुलन्द किया। ब्रिटिश शासन के खिलाफ प्रारम्भ हुए इन विद्रोहों को विचार एवं अपनाए गए साधनों एवं उद्देश्यों की दृष्टि से दो प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है जैसे पुनर्संस्थानात्मक तथा परिवर्तनवादी व्यवस्था।

5-2 उद्देश्य

इस ईकाई को पढने के पश्चात आप निम्नलिखित बिन्दुओं को आसानी से समझ सकते है -

- पुनर्स्थापनात्मक व्यवस्था
- परिवर्तनवादी व्यवस्था
- चरणबद्ध कृषक विद्रोह विद्रोह
- कृषक विद्रोह के कारण
- कृषक विद्रोह के क्षेत्र तथा इसका प्रसार
- कृषक विद्रोह के मुख्य नेता
- प्रमुख कृषक विद्रोह जैसे – सन्यासी, पागलपंथी, फरायजी, वहाबी, मोपला, रामोसी, पाबना तथा नील विद्रोह आदि।
- **20**वीं सदी के प्रमुख कृषक विद्रोह जैसे - चम्पारण सत्याग्रह, खेड़ा, एका, बारदोली तथा अन्य।
- श्रमिक आन्दोलन , कारण, क्षेत्र तथा प्रमुख नेता
- प्रमुख श्रमिक आयोग

5.3 पुनर्स्थापनात्मक व्यवस्था

1765- 1857 के मध्य छोटे राजाओं, पुराने राजस्व मध्यस्थों, जमींदारों एवं पोलीगरों के द्वारा अनेक विद्रोह किये गये। इस विद्रोह को सैनिकों एवं किसानों का भी समर्थन प्राप्त हुआ। इनका लक्ष्य ब्रिटिश शक्ति को बाहर खदेडना तथा पुरानी व्यवस्था की स्थापना करना था। इन्होंने कृषि

सम्बन्धों की समस्या पर भी विद्रोह किये। इनमें महत्त्वपूर्ण विद्रोह हैं **1780- 81** में बनारस के राजा चैत सिंह का विद्रोह, **1801- 05** में उत्तरी अर्काट का पोलीगरों का विद्रोह साथ ही श्रावणकोर एवं कोचीन में वेलाथम्पी का विद्रोह। **1857** के विद्रोह को भी इसी श्रेणी में रखा जा सकता है क्योंकि यह भी स्वरूप की दृष्टि से पुनर्स्थापनावादी ही था।

5.4 परिवर्तनवादी व्यवस्था

1857 ई0 के पश्चात् कृषक आन्दोलन के स्वरूप परिवर्तन हो गया। अब इन विद्रोहों ने पुनर्रस्थापना नही बल्कि परिवर्तनवादी रूप ले लिया, किन्तु इन विद्रोहों में भी नेतृत्व क्षेत्रीय ही बना रहा तथा इनकी दृष्टि मसीहावादी बनी रही। इन श्रेणियों में **1836- 1854** के मध्य का भोपाल विद्रोह, **1824- 37** के मध्य का पागलपंथी विद्रोह तथा **1837- 57** के मध्य का फरायजी आन्दोलन प्रमुख है।

जब बिद्रोह के चरण का स्वरूप पृथक था, यह स्वतः स्फूर्त होता था तथा इसमें धार्मिक विचारधारा एवं धार्मिक नेतृत्व उपस्थिति था। इन आन्दोलनों में कुछ विशेष कष्टों के निवारण की चेष्टा थी तथा इनका स्वर सुधारवादी था। ये आन्दोलन अपेक्षाकृत शान्त होते थे एवं इसमें बहिष्कार जैसी पद्धति अपनाई जाती थी। ये आन्दोलन तभी उग्र होते थे जब इनकी माँगों को दबाने के लिए बल प्रयोग का सहारा लिया जाता था। जैसे - **1852** ई0 का खानदेश के किसानों का विद्रोह, **1789** ई0 में बिसनपुर के किसानों का विद्रोह, **1809** ई0 में हरियाणा के जाटों का विद्रोह एवं **1921** ई0 का मोपला विद्रोह।

ब्रिटिश शासन काल में चले किसान आन्दोलनों को निम्नांकित चरणों में विभाजित किया जा सकता है -

1. **1857** ई0 तक इसका प्रथम चरण माना जा सकता है एवं इस चरण में जमींदारों, क्षेत्रीय सरदारों अधिकारयक्त जमींदारों आदि के द्वारा नेतृत्व प्रदान किया गया।
2. **1857** के पश्चात् जमींदारों का प्रबल विरोध शान्त हुआ एवं **1870-90** के बीच स्थायी बन्दोबस्त वाले क्षेत्रों में धनी किसानों द्वारा जमींदार विरोधी आन्दोलन हुए, जबकि रैयतवाड़ी क्षेत्रों में महाजनों के विरूद्ध विद्रोह होते रहे। इस चरण में ब्रिटिशों के बिरूद्ध विद्रोह नही हुआ क्योंकि विद्रोह का निशाना तात्कालिक शोषक बने।
3. **1890** से प्रथम विश्वयुद्ध तक कृषक विद्रोह अपेक्षाकृत शान्त ही रहे किन्तु जब **1885** ई0 में रैयतवाड़ी कानून बना तो कृषकों की अपेक्षाएं जागी और वे इन अधिकारों की रक्षा के लिए सजग हुए किन्तु आन्दोंलन के किसी चरण में भी रैयतों ने ब्रिटिश सर्वोच्चता को चुनौती नहीं दी। वस्तुतः बडे पैमाने पर बेदखली के विरूद्ध किसानों का यह स्वतः स्फूर्त एवं भावनात्मक प्रतिरोध था। एवं उनका आक्रोश तात्कलिक शोषकों के विरूद्ध की व्यक्त हुआ जो कि नील उत्पादक, जमींदार, महाजन आदि हो सकते थे।

इन विद्रोह के उद्देश्य तात्कालिक थे और जब ये उद्देश्य पूरे हो जाते थे तो ये आन्दोलन स्वयं शान्त पड़ जाते थे। इस समय के आन्दोलनों को आधुनिक विचारधारा का आधार प्राप्त नहीं था, यही वजह है कि ये औपनिवेशशिक व्यवस्था के विरूद्ध वास्तविक चुनौती उपस्थित नहीं कर सकें।

5.5 महत्वपूर्ण कृषक आन्दोलन

5.5.1 सन्यासी विद्रोह

बंगाल में अंग्रेजी राज्य स्थापित होने तथा उसके कारण नयी अर्थव्यवस्था के स्थापित होने से जमींदार कृषक तथा शिल्पियों का व्यवस्था नष्ट हो गया। इनमें से कुछ लोगों ने सन्यासी का रूप धारण कर लिया तथा धार्मिक भिक्षावृत्ति का सहारा लेकर अपना जीवन यापन करने लगे, मूलतः ये लोग कृषक थे। **1770** के दशक में क्लाइव के द्वैध शासन के फलस्वरूप पड़े भीषण आकाल से उत्पन्न संकट के कारण इनका जीवन और दूभर हो गया। अब ये हिन्दु मुस्लिम साधुओं के दल एक जगह से दूसरे जगह टोली बनाकर घूमते तथा मौका पडनें पर धनाढ्य लोगों तथा सरकारी अफसरों के घर को लूट लिया करते थे। किसानों की बढ़ती दिक्कतों, बढ़तें भू-राजस्व और **1770** के बंगाल के अकाल के कारण कई पदच्यूत जमींदार सेवानिवृत्त सैनिक तथा गाँव के गरीब लोग भी इन सन्यासियों और फकीरों के दल में शामिल हो गये। ये बिहार तथा बंगाल में **5-7** हजार लोगों का जत्था बनाकर घुमते थे। तथा आक्रमण की गुरिल्ला तकनीक अपनाते थे।

आरम्भ में ये मात्र धानढ्य व्यक्तियों के खाद्यान्न भण्डारों को लूटते थे परन्तु बाद में सरकारी पदाधिकारियों पर भी आक्रमण करने लगे। मौका पडने पर सरकारी खजाने को भी लूटा करते थे। कभी-कभी लूटा हुआ धन गरीबों में वितरित भी कर देते थे। बोगरा तथा मैमन सिंह जिलों में इन्होंने स्वतन्त्र सरकार बनाई। इस विद्रोह की खासियत रही कि इसमें हिन्दु तथा मुसलमानों ने कन्धे से कन्धा मिलाकर संघर्ष किया। इस आन्दोंलन के प्रमुख नेताओं में मंजर शाह, मूसा शाह, भवानी पाठक तथा देवी चौधरानी उल्लेखनीय है। बंकिम चन्द्र चटर्जी की पुस्तक आनन्द मठ में इस सन्यासी विद्रोह का सजीव चित्रण हुआ है। लगभग **1800** ई0 तक बंगाल तथा बिहार में अंग्रेजों के साथ सन्यासियों तथा फकीरों का संघर्ष होता रहा।

5.5.2 पागलपंथी विद्रोह

इस विद्रोह का प्रेरक करम शाह था। **1824** में ब्रिटिश सरकार ने जमींदारों से कहा कि वे अपने क्षेत्रों में सड़को के निर्माण करें ताकि वर्मा युद्ध के लिए सेना को सुगमतापूर्वक भेजा जा सके। जमींदारों ने रैयतों से मुफ्त मजदूरी कराकर इन सड़कों का निर्माण करना चाहा जिसका रैयतों ने विरोध किया। युवा किसानों ने टीपू नामक एक फकीर को अपना नेता बनाया जो कि करमशाह

पठान का पुत्र था। करमशाह के कुछ हिन्दू-मुस्लिम अनुयायी थे जो स्वंय को पागलपंथी कहते थे। लोगों में यह अफवाह फैल गयी कि अब जमींदारों तथा अंग्रेजों का शासन समाप्त होने वाला है और टीपू का शासन शुरू होने वाला है। ब्रिटिश सेना के वहाँ पहुँचने पर सशस्त्र किसानों ने उसका विरोध किया। इन किसानों का आदेश था कि जमींदारों को राजस्व न दिया जाए। उन्होंने जमींदारो के मकानों पर आक्रमण किया तथा उनके जुल्मों के विरूद्ध अंग्रेजों से मदद माँगी। **1825** के प्रारम्भ में ही घमासान युद्ध हुए परन्तु वर्मा युद्ध के समाप्त होने पर सकड़ निर्माण का कार्य रूक गया और अंग्रेजों ने लगान वसूली पर फिर से विचार करने का वायदा किया फलतः विद्रोह शान्त हो गया। **1827** में टीपू को गिरफ्तार कर लिया गया किन्तु **1833** में जब देखा गया कि वसूली में कोई रियासत नही दी गयी है तो सशस्त्र विद्रोह पुनः भड़क उठा तथा बाद में इस विद्रोह ने कानूनी रूप ले लिया। रैयतों ने मैमन सिंह जिले में अपना एक कानूनी प्रतिनिधि तथा स्थाई प्रतिनिधि मण्ड़ल नियुक्त कर दिया।

5.5.3 फरायजी विद्रोह

फरायजी एक सम्प्रदाय था जिसकी स्थापना हाजी शरियतुल्ला ने की थी। आरम्भ में फैराजी आन्दोलन अधिक राजस्व निर्धारण तथ बेदखल किये गये किसानों के असन्तोष के कारण आरम्भ हुआ परन्तु आगे दूदू मियाँ के नेतृत्व में इस आन्दोलन ने रेड़िकल धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों की वकालत की। दूदू मियाँ ने किसानों की दयनीय स्थिति को आन्दोलन का मुख्य मुद्दा बनाया। इससे उनके अनुयायियों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई। उसने किसानों को अपने अधिकारों के लिए लडने को प्रेरित किया।

उन्होंने घोषणा की कि सरकार को जमीन पर कर लगाने का अधिकार नहीं है। उन्होंने अंग्रेजी द्वारा स्थापित प्रशासनिक व्यवस्था को बदलने का प्रयास किया। अपने विचारों का प्रचार करने के लिए दूदू मियाँ ने विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिनिधि नियुक्त किये तथा गाँवों में स्वतन्त्र न्यायालय स्थापित किये जिसका प्रधान बुजुर्ग एवं साफ-सुथरे चरित्र वाले व्यक्ति को बनाया गया। गाँव के लोगों को ब्रिटिश न्यायालय में जाने से रोक दिया गया तथा उन्हें अपने झगड़ों का निपटारा इन स्वतन्त्र न्यायालयों से करवाने को कहा गया। इस आज्ञा के उल्लंघन पर जुर्माने व्यवस्था की गई। जमींदारों के विरूद्ध आन्दोलन करने के मुद्दे पर कोई धार्मिक भेदभाव नही बरता गया। फैराजियों ने सामन्ती उत्पीडन तथा निलहों के अत्याचार से किसानों की रक्षा की। **1857** से पूर्व तक यह आन्दोलन फरीदपुर के अतिरिक्त **24** परगना, नदियाँ आदि तक फैल गया।

फैराजियों की कार्यवाही का देशी जमींदारों, धनी वर्गों, निलहों आदि ने विरोध किया। सरकार पर दबाव डाला गया कि वे फैराजियों के विरूद्ध कार्यवाही करें। सरकार ने भी जमींदारों का साथ देते हुए सेना भेजकर फैराजियों का दमन प्रारम्भ कर दिया तथा दूदू मियाँ को गिरफ्तार कर लिया गया जिससे आन्दोलन धीमा पड़ गया। इस आन्दोलन का महत्व इस बात में है कि इसने पहली

बार बंगाल के किसानों की संगठित होकर सामन्ती अत्याचारों का सामना करने के अवसर प्रदान किया। यह आन्दोलन एक प्रकार से निम्न वर्ग तथा बुर्जुवा वर्ग के मध्य संघर्ष बन गया।

5.5.4 वहाबी आन्दोलन

यह आन्दोलन **1830** के दशक से **1860** के दशक तक चलता रहा। इस आन्दोलन के जन्मदाता रायबरेली के सैयद अहमद थे। वे अब्दुल वहाब तथा शाह वलीउल्ला की शिक्षा से प्रभावित थे। यह आन्दोलन पुनरूत्थानवादी था।

इस आन्दोलन की एक मुख्य विशेषता यह थी कि बंगाल में किसानों की समस्या को उठाया तथा उसके समर्थन से व्यापक रूप धारण कर लिया। बंगाल में इस आन्दोलन का नेता टीटू मीर था जो कि स्वयं एक जुलाहा था तथा जमींदार का लठैत रह चुका था। टीटू मीर ने किसानों पर जमींदारों के अत्याचार उनके द्वारा लगाये गए दाढ़ी कर तथा ब्रिटिश प्रभुत्व का प्रतिकर किया। जब नादियाँ के जमींदार कृष्णराय ने लगान की राशि बढ़ा दी तो टीटू मीर ने उस पर आक्रमण कर दिया। परन्तु अंग्रेजों ने अन्ततः टीटू मीर को मारने में सफलता पाई जिससे यह विद्रोह कमजोर हो गया।

5.5.5 मोपला आन्दोलन

जिस प्रकार बंगाल के किसानों को स्थायी बन्दोबस्त से कठिनाई हुई थी तथा कानून से उन्हें कोई संरक्षण नही मिला था, उसी प्रकार मालबार में भी अंग्रेजों की भू-राजस्व व्यवस्था से किसान असन्तुष्ट थे। ब्रिटिश शासन भू-स्वामियों के अधिकारों पर बल देता था। अतः उसने भू-बन्दोबस्ती के क्रम में वर्ग के हिन्दुओं, नंबूदरी तथा नायर जेन्मियों की शक्ति को पुनः अधिकाधिक अधिकार के साथ स्थापित कर दिया। इनमें से अधिकांश को पहले टीपू ने दक्षिण की ओर खदेड़ दिया था तथा उसकी भूमि मुसलमान कृषक जो मोपल कहलाते थे को आबंटित कर दी थी। ब्रिटिश व्यवस्था के तहत मोपलाओं का सामूहिक रूप से भूमि से बेदखली का एक परिणाम तो यह हुआ कि मुसलमानों में सामुदायिक एक जुटता बढी।

नई व्यवस्था में इन मोपला रैयतों को रेहनदार बना दिया गया। जिससे जमीन के मालिक अपनी इच्छानुसार इनको बेदखल कर सकते थे। मैसूर के राजाओं के शासन काल से पूर्व मालावार में लगान की दर बहुत कम थी और जेनमियों ने काश्तकारों को जमीन का पूरा अधिकार दे रखा था किन्तु अब लगान की दर मनमानें ढंग से निश्चित कर दी गयी थी। काश्तकारों को बेदखल करने का अधिकार जेन्मी को दे दिया गया था। एक अनुमान के अनुसार **1862-1880** के मध्य मालाबार में लगान और बेदखली सम्बन्धी मुकदमों में क्रमशः **244** और **441** प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई थी।

इस शोषण के परिणामस्वरूप काश्तकारों ने जेनमियों के खिलाफ हिंसा प्रारम्भ कर दी जिसकी पराकाष्ठ **1840** में हुई जबकि **1836** और **1840** के मध्य इन पर सोलह **(16)** बार आक्रमण हुए। जिन लोगों ने इस हमले में भाग लिया उनमें से अनेक धार्मिक उन्माद में ग्रस्त थे और उलेमा वर्ग विशेषकर सैयद अली तथा उसके पुत्र सैयद फजल से प्रभावित थे। **1851** के प्रमुख मोपला विद्रोह के पश्चात् सैयद फजल मालाबार में चला गया और अंग्रेजों ने **1854** में अपराधियों के विरूद्ध कठोर कानून बना दिया।

1882- 85 तथा पुनः **1896** में और भी विद्रोह हुए। इस विद्रोह ने जेनमियों की सम्पत्ति पर आक्रमण और उनके मन्दिरों की नष्ट करने का स्वरुप धारण कर लिया परन्तु मोपला असन्तोष की जड़े स्पष्टतः कृषि व्यवस्था में थी।

5.5.6 रामोशी विद्रोह

1822 ई0 में पश्चिम घाट पर इस आन्दोलन की पहली अभिव्यक्ति हुई। इसके नेता चित्तूर सिंह थे। इन्होंने सतारा के आस-पास के क्षेत्रों में विद्रोह किया और क्षेत्रों को लूटा। **1825-26** में पुनः विद्रोह हुआ। **1829** ई0 तक यह क्षेत्र अशान्त रहा। **1879** ई0 में रामोशी के नेता के रूप में बलवन्त फड़के का उदय हुआ। पुलिस से छिपकर मन्दिर में शरण लेने के वक्त लिखी गई अपनी आत्माकथा में उन्होंने गुप्त दल बनाने तथा उसके माध्यम से डकैती कर धन जमा करने, संचार व्यवस्था को अस्त-व्यस्त करके सशस्त्र विद्रोह कराने तथा हिन्दू राज्य की स्थापना करने की बात रखी थी। परन्तु इन्हें जल्द ही गिरफ्तार कर लिया गया तथा आजीवन कारावास की सजा दी गयी फिर भी दौलता रामोशी के नेतृत्व में एक दल **1883** तक सक्रिय रहा।

5.5.7 पाबना आन्दोलन

19वीं सदी के उत्तरार्ध में बंगाल के पाबना में किसानों ने जमींदारों के शोषण के विरूद्ध विद्रोह किया। यह विद्रोह जितना अधिक जमीदारों के विरूद्ध था उतना अधिक साहूकारों तथा महाजनों के विरूद्ध नही था क्योकि यहाँ भी महाजन प्रायः स्थानीय धनी किसान या जोतेदार होते थे जिनसे मिलने वाले कर्ज की उत्पादन में अपरिहार्य भूमिका होती थी। अपने दोहरे फसल और पटसन के फलते-फूलते व्यापार के कारण पाबना अपेक्षाकृत समृद्ध जनपद था। यहाँ पर 50 प्रतिशत से अधिक काश्तकारों ने **1859** के एक्ट **10** द्वारा दखली अधिकार प्राप्त कर लिया था फिर भी **1793** से **1773** तक के मध्य जमींदारों के लगान में सात गुना वृद्धि हो गयी थी। भू-स्वामियों ने अनेक प्रकार के आबवाब लगाकर, पैमाइश के लिए मनमाने तौर पर छोटे मापों का प्रयोग करके तथा बल प्रयोग के माध्यम से लगान को मनमाना बढाने का अभियान चला रखा था। इन सभी बातों से रैयत को हाल में प्राप्त पट्टे की सुरक्षा पर आघात होता था।

1873 ई0 में युसुफशाही परगने के किसानों ने एक कृषक संघ बनाया जो मुकदमें लड़ने के लिए धनराशि जुटाता था तथा सभाएं करता था। कभी-कभी ये संघ लगान की अदायगी रोक लेते थे।

धीरे-धीरे पाबना के किसानों की प्रेरणा से ढाका, मैमन सिंह, त्रिपुरा, फरीदपुर, राजशाही इलाकों में भी किसानों ने जमीदारों का विरोध प्रारम्भ किया परन्तु यह आन्दोलन अपेक्षाकृत कम हिंसक रहा क्योंकि यह समीपस्थ अत्याचार के विरूद्ध संघर्ष था। **1873 ई0** में बंगाल के लेफ्टिनेंट कैंपबेल ने किसान संगठनों को जायज ठहराया। हाँलाकि बंगाल के जमींदारों ने इस आन्दोलन को साम्प्रदायिक रंग देना चाहा। जमींदारों के वचेस्व वाले ब्रिटिश इंण्ड़यन एसोसिएशन ने इसका कडा विरोध किया और इसके मुख्य पत्र हिन्दू पैट्रियाट ने पाबना आन्दोलन को हिन्दू भू-स्वामियों के विरूद्ध मुसलमान किसानों के साम्प्रदायिक आन्दोलन के रूप में चित्रित करने का प्रयास किया परन्तु इस आन्दोलन में हिन्दू तथा मुसलमान दोनों सम्मिलित थे। आन्दोलन के नेता भी दोनों वर्गों से आते थे जैसे ईशान चन्द्र राय सम्भू पाल, खुदी मुल्ला। इसी आन्दोलन के परिणामस्वारूप **1885** का बंगाल काश्तकारी कानून पारित हुआ जिसमें किसानों को राहत पहुँचाने की व्यवस्था थी।

5.5.8 नील विद्रोह

मोपला आन्दोलन की अपवाद में रखा जाए तो सबसे अधिक उक्त और विस्तृत किसान आन्दोलन **1859-60** का नील आन्दोलन था। शोषण के खिलाफ किसानों की यह सीधी लड़ाई थी। यह विद्रोह नील उत्पादकों के अत्याचार तथा अमानवीय व्यवहार के कारण प्रारम्भ हुआ। दरअसल नील का प्रयोग रंग बनाने में किया जाता था तथा इसकी यूरोपीय देशों में भारी माँग थी, यह ईस्ट इंण्डिया कम्पनी का प्रमुख व्यापारिक माल था। नील उत्पादन के क्षेत्र में अधिकतर यूरोपीय लोग जुड़े थे उन्होंने रैयतों को इस बात के लिए दबाव डाला कि वे अपने खेत के कुछ अच्छे हिस्सों में अनिवार्य रूप से नील की खेती करें जिससे नील की आपूर्ति सुनिश्चित हो सके परन्तु नील के बागान मालिक इन कृषको को उचित पारिश्रमिक नहीं देते थे। किसानों के शोषण के लिए नील उत्पादक मामूली सी रकम अग्रिम करार लिखवा कर देते थे। इस करार में धोखे से नील की ऐसी कीमत दर्ज करा दी जाती थी जो बाजार भाव से काफी कम होती थी। इतना ही नहीं किसानों को कम कीमत पर भी पैसा नहीं दिया जाता था और प्रायः उन्हें ठग लिया जाता था। नील उत्पादानों के नुमाइन्दे भी किसानों से नियमित रूप से रिश्वत लेते थे। करार के वक्त जो पैसा किसानों को अग्रिम दिया जाता था अगर किसान उसे वापस भी लौटाना चाहता था तो उसे ऐसे नही करने दिया जाता था। इन बागान मालिकों को विधि का समर्थन भी प्राप्त होता था क्योकि अधिकांश मजिस्ट्रेट या तो यूरोपीय थे अथवा स्वयं नील उत्पादक अथवा स्वयं जमींदार।

आगे नील उत्पादकों ने करार करने के तरीकों को भी छोड़ दिया क्योकि इससे अदालती झंझट हो सकते थे। वे अब किसानों को आतंकित कर अपना काम करने लगे। वे अपने लठैतों द्वारा

किसानों के अपहरण कर, उनकी पिटाई कर अथवा उनके परिवार को परेशान करके उन्हें नील उगाने को मजबूर करने लगे। इन सभी बातों से किसानों में भारी असन्तोष व्याप्त हो रहा था। **1859** में कलारोवा के मजिस्ट्रेट हेमचन्द्राकर ने किसानों के पक्ष में निर्णय दे दिया कि यह पुलिस की जिम्मेदारी है कि कोई नील उत्पादक या अन्य कोई व्यक्ति रैयतों के मामले में हस्तक्षेप न करने पाये। चन्द्राकर की इस घोषणा से किसानों में दुर्दशा से मुक्ति का ख्याव जगा। उन्हें लगा कि बरसों से चला आ रहा शोषण बन्द होने का समय आ गया है परन्तु नील उत्पादाकों का रवैया नही बदला। प्रारम्भ में किसानों ने शान्तिपूर्ण ढंग से संघर्ष चलाया, अधिकारियों के पास अर्जियाँ भेजी गयी तथा प्रदर्शन किये गये परन्तु इसमें सफलता नही मिलने पर किसानों ने विद्रोहात्मक रवैया अपना लिया। गाँव-गाँव में किसानों ने स्वयं को संगठित किया। जैसे ही निलहों के आदमी गाँव में आते किसानों के हथियारबन्द दस्ते उन्हें वहाँ से खदेड़ देते। एक किसान दूसरे किसान की जमीन नीलामी में नही खरीदता और उसके विरूद्ध हुए मुकदमें में गवाही भी नहीं देता।

1860 में अपेक्षित सफलता नही मिलते देखकर किसान सशस्त्र संघर्ष पर उतारू हो गए, शुरूआत नदिया जिले के गोविन्दपुर गाँव से हुई। एक नील उत्पादक के दो भूतपूर्व कर्मचारी दिगम्बर और विष्णु विश्वास तथा मालदा के रफीक मंड़ल के नेतृत्व में वहाँ के किसान एकजुट हुए तथा नील की खेती बन्द कर दी। जल्द ही यह विद्रोह अन्य जगहों पर भी फैल गया तथा किसानों ने अग्रिम राशि लेने, करार करने आदि से मना कर दिया। इसके जबाव में नील उत्पादकों ने अपने लठैतों के माध्यम से कार्यवाही की परन्तु किसानों की एकजुटता के आगे उनकी एक ना चली। कई बार तो संघर्ष रोकने या आन्दोलनकारी नेताओं की गिरफ्तार करने गयी पुलिस भी ग्रामीणों ने हमला किया। इस दौरान कई पुलिस चौकियों पर भी हमला किया गया। नील उत्पादकों ने किसानों को धमकी दी कि वे अपने जमींदारों अधिकारों को इस्तेमाल कर विद्रोही किसानों से जमीन छीन लेंगे या उसका लगान बढा देंगे। इसके जबाव में किसानों ने लगान चुकाना ही बन्द कर दिया। अब तक रैयतों ने अधिकारों के लिए कानूनी ढंग से लडना भी सीख लिया था। अपने खिलाफ दायर किये गये मुकदमें को लड़ने के लिए उन्होंने पैसे जुटाए तथा उन्होंने उत्पादकों के खिलाफ मुकदमें भी दायर किये। उत्पादकों के सहायको का सामाजिक बहिष्कार भी प्रारम्भ किया गया।

किसानों के एकजुट प्रतिरोध को नील उत्पादकों के लिए झेलना मुश्किल था। अतः धीरे-धीरे उन्होनें नील कारखाने बन्द करने शुरू कर दिये। **1860** तक बंगाल में नील की खेती बन्द हो गयी। दीनबंधु मित्र ने नील दर्पण में किसानों की इसी विजय गाथा का वर्णन किया है।

नील आन्दोलन की सफलता का सबसे बडा कारण यह रहा कि रैयतों ने पूरे अनुशासन, एकजुटता, संगठन एवं सहयोग के बल पर यह लडाई लडी थी। आन्दोलन के नेतृत्व एवं भागीदारी के सभी स्तरों पर हिन्दू-मुस्लिम एकता अक्षुण्ण रही। इस आन्दोलन को थोडी अच्छी

आर्थिक स्थिति वाले रैयतों का भी सहयोग मिला। कुछ मामलो में तो छोटे जमींदारों, महाजनों तथा नील उत्पादाकों के भूतपूर्व कर्मचारियों ने भी आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान किया। इस आन्दोलन को बंगाल के बुद्धिजीवियों का भी सहयोग मिला। अखबारों में लेख लिखकर, जन सभाऐं आयोजित कर तथा किसानों के समर्थन में ज्ञापन जारी कर बुद्धिजीवियों ने संघर्ष के समर्थन में माहौल बनाया। इसके अलावा मिशनरियों ने भी नील आन्दोलन के समर्थन में सक्रिय भूमिका निभायी। इस आन्दोलन के प्रति सरकारी रवैया भी सन्तुलित रहा और ऐसा कडा रूख नही अपनाया जैसा अन्य विद्रोह के समय देखने को मिलता है।

5.5.9 दिरांग आन्दोलन

यह आन्दोलन असम क्षेत्र में फैला था। इसकी जडे भी औपनिवेशिक शोषण में ही निहित थी। असम प्रान्त अस्थायी बन्दोबस्त वाले रैयतवाडी क्षेत्र में आता था। ऐसे क्षेत्रों में लगान बढाने के ब्रिटिश सरकार के प्रयासों ने कभी-कभी एक अन्य प्रकार के ग्रामीण प्रतिरोध को भडकाया जिसकी विशेषता थी अत्यधिक भतैक्थ, स्थानीय बडे लोगों का नेतृत्व तथा बुद्धिजीवियों का कहीं अधिक स्पष्ट समर्थन असम के कामरूप एवं विरांग क्षेत्रों में **1893-94** में एक नया राजस्व बन्दोबस्त जारी किया गया जिससे लगान की दर में **50** से **70** प्रतिशत तक बढोतरी हो गई।

5.6 20वीं सदी के किसान आन्दोलन

इस काल में भी आन्दोलन के मूल कारण कमोवेश वही बने रहे जो **19**वीं सदी में थे, हाँ इसके स्वरूप में जरूर अन्तर आ गया। अब कृषक आन्दोलन का उद्देश्य भी व्यापक हो गया। **19**वीं सदी के कृषक आन्दोलन का स्वरूप क्षेत्रीय तथा मसीहावादी था। इस समय आन्दोलन का दृष्टिकोण भी संकीर्ण होता था तथा इसका मुख्य निशाना तत्कालीन शोषक वर्ष होते थे। जैसे पांबना के किसानों ने घोषणा की कि वें महारानी के रैयत हैं तथा उन्हीं के बनकर रहना चाहेगें। इसके उद्देश्य भी तत्कालिक होते थे। जब ये उद्देश्य पूरे हो जाते थे तो ये आन्दोलन स्वयमेय शान्त पड़ जाते इन आन्दोलनों को आधुनिक विचारधारा प्राप्त नहीं था यही वजह है कि औपनिवेशिक शासन के समक्ष ये वास्तविक चुनौती प्रस्तुत नहीं कर सके।

परन्तु **20**वीं सदी के कृषक आन्दोलनों का स्वरूप अलग था। इस अवधि के कृषक आन्दोलनों को स्पष्ट राजनीतिक विचारधारा का आधार प्राप्त था। **20**वीं सदी के कृषक आन्दोलनों का राष्ट्रीष्य आन्दोलन से जुडाव था। कृषक आन्दोलन पर बुर्जुआवादी प्रभाव, विभिन्न क्षेत्रों में किसान सभाओं का गठन होना तथा उनमें किसान नेताओं के साथ राष्ट्रीय नेताओं का भाग लेना इसका उदाहरण है। किसान सभा के नेता भी सक्रिय रूप से राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेते थे।

5.6.1 चम्पारण सत्याग्रह (1917)

20वीं सदी के आरम्भिक दशकों में चम्पारण में किसान आन्दोलन हुआ जिसकी गूँज पूरे भारत में हुई। इस आन्दोलन का महत्त्व इसलिए भी ज्यादा है कि यहीं से महात्मा गाँधी का राजनीति में सक्रिय रूप में प्रवेश हुआ तथा राष्ट्रीय आन्दोलन के मुख्य अस्त्र सत्याग्रह का प्रथम प्रयोग यहीं पर हुआ।

उत्तर बिहार में नेपाल की सीमा पर स्थित चम्पारण में बहुत दिनों से नील की खेती होती थी। इस क्षेत्र में अंग्रेजी बगान मालिको को रामनगर तथा बेतिया राज में जमीन की ठेकेदारी दी गई थी। इन लोगों ने इस क्षेत्र में कृषि की तिन कठिया पद्धति विकसित कर ली थी जिसके अनुसार प्रत्येक किसान को अपनी खेती योग्य जमीन के **15** प्रतिशत भाग में नील की अनिवार्य खेती करनी होती थी। इसके अलावा किसान अपना नील बाहर नहीं बेच सकते थे, उन्हें बाजार से कम मूल्य पर बागान मालिक को ही नील बेचना पड़ता था, इससे किसानों का आर्थिक शोषण होता था। **1900** ई0 के पश्चात जब यूरोपीय देशों में नील की माँग कम होने लगी तथा इसका मूल्य घटने लगा तब भी नील उत्पादकों ने इसकी क्षतिपूर्ति किसानों से ही करनी चाही, उन पर अनेक प्रकार के नए कर लगा दिए गए। अगर कोई किसान नील की खेती से मुक्त होना चाहता था तो उसके लिए आवश्यक था कि वह बागान मालिक को एक बडी राशि तवान के रूप में दें। किसानों से बेगार भी लिया जाता था तथा उन्हें उन्य शारीरिक कष्ट भी भोगना पडता था। वस्तुतः यहाँ के किसानों की स्थिति बंगाल के किसानों से भी बदतर थी।

निलहों के अत्याचार के विरूद्ध किसान समय-समय पर विरोध प्रकट करते रहते थे। **1905-1908** के मध्य मोतीहारी एवं बेतिया के निकटवर्ती इलाकों में किसानों ने पहली बार व्यापक तौर पर आन्दोलन का सहारा लिया जिसमें हिंसा भी हुआ परन्तु सरकार तथा निलहों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

1916 में चम्पारण के अपेक्षाकृत सम्पन्न किसान राजकुमार शुक्ल ने गाँधी जी की सत्याग्राह पद्धति से प्रभावित होकर उनसे स्वयं चम्पारण आने का अनुरोध किया। अन्ततः गाँधी जी **1917** के कलकत्ता अधिवेशन के पश्चात स्वयं चम्पारण आए। राजेन्द्र प्रसाद, ब्रज किशोर आचार्य कृपलानी आदि कांग्रेसी नेताओं के साथ मिलकर उन्होंने किसानों के शिकायत की जाँच की जो प्रायः सत्य ही पायी गयी। बडी संख्या में किसान अपने अत्याचार की शिकायत लेकर उनके पास आए। गाँधी जी के कार्य का स्थानीय प्रशासन का विरोध किया, स्थानीय प्रशासन ने तुरन्त बाद गाँधी जी को उस स्थान से निकल जाने की सलाह दी। बेतिया प्रशासन ने तो उन्हें गिरफ्तार भी कर लिया परन्तु गाँधी जी ने स्पष्ट किया कि मैं तब तक यह क्षेत्र नहीं छोडूँगा जब तक किसानों की शिकायत पूरी न हो जाए। अन्ततः बिहार के गवर्नर ने किसानों की शिकायतों की जाँच करने के लिए एक आयोग बनाया जिसमें सदस्य के रूप में गाँधी जी को भी शामिल किया गया। समिति ने किसानों की शिकायतों को उचित बताया तथा उसकी सिफारिशों के आधार पर

चम्पारण कृषि अधिनियम पारित किया गया। इसके अनुसार तीन कठिया प्रणाली समाप्त कर दी गयी। गाँधी जी ने बागान मालिकों को इस बात के लिए भी बाध्य किया कि वह किसानों को उस राशि का भी भुगतान करें जो कि उन्होंने अवैध वसूली से प्राप्त किये हैं। अन्ततः बागान मालिक उस राशि का **25** प्रतिशत वापिस करने को तैयार हो गए।

5.6.2 खेडा किसान आन्दोलन (1918)

यह आन्दोलन **1918** में गुजरात राज्य के खेड़ा नामक स्थान में चलाया गया। वस्तुतः खेडा जिले के छोटे पाटीदार **1899** के बाद से ही विभिन्न महामारियों तथा अकालों से जूझ रहे थे। **1917-18** में इनकी फसल खराब हो गई थी तथा साथ ही मिट्टी के तेल, लोहे के सामान, कपड़े तथा नमक की कीमतें बढ़ गई थी, इसकी वजह से ये छोटे पाटीदार मालगुजारी देने में असमर्थ थे परन्तु सरकार ऐसा मानने को तैयार नहीं थी। भूमिकर नियमों के यदि किसी वर्ष फसल साधारण से **25**प्रतिशत कम हो तो वैसी स्थिति में किसानों को भूमिकर में पूरी छूट मिलनी थी परन्तु बम्बई सरकार ऐसा मानने को तैयार नहीं थी कि उपज कम हुई थी। नवम्बर, **1917** में कपड़गंज तालूके के मोहन लाल पांड्य ने खड़ाव फसल के कारण मालगुजारी की नाअदायगी का आन्दोलन प्रारम्भ किया, आगे गाँधी जी भी इस आन्दोलन से जुड़ गए। उन्होने तथा विट्ठल भाई पटेल ने पूरी जाँच पड़ताल के पश्चात् निष्कर्ष निकाल कि किसानों की माँग जायज है तथा राजस्व संहिता के अनुसार पूरा राजस्व माफ किया जाना चाहिए।

परन्तु जब सरकार पर अपील एवं याचिकाओं का असर नही पड़ा तो गाँधी जी ने किसानों को इस हेतु शपथ दिलाई कि वे किसी भी कीमत पर तब तक लगान की अदायगी नहीं करेंगे जब तक सरकार उनकी माँग नही मान लेती। वे अपने सहयोगियों के साथ गाँव-गाँव का दौरा करते तथा लोगों के मध्य जागृति फैलाते। उन्होंने यह भी प्रस्ताव रखा कि अगर सरकार गरीब किसानों का लगान माफ कर देती है तो जो लोग स्वेच्छा से लगान दे सकते हैं वे पूरा लगान चुका देंगे। आगे सरकार ने ऐसा ही आदेश दिया। इसके पश्चात् यह आन्दोलन वापस ले लिया गया।

5.6.3 एका आन्दोलन

एका आन्दोलन जमींदारों के शोषण के खिलाफ हरदोई, बहराइच तथा सीतापुर आदि क्षेत्रों में चलाया गया। इस आन्दोलन में किसान गंगाजल की शपथ लेकर संकल्प लेते कि वे समय पर ही तथा उचित लगान देंगे तथा बेदखली को स्वीकार नही करेंगे। इसके अलावा वें जबरन मजदूरी नहीं करने, अपराधियों की मदद नहीं करने तथा पंचायतों के फैसले को मानने का भी संकल्प लेते थे।

इस आन्दोलन का नेतृत्व पिछड़ी जाति के मदारी पासी जैसे नेताओं के हाथों में था। मदारी पासी के नेतृत्व की खास बात थी कि वे काँग्रेस तथा खिलाफत नेताओं अनुशासित तथा अहिंसक

सिद्धान्तों के प्रति पूरी तरह प्रतिबद्ध नहीं थे। इस वजह से यह आन्दोलन पूरी तरह से राष्ट्रीय आन्दोलन की मुख्य धारा के साथ कदमताल नहीं कर सका। यह आन्दोलन पहले के किसान आन्दोलन से इस मायने में भिन्न था क्योकि इसके साथ छोटे-मोटे जमींदारों भी शामिल थे। ये ऐसे जमींदार थे जो वड़े हुए लगान के बोझ से परेशान एवं सरकार से नाराज थे। लेकिन सरकार ने दमन के बल पर मार्च, **1922** तक आत-आते इस आन्दोलन को खत्म कर दिया तथा कृषकों को राहत के लिए **1926** में आगरा काश्तकारी अधिनियम तथा **1939** में एक काश्तकारी अधिनियम पारित किया।

20वीं सदी के किसान आन्दोलन की मुख्य विशेषता थी किसानों की समस्या रखने के लिए विभिन्न सभाओं का गठन होना। इसी क्रम में **1936** में अखिल भारतीय किसान सभा का गठन हुआ। इसकी पहली बैठक लखनऊ में हुई जिसकी अध्यक्षता स्वामी सहजानन्द ने की। सितम्बर का दिन किसान दिवस घोषित किया गया। इस किसान सभा ने किसान घोषणा-पत्र जारी किया जिसमें आर्थिक शोषण से किसानों की मुक्ति की बात की गई। किसान सभा ने जमींदारी प्रथा की समाप्ति की भी माँग रखी।

5.6.4 तेभांगा आन्दोलन

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद का सबसे व्यापक खेतिहर आन्दोलन तेभांगा आन्दोलन था जो बंगाल के **19** जिलों में फैला तथा **60** लाख किसान इसके सहभागी बने। संघर्ष का सूत्रपात उस बटाईदारी व्यवस्था से हुआ जो बंगाल के अधिकांश हिस्सों में प्रचलित थी। **1946** में उत्तराद्धि में बंगाल में बटाईदारों ने ऐलान करना शुरू कर दिया कि वे अब जोतेदारों यानि भू-स्वामियों को उपज का आधा हिस्सा नहीं बल्कि एक तिहाई हिस्सा देंगे और हिस्सा बंटने तक उसके अपने खलिहानों में रहेगी। बंटाईदारों को ऐसी माँग रखने की प्रेरणा फ्लाउड़ कमीशन की रिर्पोट से मिली थी, जिसमें आधे की जगह एक तिहाई भाग लेने की सिफारिश सरकार से की गई थी। तेभागा आन्दोलन का नेतृत्व बंगाल प्रान्तीय सभा कर रही थी। आन्दोलन शीघ्र ही जोतेदारों तथा बटाईदारों के मध्य हिंसक संघर्ष में बदल गयी। आन्दोलन को और तब मिला जब सुहरावर्दी की मुस्लिम लीग मन्त्रिमण्डल ने **22** जनवरी **1947** को कलकत्ता गजट में बंगाल बटाईदार अस्थाई नियमन विधेयक पारित किया।

यह एहसास होते ही कि तेभांगा की उनकी माँग गैर-कानूनी नहीं हैं, उन गाँवों के किसान भी इस संघर्ष में शामिल हो गये जहाँ अब तक इस आन्दोलन की आहट तक नहीं पहुँची थी। बहुत सी गजहों पर किसान ने जमींदारों के खलिहानों में रखा अनाज अपने खभारों तक ले जाने की कोशिश की जिसके दौरान काफी हिंसा हुई। आन्दोलन जब उग्र होने लगा तो जोतेदारों ने सरकार से अपील की और पुलिस किसानों का दमन करने पर उतारू हो गयी। कई जगाहों पर हिंसक संघर्ष हुए। यह सब तब रो रहा था जब नोआखाती पर भंयकर सम्प्रादायिक दंगे हो रहे थे।

इस आन्दोलन में मुस्लिम किसानों के साथ महिलाओं की भी व्यापक भागीदारी रही। सरकारी दमन, काँग्रेस तथा लीग की उदासीनता तथा किराए पर जमीन उठाने वाले बंगाली मध्यम वर्ग के कारण तथा मार्च, **1947** के अन्त में कलकत्ता में दुबारा दंगों की शुरूआत तथा इसके परिणाम ने आन्दोलन को स्थागित करने पर मजबूर कर दिया।

5.6.5 मोपला विद्रोह (20वीं सदी)

अगस्त **1921** में मालाबार तट पर मोपला किसानों ने एक बार पुनः विद्रोह कर दिया। मालाबार जिले के इन मोपलाओं का विद्रोह कई अन्य किसान संघर्षों के मुकाबले कही अधिक व्यापक तथा जुझारू था। इसकी समस्या भी देश के अन्य किसानों जैसी ही थी। जमींदारों जब चाहते उन्हें बेदखल कर देते, मनमाना लगान बसूलते तथा तरह-तरह के अत्याचार करते। यद्यपि **19**वीं सदी में भी मोपलाओं ने इन्हीं कारणों से विद्रोह किया था परन्तु **1921** के विद्रोह का स्वरूप थोड़ा भिन्न था।

माना जाता है कि **1920** में मंजेरी में मालाबार जिला काँग्रेस के सम्मेलन में जहाँ खिलाफत आन्दोलन का समर्थन किया गया वहीं किसानों की वाजिब माँगों का समर्थन करते हुए एक ऐसा कानून बनाने की माँग की गई जो जमीदार काश्तकार सम्बन्धों को तय करें। इसके आलोक में कोझीकोड़ में काश्तकारों का एक संगठन बनाया गया। इसके फौरन बाद जिले के अन्य भागों में भी ऐसे ही संगठन का निर्माण हूआ। ये संगठन काश्ताकरों की बैठकों को आयोजित करते जिनमें काश्तकारों की वाजिब माँगें उठाई जाती थी। इधर खिलाफत आन्दोलन ने भी जोर पकड़ लिया था।

खिलाफत तथा काश्तकारों के आन्दोलन के आगे बढ़ने से औपनिवेशिक सरकार घबरा गई क्योंकि गाँधी जी, शौकत अली तथा मौलाना आजाद जैसे नेताओं ने इन क्षेत्रों का दौरा कर आन्दोलन का समर्थन किया। **15** फरवरी **1921** को सरकार ने निषेधाज्ञा लागू कर सभी प्रकार की बैठकों पर प्रतिबन्ध लगा दिया तथा सभी महत्वपूर्ण नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। सरकार के इस कदम का सबसे बडा परिणाम हुआ कि आन्दोलन का नेतृत्व स्थानीय मोपला नेताओं के हाथों में चला गया।

सरकारी दमन से क्रुद्ध होकर तथा प्रथम विश्व युद्ध में आंग्रेजों की हार की अफवाह से प्रेरित होकर मोपला काश्तकारों ने विद्रोह प्रारम्भ कर दिया। सरकारी आदेश की अवहेलना की जाने लगी। एरनाड़ तालुके के मजिस्ट्रेट ने एक जमींदार के उकसाने पर जब बिना वारन्ट के खिलाफत आन्दोलन के एक नेता को गिरफ्तार करना चाहा तो मोपलाओं ने इसका विरोध किया। इससे मजिस्ट्रेट ने और सख़्त रूख अपनाया तथा सेना एवं पुलिस के जवानों को लेकर अली मुसलियार को गिरफ्तार करने के लिए निरूरागंड़ी मस्जिद पर छापा मारा। अली मुसलियार के

नही मिलने पर खिलाफत आन्दोलन के तीन अन्य नेता को गिरफ्तार कर लिया गया। इस घटना के पश्चात् अफवाह फैल गयी की अंग्रेजी सेना ने पवित्र मस्जिद का नष्ट कर दिया है। बहुत से मोपला एकत्रित हो गए परन्तु पुलिस के द्वारा इन पर गोलियाँ चला देने से ये लोग हिंसक विद्रोह पर उतारू हो गये। सरकारी कार्यालयों को तहस-नहस कर दिया गया, दस्तावेज जला दिये गये, खजाने को लूट लिया गया। इस प्रकार विद्रोह की आग पूरे एरनाड़ में फैल गयी।

पूरा विद्रोह दो चरणों में चला। प्रथम चरण में विद्रोहियों ने बदनाम जमींदारों, विदेशी बागान मालिकों तथा सरकारी प्रतिष्ठानों को निशाना बनाया। उदार जमींदारों तथा गरीब हिन्दुओं को छोड़ दिया गया। विद्रोही गाँव-गाँव घूमते तथा वैसे जमींदारों को लूटते तथा घरों में आग लगाते। कुछ विद्रोही नेता जैसे कुनहमद हाजी इस बात का पूरा-पूरा ध्यान रखते थे कि हिन्दुओं को न सताया जाए। लेकिन आन्दोलन के दूसरे चरण में हिन्दू विरोधी भावना भी देखने को मिली। दूसरे चरण में सरकार ने माशील लां की घोषणा की तथा हिन्दुओं को प्रशासन का साथ देने को कहा। इसका परिणाम हुआ कि मोपलाओं में पहले से ही सुलगती हिन्दू विरोधी भावना भड़क उठी। जैसे-जैसे सत्ता का दमन बढ़ता गया हिन्दुओं पर हमला, उनकी हत्या तथा जबरन धर्म परिवर्तन की घटना भी आगे बढने लगी। मोपला आन्दोलन के साम्प्रादायिक होने से राष्ट्रीय काँग्रेस ने इससे अपना समर्थन वापस ले लिया जिसका फायदा उठाते हुए **1921** के अन्त तक मोपलाओं के विद्रोह का सरकार ने भारी दमन कर उसे शान्त कर दिया।

5.6.6 बारदोली सत्याग्रह

यह सत्यग्रह सूरत ज़िले के बारदोली तालूके में किसानों द्वारा संगठित किया गया। इस आन्दोलन को कल्याण जी तथा कुंवर जी मेहता ने संगठित किया। **1927** में कपास की गिरती हुई कीमतों के बावजूद बम्बई के गवर्नर ने यहाँ के मालगुजारी में **30** प्रतिशत वृद्धि की घोषणा कर दी थी। इस मुद्दे पर काँग्रेस के नेताओं ने विरोध करने का निश्चय किया तथा इस मामले की जाँच के लिए बारदोली जाँच समिति का गठन किया गया जिसने अपनी जाँच में लगान बढ़ोतरी को अनुचित बताया। इसके पश्चात् अखबारों में लगान बढ़ोतरी के खिलाफ मुहिम छेड़ दी गयी। संवैधानिक संघर्ष में आस्था रखने वाले क्षेत्रीय नेताओं ने जिसमें विधान परिषद के सदस्य भी शामिल थे, ने इस मुद्दे को जोरदार ढंग से उठाया। खेदूत मंड़ल के माध्यम से किसानों की बैठके आयोजित की गयी तथा जिले के कलक्टर को याचिका भेजने की सलाह दी। जुलाई **1927** में सरकार ने **30** प्रतिशत लगान वृद्धि को घटाकर **21.97** प्रतिशत कर दिया। लेकिन यह रियायत मामूली थी तथा इतनी देर से घोषित की गई थी कि इससे कोई भी सन्तुष्ट नही हुआ।

अन्ततः जनवरी **1928** के पश्चात् वल्लभ भाई पटेल ने इस आन्दोलन का नेतृत्व सम्भाल लिया। प्रारम्भ में उन्होंने पत्र लिखकर सरकार से माँग की कि बढ़े हुए लगान को वापस ले लिया जाए अन्यथा किसान लगान नहीं देंगे, परन्तु सरकार का जबाव अत्यन्त ठण्ड़ा रहा। अन्ततः बारदोली

तालूके में किसानों की एक बैठक हुई तथा प्रस्ताव पारित कर लगान की अदायगी तब तक न करने का निर्णय लिया गया जब तक कि सरकार किसी निष्पक्ष ट्रिब्यूनल का गठन नहीं करती अथवा पहले से ही दिये जा रहे लगान को पूरी अदायगी के रूप में स्वीकार नहीं करती। संघर्ष के लिए जागरूकता पैदा करने का काम मुख्य रूप से बैठकों, भाषणों, पत्रों के माध्यम से तथा घर-घर जाकर किया गया। आन्दोलन के नेताओं द्वारा उन लोगों के सामाजिक बहिष्कार का आह्वान किया गया जो चुपके से लगान भरने की तैयारी कर रहे थे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए जाति और ग्राम पंचायतों का भरपूर प्रयोग किया गया। सरकारी अधिकारियों के खिलाफ सामाजिक बहिष्कार के अस्त्र का पूरी तरह प्रयोग किया गया। उन्हें खाद्य सामग्री तथा अन्य जरूरत की वस्तुओं से महरूम किया गया।

बारदोली सत्याग्रह शीघ्र ही एक राष्ट्रीय मुद्दा बन गया। अहमदाबाद के कामगारों ने एक-एक आना चन्दा करके लगभग **1300** रूपये इस आन्दोलन को भेजे। देश का जनमत लगातार इस आन्दोलन के पक्ष में बन रहा था। बम्बई प्रेसीड़ेसी के कई अन्य हिस्सों में भी किसान अपने लगान के पुनर्निधारण पर बल देने लगे। बम्बई के कपड़ा मिलो के मजदूर हड़ताल पर थे तथा सरकार का ड़र था कि पटेल तथा बम्बई के कम्यूनिस्ट नेता मिलकर रेल हड़ताल न करा दे, इससे सेना तथा उसका रसद बम्बई नहीं पहुँच पाता। अगस्त **1928** में स्वयं गाँधी जी भी बारदोली पहुंच गये, अब सरकार के पास झुकने के अलावा कोई चारा नहीं था।

अन्ततः एक न्यायिक अधिकारी ब्रमफील्ड तथा एक राजस्व अधिकारी मैक्सवेल ने सारे मामले की जाँच की तथा निष्कर्ष निकाला कि **30** लगान बढ़ोतरी गलत थी तथा इसे घटा दिया गया।

5.7 श्रमिक वर्ग (मजदूर)

श्रमिक वर्ग भारतीय इतिहास के अध्ययन में एक महत्वपूर्ण पहलू है। श्रमिक प्रायः अनपढ़ होते थे। यही कारण है कि इन्हें अपने सुधार हेतु प्राथमिक कदमों पर अधिक ज्ञान नहीं हो सकी। जबकि **19**वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ही भारत में आधुनिक मजदूर (श्रमिक) वर्ग का उदय हो गया था। टे^{a}ड यूनियन श्रमिकों का एक ऐसा संघ आया जिसका गठन मिलों और कारखानों में काम करने वाले श्रमिकों की अवस्था एवं स्थिति की सुधार करने के उद्देश्य से किया गया। यूनियनवाद श्रमिक संघ क्रमिक विचारधारा पर केन्द्रित था। अतः पहले टे^{a}ड यूनियन का विचार नहीं आया। बुद्धिजीवियों के प्रयास से ट्रेड यूनियन के गठन का मार्ग प्रशस्त हुआ।

1877 ई**0** में अपने नियोजकों के विरूद्ध हड़ताल के रूप में मजदूरों की कार्रवाई का पहला उदाहरण नागपुर एम्प्रेस मिल में हड़ताल के रूप में मिलता है। इसका कारण मजदूरी की दर को लेकर था। एन**0**एम**0** लोखंडी ने **1890** ई**0** में बाम्बे मिल हैन्ड्स एसोसिऐशन की स्थापना की जिसे प्रायः भारत में गठित प्रथम मजदूर संगठन कहा जाता है। यद्यपि यह ट्रेड यूनियन नहीं था।

1897 ई0 में कोष स्थायी सदस्यता तथा स्पष्ट नियमों के साथ पहली बार एक मजदूर संगठन अमलगमेटेड सोसाइटी ऑफ रेलवे सर्वेण्ट्स ऑफ इण्डिया एण्ड बर्मा का गठन हुआ। मजदूर वर्ग के किसी तबके की पहली संगठित हड़ताल ब्रिटिश स्वामित्व और प्रबन्ध में चलने वाली रेलों में हुई। जिसका नाम ग्रेट इण्डियन पेनन्सुला रेलवे था। यह हड़ताल **1899** ई0 में मजदूरी काम के घण्टों तथा अन्य सेवा शर्तो में सुधार के कारण हुई थी। लगभग सभी राष्ट्रवादी अखबारों ने खुलकर इस हड़ताल का समर्थन किया। **1905** ई0 में कलकत्ता की प्रिंटर्स यूनियन की स्थापना हुई जबकि **1907** ई0 में बम्बई की पोस्टल यूनियन की स्थापना हुई। **1908** ई0 में तिलक की गिरफ्तारी के विरोध में बम्बई की कपडा मिलों ने हड़ताल किया। यह मजदूरों की पहली राजनीतिक हड़ताल थी।

प्रथम विश्व युद्ध एवं उसी के दौरान रूस की समाजवादी क्रान्ति ने मिलकर भारत के मजदूर वर्ग एवं उनके आन्दोलन में आमूल-चूल परिवर्तन कर दिया। प्रथम विश्व युद्ध का परिणाम यह हुआ कि भारत के कल-कारखानों का उत्पादन बढ़ गया और औद्योगिक प्रगति हुई। मिल मालिकों ने युद्ध के दौरान अत्याधिक लाभ कमाया किन्तु मजदूरों का वास्तविक वेतन बढ़ने के बजाय औसतन कम हो गया। नियमित सदस्यता और शुल्क के साथ पहला व्यवस्थित श्रमिक संघ 'मद्रास श्रमिक संघ था जिसकी स्थापना वी**0**पी**0** वाडिया ने **1918** ई0 में मद्रास में की थी। यह कपड़ा उद्योग से सम्बन्धित था। यही भारत का पहला वास्तविक टे*ड यूनियन माना जाता है। गाँधी जी द्वारा **1918** ई0 में 'अहमदाबाद टेक्सटाइल लेबर एसोसिऐशन' की स्थापना की गई। यह उस समय की सबसे बड़ी ट्रेड यूनियन थी। यहीं गाँधी जी ने ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त दिया। इसमें उन्होंने बताया कि पूँजीपति, मजदूरो के हितों की रक्षा करने वाला ट्रस्टी होता है। आचार्य जे**0**बी**0** कृपलानी ने स्पष्ट किया है कि ट्रस्टीशिप का अर्थ ही यह है कि पूँजीपति मालिक नहीं है। इसका मालिक वह है जिसके हितों की रक्षा के लिए उसे जिम्मेदारी सौंपी गई है अर्थात् वास्तविक मालिक मजदूर है। मजदूर संघ आन्दोलन की सबसे महत्वपूर्ण घटना 'आल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस की स्थापना है।

5.7.1 आल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस

इसकी स्थापना मुम्बई में **1920** ई0 में हुई थी। इसके मुख्य सस्थापक एन**0**एम**0** जोशी थे जबकि इसके अध्यक्ष लाला लाजपत राय, उपाध्यक्ष जोसेफ बैप्टिस्ट तथा महामंत्री दीवान चमनलाल थे। इसका जन्म **107** टे*ड यूनियनों के मिलने से हुआ। इसकी स्थापना का मूल कारण **1919** ई0 में अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन' की स्थापना था। अतः भारत में भी श्रमिक संगठनों ने आपस में संगठित होने का फैसला किया। एन**0**एम**0** जोशी आल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस के प्रतिनिधि के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन में भेजे गए।

इस यूनियन का प्रथम विभाजन **1929 ई0** में नागपुर के अधिवेशन में हुआ जहाँ जवाहर लाल नेहरू अध्यक्ष बनें। इस विभाजन का मूल कारण साम्यवादियों एवं सुधारवादियों के बीच मदभेद था। इस अधिवेशन में नेहरू रिपोर्ट की आलोचना भी की गई। अतः दक्षिणपंथी इससे अलग हो गए और उन्होंने एन**0**एम**0** जोशी और वी**0**वी**0** गिरी के नेतृत्व में इण्डियन ट्रेड़ यूनियन फेडरेशन' का गठन किया।आल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस' में दूसरा विभाजन **1931 ई0** में हुआ जब रणदिबे और देश पाण्डे ने इस वर्ष रेड ट्रेड यूनियन कांग्रेस' का गठन किया। **1934 ई0** में आल इण्डिया टे"ड यूनियन कांग्रेस' और रेड ट्रेड यूनियन कांग्रेस' आपस में मिल गये। **1938 ई0** में इसमें 'इण्डियन ट्रेड़ यूनियन फेडरेशन' भी मिल गई। इस प्रकार **1938 ई0** में इनका पहला संयुक्त अधिवेशन नागपुर में हुआ।

1922 ई0 के बाद मजदूर वर्ग के आन्दोलन में शिथिलता आई लेकिन वामपंथ के आविर्भाव के कारण **1925 ई0** के बाद मजदूर वर्ग की गतिविधियों को प्रोत्साहन मिला। विभिन्न प्रान्तों में दलों ने किसान कामगार पार्टियों का संगठित करना प्रारम्भ किया। **1925 ई0** में सर्वप्रथम कलकत्ता (कोलकाता) ने प्रान्तीय स्तर पर मजदूर किसान पार्टी बनी। सभी प्रान्तीय दलों ने मिलकर **1928 ई0** में अखिल भारतीय मजदूर एवं किसान पार्टी का गठन किया जिसका प्रथम अधिवेशन सोहनलाल जोशी की अध्यक्षता में कलकत्ता में हुआ। **1928 ई0** में बम्बई (मुम्बई) कपडा मिल मजदूरों ने सबसे बडी हड़ताल की यह छः माह तक चली तथा इसमें डेढ़ लाख लोगों ने भाग लिया।

5.7.2 इण्डियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस

द्वितीय विश्व युद्ध के दोरान मजदूर गतिविधियाँ कुछ हद तक रूक सी गई लेकिन **1945 ई0** के बाद इनके गतिविधियाँ पुनः तेज हो गई। कांग्रेस राष्ट्रवादियों ने **1947 ई0** में 'इण्डियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस' की स्थापना की। जिसके सस्थापक सदस्य बल्लभ भाई पटेल, वी**0**वी**0** गिरि आदि थे। जबकि इसके प्रथम अध्यक्ष बल्लभ भाई पटेल चुने गए।

ट्रेड यूनियन की गतिविधियों को नियंत्रित करने के लिए अंग्रेजी सरकार ने दो प्रमुख अधिनियम पारित किये -

1. ट्रेड यूनियन अधिनियम - इस अधिनियम की प्रमुख विशेषताऐं निम्नलिखित थी।
   - मजदूरों का हड़ताल करने की कानूनी मान्यता मिल गई।
   - मजदूरों को राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया।
2. ट्रेड डिस्प्यूट अधिनियम - इस अधिनियम की प्रमुख विशेषताऐं निम्नलिखित थी।
   - दूसरों के समर्थन में की जाने वाली हड़तालों पर प्रतिबन्ध लगा दिये गये।

- अति आवश्यक सेवाओं तथा बिजली पानी रेलवे आदि में हड़ताल करने पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया गया है।

5.8 प्रमुख श्रमिक आयोग

1875 ई**0** में भारतीय श्रम पर प्रथम आयोग का गठन हुआ जो लंकाशायर के उद्योगपतियों के माँग पर बनाया गया इसका मुख्य उद्देश्य भारतीय कारखानों में श्रमिकों के काम करने के परिस्थितियों का अध्ययन करना था। इसके तहत निम्नलिखित कारखाना कानून बने।

5.8.1 प्रथम कारखाना कानून (1881 ई0)

यह कानून बाल श्रम से सम्बन्धित था इसके निम्नलिखित प्रावधान थे।

- सात वर्ष से कम आयु के बच्चों को कारखानों में नहीं लगाया जा सकता।
- बारह वर्ष से कम आयु के बच्चों के काम करने के घण्टों को सीमित किया गया।

5.8.2 द्वितीय कारखाना कानून (1891 ई0)

यह स्त्रियों की स्थिति में सुधार से सम्बन्धित था। जिसमें डेढ़ घण्टे के मध्यावकाश एवं साप्ताहिक अवकाश की व्यवस्था की गई।

5.8.3 त्रितीय कारखाना कानून (1911 ई0)

यह औद्योगिक श्रमिकों के सुरक्षा तथा स्वस्थ्य से सम्बन्धित था।

5.8.4 चतुर्थ कारखाना कानून (1922 ई0)

यह कानून केवल फैक्ट्रियों पर लागू होता था।

5.9 सारांश

इस अध्ययन से यह पता चलता है कि **19**वीं-**20**वीं सदी में ब्रिटिश एवं जमींदारों के द्वारा किसानों पर भारी मात्रा में कर लगाये गये यहाँ तक कि फसल नष्ट होने तथा अकाल की स्थिति में भी करों की प्रतिशतता में कोई कमी नहीं की गयी साथ की कर न देने की स्थिति में किसानों को यातानाएं दी गयी यहाँ तक कि उनके घर की महिलाओं को भी नही छोड़ा गया। इसके अलावा कर देने के लिए किसानों को महाजनों से ऋण लेना पड़ा तथा इस ऋण को न चुका पाने के कारण अपनी ही जमीनों पर भूमिहीन मजदूरों के रूप में कार्य करने को मजबूर होना पड़ा। कभी-कभी तो ऋण के बोझ के चलते ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाती थी कि किसानों एवं उनके परिवार वालों को बेगारी तक करनी पड़ती थी। जिस कारणवश किसानों की स्थिति बद से बद्तर होती जा रही थी साथ ही किसानों को न्यायिक संरक्षण भी प्राप्त नही था क्योकि अधिकतर मजिस्ट्रेट या तो यूरोपीय थे या फिर जमींदार। इस प्रकार के अत्याचारों ने भोले- भाले किसानों को विद्रोह करने पर विवश कर दिया जिसका परिणाम हमें **19**वीं तथा **20**वीं शताब्दी में विभिन्न किसान विद्रोहों के रूप में देखने को मिलता हैं। इसी प्रकार **19**वीं शताब्दी से प्रारम्भ

हुए मजदूर के क्रियाकलापों में **20**वीं शताब्दी में भी चलती रही। इस शताब्दी में बुद्धजीवियों तथा वामपंथियों ने इनका रास्ता टे"ड यूनियन आदि बनाकर प्रसस्त किया।

5.10 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

नोट - निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर उसके सामने बने सत्य तथा असत्य के रूप में दें।

I. **1780-81** में बनारस के राजा चैत सिंह का विद्रोह पुनर्संस्थापनात्मक स्वरूप के अधीन हुआ। (सत्य/असत्य)

II. सन्यासी विद्रोह करने वालों में मूलतः कृषक हिन्दू तथा मुसलमान दोनों थे। (सत्य/असत्य)

III. पालगपंथी विद्रोह का प्रेरक टीपू एक राजकुमार वंश से थे। (सत्य/असत्य)

IV. फरायजी आन्दोलन की स्थापना हाजी शरीयतुल्लाह ने किया था। (सत्य/असत्य)

V. वहाबी आन्दोलन सिर्फ अंग्रेजी सरकार का विरोधी था कृषक से सम्बन्धित नही था। (सत्य/असत्य)

VI. मोपला विद्रोह आसाम में ही केन्द्रित था। (सत्य/असत्य)

VII. **19**वीं सदी के उत्तरार्ध में बंगाल में पाबना स्थान में किसानों ने जमींदारों के शोषण के विरूद्ध विद्रोह किया। (सत्य/असत्य)

VII. दीनबन्धु मित्र ने नील दर्पण' में नील आन्दोलन का विस्तार पूर्वक वर्णन किया था। (सत्य/असत्य)

IX. ऑल इण्डिया ट्रेड यूनियन की स्थापना **1920** ई0 में हुई। (सत्य/असत्य)

X. मद्रास श्रमिक संघ' प्रथम व्यवस्थित श्रमिक संघ था। (सत्य/असत्य)

उत्तर:

I. सत्य

II. सत्य

III. असत्य

IV. सत्य

V. असत्य

VI. असत्य

VII. सत्य

VIII. सत्य

IX. सत्य

X. सत्य

5.11 संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. चन्द्रा बिपन - इण्डियास स्ट्रेगिल फोर इन्डेपेन्डेन्स, पेंगुइन बुक,दिल्ली, **1993** (अंगेजी व हिन्दी दोनों में है)
2. चन्द्रा, बिपन - इण्डिया आफटर इन्डेपेन्डेन्स, पेंगुइन बुक,दिल्ली, **1993**
3. सरकार, सुमित - मॉडर्न इण्डिया **1885-1947** मेकमिलन इण्डिया लिमिटेड मद्रास **1983** (अंगेजी व हिन्दी दोनों में है)
4. इग्नू कोर्स - मोडर्न इण्डियन हिस्ट्री, **1999** (अंग्रेजी व हिन्दी दोनों में है)

5.12 सहायक उपयोगी पाठ्य सामग्री

1. बन्द्योपाध्याय, सेखर, फ्राम प्लासी टू पार्टिशन: ए हिस्ट्री ऑफ माडर्न इण्डिया, ओरिएण्ट ब्लैक स्वान, दिल्ली-**2004**
2. गॉधी, एम**0**के**0**, हिन्द स्वाराज/इण्डियन होमरूल, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, **1996**

5.13 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न .**1** प्रमुख किसान आन्दोलन के मुख्य कारणों को उदाहरण सहित व्याख्या करै।

प्रश्न .2 19वीं सदी के प्रमुख कृषकों के क्षेत्रों तथा उनके विद्रोहों की व्याख्या कीजिए।

प्रश्न .**3** **20**वीं सदी में हुए किसान आन्दोलन में गाँधी जी की भूमिका पर प्रकाश डालें।

प्रश्न .**4** प्रमुख किसान आन्दोलन 'नील विद्रोह' पर एक टिप्पणी करें।

प्रश्न .**5** परिवर्तनवादी व्यवस्था पर एक लेख उदाहरण सहित लिखिए।

प्रश्न .**6** ऑल इण्डिया ट्रेड यूनियन की व्याख्या करते हुए **20**वीं सदी में इसकी विशेषता पर प्रकाश डालें।

इकाई छह

जनजातियां एवं जनजातीय विद्रोह

6.1 प्रस्तावना

6.2 उद्देश्य

6.3 जनजातीय आंदोलन के कारण

6.4 जनजातीय आन्दोलन का स्वरूप

6.5 प्रमुख जनजातीय विद्रोह

6.5.1 कोल विद्रोह

6.5.2 संथाल विद्रोह

6.5.3 खेरवा विद्रोह

6.5.4 बिरसा मुंडा एक नायक के रूप में

6.6 20वीं सदी का जनजातीय विद्रोह

6.6.1 ताना भगत विद्रोह

6.6.2 कूकी विद्रोह

6.7 सारांश

6.8 पारिभाषिक शब्दावली

6.9 स्वमूल्यांकित प्रश्नों के उत्तर

6.10 निबन्धात्मक प्रश्न

6.11 सहायक उपयोगी पाठ्य सामग्री

6.12 संदर्भ ग्रन्थ सूची

6.1 प्रस्तावना

भारत सदियों से एक कृषि प्रधान देश रहा है। इस क्षेत्र में कृषक के रूप में आदिवासियों ने भी अपनी भागीदारी से कृषि कार्य को सुशोभित करते रहे हैं। इस कार्य में विहार के छोटा नागपुर और संथाल परगना के आदिवासी पलामू के जनजातीय, आधुनिक उड़ीसा तथा पश्चिम बंगाल के जनजातीय, छोटा नागपुर के कोल तथा मुडां जनजातीय, भागलपुर तथा राजमहल के

मध्य निवास करने वाली संथाल जनजातीय और भारत के पूर्वी प्रदेश में कई अन्य जनजातियाँ निवास करती थी तथा कृषि कार्य में लगन के साथ कार्य करती थीं। अंग्रेज़ी शासन का भारत में जैसे.जैसे जड़ मजबूत होता गया धीरे.धीरे इन आदिवासियों की परेशानी भी बढती गई जिसके परिणाम स्वरूप आदिवासीय जनजातियों ने अंग्रेजी शासन के विरूद्ध अपना आक्रोश प्रकट करने लगे।

इसी सन्दर्भ में भारत के विभिन्न भागों के बहुत बड़े क्षेत्रों में रहने वाले आदिवासियों ने 19वीं सदी में ब्रिटिश शासन के खिलाफ गंभीर बिद्रोह किये। भारत में जनजातीय आन्दोनल औपनिवेशिक शासन के विरूद्ध स्वाभाविक प्रतिक्रिया थी। कुछ रीति-रिवाजों तथा परम्पराओं को छोडकर अन्य दृष्टि से जनजाति लोग भी भारतीय जीवन का हिस्सा थे। आमतौर पर जनजातीय समाज अभी भी आदिम के रूप में देखा जाता था। इसमें से कृषि पर निर्भर था। विस्तार तथा कुछ हिस्सा औपनिवेशीकरण नीति ने अंग्रेजी शासक को जनजातीय क्षेत्रों में आने के लिए प्रोत्साहित किया। भ्रष्टाचार तथा अत्याचार के इलाके में घुसपैठ की, तो उनमें घोर असंतोष होना स्वाभाविक ही था, किन्तु जनजातीय लोगों की प्रतिक्रिया अन्य विद्रोहों से इस रूप में भिन्न थी कि यह अपेक्षाकृत ज्यादा हिंसक तथा धार्मिक भावनाओं से ओत-प्रोत थी।

1857 ई0 के पूर्व आदिवासियों ने अनेक बार सरकारी भूमि-सम्बन्धी नीतियों जमीदारों के अत्याचारों तथा आर्थिक शोषण के विरूद्ध विद्रोह की थी। सरकार ने इन्हें सैनिक सहायता का सहारा लेकर दबा दिया था परन्तु आदिवासियों की दयनीय स्थिति सुधारने हेतु कोई सन्तोष जनक प्रयास नहीं किया। इसी कारण 19वीं सदी के मध्य प्रारम्भ हुए आदिवासियों के अनेक आन्दोलन 20वीं सदी में भी चलते रहे।

6.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढनें के बाद आप निम्नलिखित बातों को आसानी से समझ सकते हैं।

- 19वीं सदी में जनजातियों की स्थिति तथा उनके द्वारा आन्दोलन।
- 20वीं सदी में जनजातियों की स्थिति तथा जनजातीय विद्रोह।
- जनजातीय आन्दोलन के कारण।
- जनजातीय आन्दोलन के स्वरूप।
- प्रमुख जनजातीय विद्रोहों में भाग लेने वाली जातियाँ।
- बिरसा मुडां के नेतृत्व में जनजातीय विद्रोह।
- कई अन्य जनजातियों का भारत के विभिन्न क्षेत्रों मे विद्रोह।
- अंग्रेजों का जनजातियों के साथ बर्ताव।

6.3 जनजातीय आंदोलन के कारण

सभी जनजातीय विद्रोहों के पीछे मुख्य कारण आर्थिक शोषण था। बिट्रिश शासित क्षेत्र के विस्तार के साथ ही अंग्रेजी राज ने आदिवासी कबीले के सरदारों को जमीदार का दर्जा दिया तथा लगान की नई प्रणाली भी लागू किया। स्थाई बन्दोबस्त के अन्तर्गत आने वाले क्षेत्र में बंजर भूमी से लाभ उठाने का अधिकार जमीदारों को मिला हुआ था सीमान्त भूमि वाले लोगों के लिए इसके परिणाम काफी महत्वपूर्ण थे। नई भूमि व्यवस्था, व्यतिगत सम्पति को ब्रिटिस अवधारणा, सयुक्त सम्पत्ति को जनजातीय अवधारणा से पूर्णतः पृथक थी। इस व्यवस्था के कारण उनकी भूमि उनके हाथों से निकलती चली गयी और वे धीरे-धीरे किसान से कृषि मजदूर में तब्दील होते गए।

जंगलों से उनके गहरे रिश्तों को भी औपनिवेशिक शासन ने तोड़ डाला। इससे पहले वे भोजन तथा पशुओं का चारा जंगलो से जुटाते थे, जहां उनका जीवन पूरी तरह स्वच्छंद था। खेती के उनके अपने तरीके थे, जगह बदलकर 'झूम' अथवा 'पडु' विधियों से खेती करते थे। यानी जब उन्हे लगता था कि खेत अब उपजाउ नही रह गये है तो जंगल साफ करके खेती की नयी भूमि प्राप्त कर लेते थे। परन्तु 1867ई0 के पश्चात ब्रिटिश सरकार ने झूम खेती पर पाबन्दी लगा दी और इमारती लकडी एवं चराऐ पर रोक लगा कर वन सम्पति पर एकाधिकार करने के प्रयास किये। इससे जनजातीय विद्रोह की भावना को प्रश्रय मिला।

अंग्रेजी शासन के विस्तार के साथ शोषण के नए अभिकारण विकसित हो गए। नयी भूमि व्यवस्था ने उनके बीच महाजनों, व्यापारियों और लगान वसूलने वालों के एक ऐसे बिचौलिये समूह को स्थापित कर दिया, जिनका उदेश्य था जनजातीय लोगों का अधिकाधिक शोषण करना। इन शोषण अभिकरणो को पुलिस प्रशासन तथा न्याय प्रशासन की जटिल प्रणाली से संरक्षण मिलता था। अन्य छोटे मोटे अधिकारियों द्धारा किये जाने वाले अत्याचारों शोषण और जबरन उगाही ने जनजातीय लोगों का जीना दुर्लभ कर दिया। नवीन न्याय प्रणाली भी जनजातियों की संरक्षण नही बन पाई क्योंकि यह जटील एवं विलम्बकारी होने के साथ-साथ अक्सर प्रभावी पक्ष को ही संरक्षण देने वाली हो जाती थी। लगान वसूलने वाले लोगों और महाजनो जैसे सरकारी बिचौलिए एवं दलाल इन जनजातियों का शोषण तो करते ही थे, उनसे जबरन बेगारी भी कराते थे।

अनुबंधित मजदूरी की व्यवस्था से भी आदिवासियों में गहरा असन्तोष था। अनुबंधित व्यवस्था के तहत आदिवासियों को गंदे तथा अस्वास्थ्यकारी वातावरण में काम करने के लिए भेज दिया जाता था जहाँ से वे अनुबंध समाप्त होने के बाद ही वापस लौट सकते थे। कई बार तो ऐसे वातावरण में काम करने से उनकी जान चली जाती थी अथवा वे गम्भीर बीमारियों से ग्रसित

हो जाते थे। अनुबंधित मजदूरी की वजह से आदिवासियो को अपने समाजिक परिवेश से उखड़ जाने तथा अपनी संस्कृति खो देने का भय बराबर बना रहता था।

जनजातीय लोगो में असंतोष के पीछे एक अन्य कारण ईसाई मिशनरियों की भूमिका को भी माना जाता है, मुख्यतया बिहार तथा असम के सदर्भ में। ईसाई मिशनरियों ने जनजातीयों के क्षेत्रो में शिक्षा का प्रसार किया तथा सामाजिक सोपान में ऊँचा स्थान पाने की आशा भी उसमें जाग्रत की। उन्होने ने जनजातीय लोगों को शोषण के विरूद्ध सहायता करने का लालच भी दिया। परन्तु ईसाई मिशनरियों की उपस्थिति ने एक विशेष प्रकार के तनाव की स्थित उत्पन कर दी और अन्ततः एक प्रकार का सांस्कृतिक संघर्ष भी छिड़ गया।

6.4 जनजातीय आन्दोलन का स्वरूप

जनजातीय असन्तोष दो रूपों में व्यक्त हुआ। प्रथम अकस्मात विद्रोह तथा द्वितीय आन्तरिक धार्मिक सामाजिक-सांस्कृतिक सुधार के रूप में परन्तु दोनो ही स्थितियों में औपनिवेशिक शासन के खिलाफ तीव्र घृणा व्यक्त की गयी। जनजातीय विद्रोह की मुख्य बात यह रही कि उन्होने वर्ग के आधार पर नही बल्कि जाति के आधार पर और जनजाति पहचान जैसे - संथाल, कोल, मुंडा आदि के रूप में अपने आपको संगठित किया। उनकी इस रूप में एकजुटता का आलम यह था कि उन्होने कभी भी आदिवासियों पर हमला नहीं किया।

जनजातियों के असंतोष में कुछ हद तक जाति आधार के साथ आर्थिक आधार को भी जोडने की प्रवृत्ति दिखाई देती है क्योकि वे सभी बाहरी लोगों को दुश्मन नही मानते थे। बाहर से उनके ईलाकों में बसे ऐसे लोगों पर वे आमतौर पर हमला नही करते थे जो गरीब होते थे अर्थात आदिवासी गाव की अर्थव्यवस्था में जिनकी भूमिका सहायक थी या जिन लोगों ने आदिवासियों से गहरे सामाजिक रिस्ते बना लिये थे। इन लोगो में ग्वाले, लोहार, बढई, कुम्हार, जुलाहे, धोबी, नाई, बंधुआ, मजदूर तथा घरेलू नौकर शामिल थे। ये लोग न केवल आदिवासियों के हमलें से बचे बल्कि कई मौकों पर तो ये आदिवासियों के साथ मिलकर लड़े भी। यह कहना उचित होगा कि ऐसे मौको पर जाति ने नहीं बल्कि वर्ग ने उनको एक-दूसरे के साथ जोड़ा।

जनजातीय विद्रोह अपेक्षाकृत हिंसक तथा धार्मिक भावनाओं से ओत-प्रोत था। कई बार कई आदिवासी क्षेत्रों में एक ही समय में बाहरी लोगों के विरूद्ध हिंसक संघर्ष भड़का। बाहरी लोगों के पक्ष में प्रशासन के खडे हो जाने से औपनिवेशिक शासन के अधिकारीयों से भी इनका संघर्ष शुरू हो गया। इन संघर्षो को मौके पर कई बार इनके बीच ओझाओं जैसे चमत्कारिक नेता भी उभरे जिन्होने इन्हे आश्वस्त किया कि ईश्वर उनके कष्टों को दूर करेगा तथा बाहरी लोगों के शोषण से बचायेगा। वे लोग अक्सर ये भी दावा करते थे कि उनके पास जादूई ताकत है जिससे वे दुश्मन की गोलियों को भी बेअसर कर सकते है। इन आश्वासनों ने जनजातियों के लोगों में आशा और विश्वास की ऐसी लहर पैदा कर दी कि वें आखिरी सांस तक

अपने नेता के साथ मिलकर लड़ते रहे। इस प्रकार 19वीं सदी के जनजाति आन्दोलन स्वर्णयुग एवं महाप्रलय की अवधारणा से प्रेरित था अर्थात इनकी दृष्टि मसीहावादी थी, परन्तु 19वीं सदी के जनजातीय आन्दोलन औपनिवेशिक के चरित्र की समझ प्रदर्शित नही करते थे।

6.5 प्रमुख जनजातीय विद्रोह

अंग्रेजी भू-बन्दोबस्त व्यवस्था के विरूद्ध पहला व्यापक जनजातीय विद्रोह 1790 में प्रारम्भ हुआ जहॉ पलामू जनजाति के लोगों ने जमीदारों के शोषणकारी रवैये से पस्त होकर विरोध प्रारम्भ किया। राजा द्धारा की गई सैनिक कार्यवाही ने उसके विरोध को और हवा दी। अंग्रेजों ने समस्या के शीघ्र समाधान के लिए राजा को हराकर उसके स्थान पर दूसरे व्यक्ति को बैठा दिया किन्तु इससे समस्या का अन्त नही हुआ। इसी तरह 1817 में चेरो ने तथा 1819 में मुंडाओं ने इन जमीदारों के समर्थन में विद्रोह कर दिया जिनसे अंग्रेजों ने सारी शक्तिया छीन ली थी।

इसी क्षेत्र के दक्षिण भाग में आधुनिक उडीसा तथा पं0 बंगाल की सीमा पर पोरहर नामक स्थान पर 1820 ई0 में होस जनजातियों ने विद्रोह कर दिया किन्तु जमीदारो ने ब्रिटिश सेना की सहायता से 1821-22 में इस विद्रोह को दबा दिया परन्तु समझौता की शर्तो के अनुरूप होस जनजातियों को बहुत सी छूट देनी पडी। उदाहरण के लिए उन्होने कंपनी की प्रभुसत्ता स्वीकार करने के लिए, जमीदारों को कर देने के लिए, अपने गांवों में सभी जातियो के लोगों को बसने देने के लिए, और अपने बच्चों को हिन्दी अथवा उड़िया सिखाने के लिए राजी होना पडा। अब इन क्षेत्रों में ब्रिटिश प्रशासनिक व्यवस्था लागू हो सकती थी। इसके बाद से मैदानी लोगों को आदिवासियों की जमीन के पुश्तैनी अधिकार मिलने लगे। कालान्तर में इस प्रवृत्ति में वृद्धि ही हुयी।

6.5.1 कोल विद्रोह

1822 ई0 में छोटा नागपुर के कोल जनजातीय लोगों का विद्रोह प्रारम्भ हुआ। छोटा नागपुर क्षेत्र में मुंडा, उरांव, मोहाली आदि सभी जनजातियों को मैदानी लोग कोल कहते थे। इन्हे इस बात से गहरा असंतोष था कि 1822 में सरकार ने चावल से निर्मित कम नशीली शराब (हडिया) पर उत्पाद शुल्क लगा दिया था जो कि प्रति घर चार आने होता था तथा 1830 में इस उत्पाद शुल्क को लागू भी कर दिया गया। 1827 से इन क्षेत्रो में जबरन अफीम उगाया जाने लगा। अंग्रेजो ने इन्हें एक-दूसरे से लडवाकर कमजोर करने का भी प्रयत्न किया परन्तु आदिवासियों ने संगठित होकर काम किया तथा 1831 में विद्रोह कर दिया। इसे कोल विद्रोह के नाम से जाना जाता है इस विद्रोह का नेतृत्व सिंदराय मानकी तथा विंदराय मानकी ने किया।

11 दिसम्बर 1831 के दिन तमाड बडगांव के लोग लंका नामक गांव में एकत्रित हुए जहां विदेशी शासन, स्थानीय जमीदार तथा दिकुओं के खिलाफ आन्दोलन करने का निर्णय लिया गया। यद्यपि इस विद्रोह मे कम लोगों की मृत्यु हुई किन्तु चार हजार मकानों तथा अनेक कचहरियों को जला दिया गया। आदिवासी अनाज तथा पशुओं को लेकर जंगल में जा बसे तथा पॉच महिनो तक अपना संघर्ष जारी रखा। समस्या को सुलझाने के लिए सरकार ने इस क्षेत्र को दक्षिणी-पश्चिम सीमान्त ऐजेन्सी के नाम से एक अलग ईकाई बना दी इस क्षेत्र को नान रेग्यूलेशन जिला घोषित किया। गंगा नारायण सिंह के नेतृत्व में 1833-34 में प्रारम्भ हुआ, भूमिज विद्रोह इसी कोल विद्रोह का ही विस्तार था। इस विद्रोह के कारण एक बार पुनः ब्रिटिश शासन एवं स्थानीय, जमीदार बने। शासक वर्ग ने इस विद्रोह को कैप्टन थॉमस बिलकिन्सन के नेतृत्व में सेना भेजकर दबा दिया।

कोल तथ भूमिज विद्रोह की एक विशेषता यह रही कि इसके दमन के बाद ब्रिटिश शासन ने अनेक प्रशासनिक परिवर्तन किये जिसका मुख्य उदेश्य था पिछड़े क्षेत्रो में प्रशासन को सरल एवं लचीला रूप देना। इन दोनो विद्रोहों के पश्चात निम्नांकित परिवर्ततन किये गये सन 1833 के रेगूलेशन -13 के माध्यम से कम्पनी का अप्रत्यक्ष शासन समाप्त हो गया। रामगढ हिल ट्रेवर से छोटा नागपुर पठार को दक्षिण-पश्चिम सीमान्त एजेन्सी का अंग बनाया गया। इसे नान रेगुलेशन प्रोविन्स बनाय गया जिसे दीवानी, फौजदारी, न्यायिक, पुलिस निरीक्षण एंव भूमि कर हेतु विशेष नियमों के तहत रखा गया।

6.5.2 संथाल विद्रोह

19वीं सदी के महत्वपुर्ण जनजातीय विद्रोह में सबसे महत्वपूर्ण संथाल विद्रोह था। जो 1856-57 में प्रारम्भ हुआ। संथाल जनजाति विद्रोह भागलपुर तथा राजमहल के बीच निवास करती थी। 18वीं तथा 19वीं सदी के आरम्भ में संथालों ने राजमहल पहाड़ियो के जंगलो की स्वयं सफाई की थी परन्तु अब बाहरी मैदान के जमीदार तथा साहूकार उनकी जमीन छल-बल से हडप रहे थे। इसके अलावा उन्हें अपनी जमीन का राजस्व देना पड़ रहा था। जिसका भुगतान नही करने पर कठोर दंड दिया जा रहा था। इन क्षेत्रो में रेलवे लाइन का कार्य प्रारम्भ होने से भी वे आंतकित हुये थे क्योकि अधिकांश संथालों से जबरन बेगारी करायी जा रही थी और यदि मजदूरी दी भी जा रही थी तो वह बहुत कम थी।

1854 तक आते-आते इन आदिवासियों का विद्रोह अपने चरम पर पहुंच गया। कोल विद्रोह से प्रेरणा लेते हुए विभिन्न गॉवों में विद्रोह के संदेश भेजे गये। एक स्वर से निर्णय लिया गया कि बाहरी लोगों को भगाने, विदेशियों का राज हमेशा के लिए खत्म कर सतयुग का राज न्याय तथा धर्म पर अपना राज स्थापित करने के लिए खुला विद्रोह किया जाए। संथालो को विश्वास था कि भगवान उनके साथ है विद्रोही आदिवासियों के दो प्रमुख नेता सिद्धू तथा कान्हू ने

घोषण की कि ठाकुर जी ने उन्हे निर्देश दिया है कि यह देश अब साहबों का नही है इसलिए आजादी के लिए हथियार उठा लो। इन्होने भविष्यवाणी की कि ब्रिटिश शासन का अन्त निकट है बहुत जल्द ही सिधू तथा कान्हू ने करीब 60 हजार सन्थालों को इकटठा कर लिया, इसके अलावा कई हजार आदिवासियों को तैयार रहने के लिए कहा गया उनसे कहा गया कि जब नगाडा बजे तो हथियार उठा लेना।

इन्होने सर्वप्रथम निकटवर्ती शोषकों के विरूद्ध विद्रोह किया, परिणामतः दूरवर्ती शोषक भी इनकी चपेट में आ गये। साहूकारों को चेतावनी देकर कुछ दिन पश्चात आक्रमण किया तथा उनके मकानो एवं कचहरियों को दस्तावेजो सहित जला दिया। यद्यपि वे दस्तावेजो को पढ नही सकते थे परन्तु इतना अवश्य जानते थे कि ये दस्तावेज ही उनकी गुलामी का कारण है। संथालों ने मैदानी लोगों की खडी फसलो को जला दिया, रेल सम्बधि कार्यो को तहस नहस कर दिया तथा ब्रिटिश अधिकारियों एवं इंजिनियरों के बंगलों को नष्ट कर दिया। संथालो ने लगभग उन सभी चीजों पर हमला किया जो दीकू और उपनिवेशवादी सत्ता के शोषण के माध्यम थे।

परन्तु ब्रिटिश सरकार ने आदिरवासियों के इस संगठित ब्रिदोह को दबाने के लिए सेना का सहारा लिया तथा मेजर जनरल के नेतृत्व में 10 सैन्य टुकडियो के माध्यम से आदिवासियों का भयंकर दमन किया। 1855 में उनकी भूमि को नान रेग्यूलेशन जिला घोषित कर दिया गया। अगस्त 1855 में सिद्धू तथा फरवरी 1856 में कान्हू को फॅासी दी गई। किन्तु संथालो का संघर्ष पूर्णतःव्यर्थ नही गया क्योकि अंततोगत्वा सरकार संथाल नामक एक पृथक जिला स्थापित करने के लिए विवश हुई।

6.5.3 खेरवा विद्रोह

1870 के दशक में छोटा नागपुर क्षेत्र में राजस्व बन्दोबस्त के विरूद्ध आदिवासियों ने सफाहार अथवा खेरवार आंदोलन चलाया। यह आंदोलन प्रारम्भ में एकेश्वरवाद तथा समाजिक सुधारो की शिक्षा देता था। खेरवार आन्दोलनन 1855 ई0 के संथाल विद्रोह से अभिप्रेरित था क्योकि आन्दोलन का नायक भागीरथ मांझी संथाल विद्रोह में सक्रिय रह चुका था। यह विद्रोह विदेशी सत्ता के लिए चुनौती था। इन्होने जमीदारों तथा सरकार को लगान नही देने की घोषणा की। भगीरथ की मृत्यु के पश्चात यह आन्दोलन शिथिल पड गया। पुनः खेरवारों द्धारा 1881 की जनगणना के पश्चात दुविधा गोसाई के नेतृत्व में व्यापक आन्दोलन प्रारम्भ किया जिसका प्रभाव पूरे संथाल परगना में था।

1891 ई0 में मणिपुर में ब्रिट्रिश सत्ता स्थापित हुई। इसी के साथ अंग्रेजो एवं जनजातियों के मत सम्बन्धों की समस्या प्रारम्भ हो गई। आगे अंग्रेजों ने जनजातियों पर दबाव डाला कि वे अपना भूमिकर मणिकर के शासक के बदले उनको दे। यहां के जनजातीय लोगों में असन्तोष

फैल गया, आगे चलकर इसी आन्दोलन को जैदोनांग जैसा जनजाति नेता प्राप्त हुआ। फिर आगे धर्म राज्य स्थापित करने के प्रयत्न में गुजरात की नायकड़ा जंगली जाति ने पुलिस थाने पर आक्रमण कर दिया।

19वीं सदी के जनजातीय विद्रोह में 1899-1900 ई0 का मुंडा विद्रोह भी प्रमुख था। इसका नेतृत्व बिरसा मुंडा द्धारा किया गया था। जागीरदारों के द्धारा खूटंकटटी अधिकारों का उलंघन अनुबंधित मजदूरो की समस्या एवं बेठ-बेगारी आदि कुछ इस प्रकार के कारण थे जिन्होने मुंडा विद्रोह को जन्म दिया। प्रथमतः जनजातीय सरदारों ने इस शोषण की प्रक्रिया के विरूद्ध आपत्ति जताई। मुंडा विद्रोह के सम्बंध में एक विशिष्ट बात है कि विद्रोह से पहले मुंडाओं ने कष्टो के निवारण के लिए वैधानिक उपायो का सहारा लिया। इस सन्दर्भ में उन्होंने इसाई मिशनरियों से भी सहायता पाने की कोशिश की और जब उनकी उम्मीदे टूट गई तभी उन्होने विद्रोह किया।

6.5.4 बिरसा मुंडा एक नायक के रूप में

जनजातीय विद्रोह की प्रक्रिया में ही इस आन्दोलन में एक राजनीतिक और सामाजिक उदेश्य से मसीहावादी दृष्टिकोण को जोड दिया गया। बिरसा मुंडा द्धारा प्रारम्भ किया गया आन्दोलन एक प्रकार का सामाजिक धार्मिक एवं राजनीतिक आन्दोलन था। बिरसा ने सोम मुंडा को धार्मिक एवं सामाजिक आन्दोलन की जिम्मेदारी दी थी। बिरसा ने शोषण मुक्त समाज की स्थापना, मुण्डा समाज के अनुरूप एक नए धर्म की घोषणा, हिन्दु धर्म के आदर्श एवं कर्मकाण्ड शुद्धता तथा तपस्या का प्रचार, एकेश्वरवाद में विश्वास, भूत-प्रेत की पूजा पर रोक एवं समाज के प्रत्येक व्यक्ति में आत्म -सम्मान तथा आत्म-विश्वास भरने आदि पर बल दिया।

बिरसा ने अपने राजनीतिक आन्दोलन का सेनापति दोन्का मुण्डा को बनाया। इस आन्दोलन में बिरसा ने सरकारी नियमों की अवहेलना, सरकारी कर्मचारियों की अवज्ञा, सशस्त्र विद्रोह की योजना, मालगुजारी पर रोक, जमीन पर रैयतों का कब्जा, महारानी को सत्ता की चुनौती तथा मुंडा राज्य की स्थापना जैसे कार्यक्रम रखे। बिरसा का मसीहावादी दृष्टिकोण जनजातीय विद्रोह में एक महत्वपूर्ण तत्व हो गया। नया विश्व महाप्रलय की उसकी भविष्यवाणी, जनजातीय लोगों के लिए स्वर्णद्धीप हो गया।

बिरसा मुंडा के नेतृत्व में यह व्रिदोह संगठित रूप से 1898-99 में प्रारम्भ हो गया और बिरसा ने ठेकेदारों की हत्या, जागीरदारों, राजा एवं हाकिमो की हत्या का आह्वान किया। बिरसा को ईश्वरीय गुणो से समाहित माना गया। उसी के नेतृत्व में आदिवासीयों का धर्मोतरण ईसाई से वेष्णों ने होने लगा। हॉलाकि यह विद्रोह दबा दिया गया किन्तु बिरसा के महान नेतृत्व के कारण यह ऐतिहासिक बन गया। इस विद्रोह की सफलता इस बात में थी कि इसी के परिणामस्वरूप 1908 में छोटा नागपुर रैयतवाडी कानून पारित किया गया। जिसके आधार पर मुंडा जनजातीय

बिहार के अन्य कृषकों से एक पीढी पूर्व ही अपने परम्परागत भूमि अधिकारों को पा गई। बिरसा मुंडा ने साम्राज्यवादी विरोध की वह परम्परा कायम की, जो आने वाली पीढी के लिए प्रेरणा स्त्रोत बन गई।

6.6 20वीं सदी का जनजातीय विद्रोह

20वीं सदी में भी जनजातीय विरोध का पहले जैसा ही झुकाव तथा असन्तोष जैसे कारक मौजूद थे। परन्तु 20वीं सदी के जनजातीय आन्दोलन के स्वरूप में स्पष्ट अन्तर महसूस किया जा सकता है। 19वीं सदी के जनजातीय आन्दोलन स्वर्णयुग एवं महाप्रलय की अवधारणा से प्रेरित थे अर्थात् इनकी दृष्टि मसीहावादी थी जैसे - छोटा नागपुर के मुण्ड़ाओं ने अपने नेता बिरसा को भगवान मान लिया। इसके साथ 19वीं सदी के जनजातीय आन्दोलन औपनिवेशिक शोषण के वास्तविक चरित्र की समझ को प्रदर्शित नहीं करते थे। परन्तु 20वीं सदी के जनजातीय आन्दोलन मूल परिवर्तनवाद की दिशा में उन्मुख थे तथा यह आन्दोलन व्यापक राष्ट्रवादी चेतना से भी जुड़ा था। कहीं-कहीं तो सत्याग्रह एवं असहयोग की अनुशासित राजनीति का भी सहारा लिया गया। 1898 ई0 में आन्ध्र प्रदेश के कुड़प्पा तथा नेल्लोर जिले में चेंचू जनजाति ने विद्रोह किया, किन्तु, इन्होंने हिंसक तरीकों का प्रयोग न करके अपने अधिकारों को सुरक्षित करने के लिए गांधीवादी सत्याग्रह तरीकों का प्रयोग किया। यह इस बात का परिचायक है कि वे अपनी क्षमता एवं बिट्रिश शक्ति की प्रचंडता से परिचित थे।

उड़ीसा में खोंद जनजाति एवं छोटा नागपुर में उरांव जनजाति के विद्रोह में एक नयी बात देखी गयी, इसमें विद्रोहियो को बाह्य जगत की पूरी जानकारी थी। वे प्रथम विश्व युद्ध तथा उसमें बिट्रिश शक्ति की सम्भावित पराजय से परिचित थे। आगे चलकर इसी उरांव जनजाति के मध्य जतरा भगत के नेतृत्य में ताना भगत आन्दोलन शुरू हुआ। इस आन्दोलन का गांधीवादी राष्ट्रवाद से गहरा सम्बन्ध था। प्रारम्भ में जतरा भगत द्वारा अंग्रेजों तथा जमींदारों के शोषण के विरूद्ध तथा धार्मिक सुधार हेतु ये आन्दोलन चलाया गया जो बाद में राष्ट्रवादी आन्दोलन का एक हिस्सा बन गया। इस आन्दोलन में जनजाति महिलाओं को जागृति का भी पता चलता है क्योंकि 1916 में जतरा भगत के निधन के पश्चात इस आन्दोलन को उसकी पत्नी खेमनी ने न सिर्फ जारी रखा बल्कि इसे विस्तार तथा मजबूती भी प्रदान की।

6.6.1 ताना भगत विद्रोह

ताना भगत आन्दोलन गांधी जी के स्वदेशी आन्दोलन से प्रभावित हुआ क्योंकि आन्दोलनकारी भी गांधी जी की तरह सादगी, सत्य एवं अहिंसा में विश्वास रखते थे। गांधी जी द्वारा छेड़े गए असहयोग आन्दोलन में इन्होंने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। गांधी जी के आह्वान पर उन्होंने खादी वस्त्र पहनने एवं मदिरा त्याग का संकल्प लिया। यहां तक कि 1921 के अहमदाबाद कांग्रेस

सम्मेलन में ताना भगतों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। ताना भगत के जनजातीय आन्दोलन ने इतने ऊँचे राष्ट्रीयता को प्राप्त किया कि ये स्वतंत्रता के इतने वर्षों के पश्चात् भी राष्ट्रीय तिरंगे झण्डे की प्रत्येक सप्ताह सामूहिक पूजा करते हैं।

6.6.2 कूकी विद्रोह

मयूरभंग जिले के संथाल विद्रोह और मणिपुर में थाड़ों कूकी जनजातीय विद्रोह भी कुछ बातों में आधुनिक था। ये जनजाति पश्चिमी मोर्चे पर निम्न कार्य के लिए जनजातीय श्रमिकों को भेजे जाने की घटना से असन्तुष्ट थी। 1913 में राजस्थान में बांसवाड़ा, सूंथ एवं डुगंरपुर में भीलों का विद्रोह हुआ। हालांकि इस विद्रोह में कोई नई बात नहीं देखी गयी क्योंकि इस विद्रोह में धार्मिक आन्दोलन को भूमी एवं कृषि की समस्या के साथ जोड़ दिया गया। इस विद्रोह का नेता गोविन्द गुरू थे।

20वीं सदी में आदिवासियों के निरन्तर जुझारू संघर्ष का सबसे ज्वलन्त उदाहरण गोदावरी के उत्तरी क्षेत्र रपां में मिलता है यहाँ अगस्त 1922 से मई 1924 के बीच अल्लूरी सीता राम राजू के नेतृत्व में गुरिल्ला युद्ध होता रहा। यह अन्दोलन विभिन्न तत्वों के संयो से विकसित हुआ था। इसने जनजातीय विद्रोह की एक नयी तस्वीर प्रस्तुत की। इसमें प्रारम्भिक विद्रोह पद्वति के साथ आधुनिक राजनीति की पद्धति को जोड़ दिया गया। यह आन्दोलन असहयोग आन्दोलन की असफलता के पश्चात् शुरू हुआ, इसलिए जहां एक तरफ इस आन्दोलन को असहोग आन्दोलन के प्रतिरोध की शक्ति से प्रेरणा मिल रही थी, वही असहयोग आन्दोलन की असफलता से निराशा भी हो रही थी। इस आन्दोलन की दूसरी विशिष्टता यह थी कि इसमें नेतृत्व बाह्य क्षेत्रों से प्राप्त हुआ था। इसकी तीसरी विशेषता थी कि इसमें सीमाराम राजू ने असहयोग आन्दोलन के संरचनात्मक पक्ष को हिंसा की पद्वति से जोड़ दिया। अल्लूरी सीता राम राजू ने दाव किया कि उन पर गोलियाँ बेअसर होंगी, इसके साथ ही उसने कल्कि अवतार के अनिवार्य आगमन की घोषणा की। राजू ने गांधी जी की प्रशंसा की पर उसने हिंसा को भी अनिवार्य बताया। उसके नेतृत्व में आदिवासियों ने अंग्रेजों और भारतीयों के बीच अन्तर स्पष्ट करने की उल्लेखनीय प्रवृत्ति दिखाई दी।

1920 के दशक में उत्तर-पूर्व के मणिपुर जेदोनांग के नेतृत्व में एक आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। 1891 में मणिपुर में ब्रिटिश सत्ता स्थापित हुई, इसी के साथ अंग्रेजों एवं जनजातियों के मध्य सम्बन्धों की समस्या शुरू हो गई। आगे अंग्रेजों ने जनजातियों पर दबाव डाला कि वे भूमिकर मणिपुर के शासक के बदले उनको समर्पित करें। जेदोनांग ने इसके विरूद्ध आवाज उठायी, वह मेसोपोटामिया में सैनिक रूप में कार्य कर चुके थे। 1925 ई0 में उसने युवकों का एक संगठन बनाया, साथ ही उसने आतंकवादी गतिविधियों के द्वारा ब्रिटिश को खदेड़ने की योजना बनायी, परन्तु 1930 में उसे गिरफ्तार कर फांसी दे दी गयी। आगे उसकी भतीजी रानी गैडेन्ल्यू ने

इस जनजाति आन्दोलन को आगे बढ़ाया लेकिन उसने आन्दोलन की गांधीवादी पद्वति को अपनाया। इसे भी 1932 में गिरफ्तार कर लिया गया, जहां से वह भारत को स्वतन्त्रता मिलने के पश्चात् ही आजाद हो पायी।

स्वमूल्यांकित प्रश्न

नोट - **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर उसके सामने बने सत्य तथा असत्य के रूप में दें।**

(1) जनजातीय आन्दोलन का क्षेत्र केवल बंगाल था। (सत्य/असत्य)

(2) सभी जनजातीय विद्रोहों के पीछे मुख्य कारण आर्थिक शोषण था। (सत्य/असत्य)

(3) 1867 ई0 के पश्चात् ब्रिटिश सरकार ने झूम खेती पर पाबन्दी लगा दी। (सत्य/असत्य)

(4) जनजातीय लोगों में असन्तोष के पीछे आर्थिक शोषण के अतिरिक्त एक अन्य कारण इसाई मिशनरियों की भूमिका मुख्यतया बिहार तथा असम के सन्दर्भ में मानते है। (सत्य/असत्य)

(5) ब्रिटिश भू-बन्दोबस्त व्यवस्था के विरूद्ध पहला व्यापक जनजातीय विद्रोह 1890 में प्रारम्भ हुआ। (सत्य/असत्य)

(6) 19वीं सदी के महत्वपूर्ण जनजातीय विद्रोहों में संथाल विद्रोह था जो भागलपुर तथा राजमहल के बीच निवास करता था। (सत्य/असत्य)

(7) 19वीं सदी के मुण्डा जनजाति विद्रोह को प्रमुख नायक बिरसा मुण्डा थे। (सत्य/असत्य)

(8) छोटा नागपुर के मुंडाओं ने अपने नेता बिरसा मुडां को भगवान स्वरूप मान लिए थे। (सत्य/असत्य)

(9) 20वीं सदी में कोई जनजातीय आन्दोलन नही हुआ। (सत्य/असत्य)

(10) ताना भगत आन्दोलन गाँधी जी के स्वदेशी आन्दोलन से प्रभावित था। (सत्य/असत्य)

6.7 सारांश

इस अध्ययन से यह पता चलता है कि 19वीं सदी में प्रारम्भ हुए जनजाति आन्दोलन धीरे-धीरे 20वीं सदी में भी पदार्पण कर गया और इसका प्रभाव प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष भारत के स्वतंत्र होने तक रहा। यह आन्दोलन भारत के विभिन्न क्षेत्रों में हुआ जो अधिकांशता भूमिकर से उत्पन्न हुआ या मिशनरियों आदि के प्रभाव से भी उग्रता धारण किया इस आन्दोलन की दो मुख्य बातें भी देखने में आई। एक तरफ जहाँ महिलाओं ने भाग लिया दूसरी तरफ वहीं कुछ जनजाति विद्रोह, गॉधी जी के विचारों से भी प्रभावित रहे। इस आन्दोलन का परिणाम मिला-जुला देखने को मिलता है। कहीं जनजातियों को सफलता हाथ लगी तो कहीं असफल रहें। इस प्रकार 19वीं तथा 20वीं सदी में चला जनजतीय आन्दोलन, वर्तमान में इतिहास का एक प्रमुख हिस्सा बन गया।

6.8 पारिभाषिक शब्दावली

आदिवासियों – मूल निवासी

लगान - भू-राजस्व

बेगारी – बिना मजदूरी के श्रम

कचहरियों – न्यायालयों

एकेश्वरवाद - एक ईश्वर पर विश्वास का दर्शन

6.9 स्वमूल्यांकित प्रश्नों के उत्तर

(1) असत्य

(2) सत्य

(3) सत्य

(4) सत्य

(5) असत्य

(6) सत्य

(7) सत्य

(8) सत्य

(9) असत्य

(10) सत्य

6.10 संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. चन्द्रा, बिपन, इण्डियास स्ट्रेगिल फोर इन्डेपेन्डेन्स, पेंगुइन बुक, दिल्ली, 1993 (अंगेजी व हिन्दी दोनों में है)
2. चन्द्रा, बिपन, इण्डिया आफटर इन्डेपेन्डेन्स, पेंगुइन बुक, दिल्ली, 1993
3. सरकार, सुमित, मॉडर्न इण्डिया 1885-1947, मेकमिलन इण्डिया लिमिटेड, मद्रास, 1983 (अंगेजी व हिन्दी दोनों में है)
4. इग्नू कोर्स - मोडर्न इण्डियन हिस्ट्री, 1999 (अंगेजी व हिन्दी दोनों में है)

6.11 सहायक उपयोगी पाठ्य सामग्री

1. बन्द्योपाध्याय, सेखर, फ्राम प्लासी टू पार्टिशन: ए हिस्ट्री ऑफ माडर्न इण्डिया, ओरिएण्ट ब्लैक स्वान, दिल्ली-2004
2. गॉधी, एम0के0, हिन्द स्वाराज/इण्डियन होमरूल, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, 1996

6.12 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न .1. प्रमुख जनजातीय आन्दोलन के मुख्य कारणों को उदाहरण व्याख्या करें।

प्रश्न .2. 19वीं सदी के प्रमुख जनजातियों के क्षेत्रों तथा उनके विद्रोहों की व्याख्या कीजिए।

प्रश्न .3. जनजातीय आन्दोलन के विकास पर एक निबन्ध लिखें।

इकाई सात

प्रेस एवं समाचार पत्र

7.1 izLrkouk

7.2 bdkbZ ds mn~ns";

7-3 iwoZ xka/kh;qxhu i=dkfjrk esa vkfFkZd ,oa jktuhfrd psruk dk fodkl

7-3-1 oukZD;qyj izsl ,DV ls iwoZ dh i=dkfjrk esa jktuhfrd psruk

7-3-2 1878 ds ckn Hkkjrh; i=dkfjrk esa jktuhfrd psruk dk fodkl

7-3-3 caxky dk foHkktu vkSj Hkkjrh; i=dkfjrk

7-3-4 1910 dk neudkjh izsl ,DV

7-4 xka/kh;qxhu i=dkfjrk esa jktuhfrd psruk dk fodkl

7-4-1 Hkkjrh; i=dkfjrk esa f[kykQ+r ,oa vlg;ksx vkUnksyu dk izfrfcEcu

7-4-2 iw.kZ LojkT; dh ?kks'k.kk ls f}rh; fo"o;q) ls iwoZ rd Hkkjrh; i=dkfjrk

dk fodkl

7.4.3 f}rh; fo"o;q) ls LorU=rk izkflr rd Hkkjrh; i=dkfjrk dh fodkl

;k=k

7.5 Lkkj la{ksi

7-6ikfjHkkf'kd "kCnkoyh

7-7 lUnHkZ xzaFk

7-8 Lo ewY;kafdr iz”uksa ds mRrj

7-9vH;kl iz”u

7-1 izLrkouk

fiNyh bdkb;ksa esa i=dkfjrk dh egRrk ij i;kZIr izdk”k Mkyk x;k gSA bl ckr dh ppkZ dh tk pqdh gS fd Hkkjrh; iqutkZxj.k] uotkxj.k rFkk jktuhfrd psruk ds vxz.kh usrkvksa us vius fopkjksa ds izpkj&izlkj ds fy, i=dkfjrk dk Hkjiwj mi;ksx fd;k FkkA vk/kqfud izsl ds fodkl ds lkFk i= tu&lk/kkj.k rd viuh ckr igaqpkus ds lcls lgt vkSj lqyHk lk/ku cu x, FksA Hkkjrh; jktuhfrd psruk vkSj i=dkfjrk dk vUr% lEcU/k jktk jkeeksgu jk; ds ;qx ls gh LFkkfir gks x;k FkkA bl bdkbZ esa 1857 ds fonzksg esa mnwZ v[kckjksa dh Hkwfedk] jk’Vªh; vkUnksyu ds izFke pj.k esa vkfFkZd jk’Vªokn ds fodkl esa i=ksa ds ;ksxnku] ØkfUr dk lUns”k turk rd igaqpkus esa i=ksa dh egRrk dk ewY;kakdu fd;k tk,xkA bl bdkbZ esa xka/kh;qxhu i=dkfjrk dk xka/khth ds vkUnksyuksa ds v/;;u lzksr ds :i esa mi;ksx Hkh fd;k tk,xk vkSj ljdkj }kjk izsl ij izfrcU/k yxk, tkus ds ifjizs{; esa jk’Vªh; vkUnksyu ds nkSjku izeq[k i=dkjksa ds dk;ksaZ dk vkdyu Hkh fd;k tk,xkA

7-2bdkbZ ds mn~ns”;

bl bdkbZ esa vkidks jk’Vªh; vkUnksyu ds fofHkUu pj.kksa esa Hkkjrh; izsl ds ;ksxnku dh tkudkjh nh tk,xhA bl bdkbZ esa Hkkjr

dh fofHkUu Hkk'kkvksa ds izeq[k jk'Vªoknh i=ksa ls vkidks ifjfpr djk;k tk,xkA bl bdkbZ dks i<+dj vki tkusaxs%

- iwoZ xka/kh;qxhu i=dkfjrk esa jktuhfrd ,oa vkfFkZd psruk ds fodkl ds fo'k; esasA
- LojkT;] iw.kZ LojkT; rFkk LorU=rk ds y{; dh izkfIr gsrq vkUnksyuksa esa xka/kh;qxhu i=dkfjrk ds ;ksxnku ds fo'k; esasA
- Hkkjr dh LorU=rk ls iwoZ dh i=dkfjrk esa ØkfUrdkjh] lektoknh rFkk lkE;oknh fopkj/kkjk ds fodkl ds fo'k; esaA
- Hkkjrh; jk'Vªh; vkUnksyu ds v/;;u lzksr ds :i esa i=dkfjrk dh egRrk ds fo'k; esasA

7-3 iwoZ xka/kh;qxhu i=dkfjrk esa vkfFkZd ,oa jktuhfrd psruk dk fodkl

7-3-1 oukZD;qyj izsl ,DV ls iwoZ dh i=dkfjrk esa jktuhfrd psruk

1857 ds fonzksg ls ysdj Hkkjr dh LorU=rk izkfIr rd jk'Vªh; vkUnksyu ds gj pj.k esa Hkkjrh; i=dkfjrk us jktuhfrd psruk ds fodkl esa mYys[kuh; ;ksxnku fn;k FkkA vk/kqfud Hkkjrh; i=dkfjrk ds tud jktk jkeeksgu jk; dh *lEckn dkSeqnh* rFkk v{k; dqekj nRr dh *rRo cksf/kuh if=dk*] yksdfgroknh ds i= *fgroknh* esa ljdkj dh vkfFkZd uhfr;ksa dh vkykspuk dh xbZ FkhA }kfjdkukFk VSxksj ds i= *cSaxky gjdkjk* ds 1843 ds vadksa esa Hkkjr esa Hkh turk dh leL;kvksa dk fujkdj.k djus ds fy, 1830 dh Ý+kal dh tqykbZ ØkfUr dk vuqdj.k djus dh ckr dgh xbZ FkhA

1857 ds fonzksg esa fnYyh ds *lkfndqy v[+kckj* vkSj ekSykuk eksgEen ckdj ds*nsgyh mnwZ v[+kckj*] dydRrs ls izdkf"kr *nwjchu* rFkk *lqYrkuqy v[+kckj* us fczfV"k "kklu ds fo#) tu&psruk tkxzr djus esa egRoiw.kZ Hkwfedk fuHkkbZA *nwjchu* rFkk *lqYrku&my&v[kckj* dks cgknqj "kkg dk Q+jeku

jktk jkeeksgu jk;

¼ftlesa mlus vaxzst+ksa dks [knsM+us dh ckr dgh Fkh½

Nkius ij eqdnek pykdj nf.Mr fd;k x;kA cjsyh ls izdkf”kr *vEnrqy v[kckj* us fonzksg ds nkSjku viuk uke cny dj Q+rsgqy v[kckj j[k fn;k Fkk vkSj [kku cgknqj dk leFkZu fd;k FkkA bl i= dks Hkh nf.Mr fd;k x;kA ckn”kkg cgknqj “kkg ds ikS= csnkj c[r ds lapkyu esa izdkf”kr *i;kesa vkt+knh* dks fonzksg dk fljekSj i= dgk tk ldrk gS A bl i= esa vt+heqYyk [kka dk dkSeh rjkuk izdkf”kr gqvk Fkk &

ge gSa blds ekfyd] fgUnqLrku gekjk]

ikd oru gS d+kSe dk] tUur ls Hkh I;kjkA

;s gS gekjh fefYd;r] fgUnqLrku gekjk]

bldh :gkuh ls] jkS'ku gS tx lkjkA

fdruk d+nhe fdruk ubZe] lc nqfu;k ls U;kjk]

djrh gS t+j[kst+ ftls] xax&teu dh /kkjkA

vkt 'kghnksa us gS rqedks] vgys&oru yydkjk]

rksM+ks xqykeh dh t+Uthjsa] cjlkvks vaxkjk A

fgUnq&eqlYeka] flD[k gekjk] HkkbZ I;kjk&I;kjk]

;g gS vkt+knh dk >.Mk] bls lyke gekjk AA

bl i= ls lEc) gj O;fDr dks lt+k&,&ekSr feyh vkSj ftl ?kj esa Hkh bl i= dh izfr feyh ml ?kj ds lHkh o;Ld iq#’kksa dks Qkalh ns nh xbZA 13 twu] 1857 dks ykWMZ dsfuax dk neudkjh ,DV ikfjr gqvk ftlds vUrxZr ns”kh Hkk’kkvksa ds lekpkj i=ksa rFkk if=dkvksa ij vusd izfrcU/k yxk, x,A

fonzksg ds ,d n”kd ckn ls Hkkjrh; Hkk’kkvksa ds i=ksa ij yxk, x, izfrcU/kksa dks f”kfFky fd, tkus ds ckn vaxzst+h] caxyk] ejkBh] fgUnh] mnwZ] rfey vkfn lHkh Hkk’kkvksa esa izdkf”kr i=ksa esa ljdkj dh vkfFkZd uhfr;ksa dh dVq vkykspuk dh tkus yxh

rFkk ns”kokfl;ksa dks viuh vkfFkZd nqnZ”kk ds fuokj.k ds fy, vkRefuHkZj gksus dk lUns”k fn;k x;kA LorU=rk ls iwoZ Hkkjrh; i=dkjksa esa ls vusd Lo;a jk’Vªh; vkUnksyu ds vxz.kh usrk Fks blfy, gedks LorU=rk ls iwoZ dh Hkkjrh; i=dkfjrk esa jk’Vªh; vkUnksyu ds gj pj.k dk foLr`r] thoUr ,oa HkkjrsUnq gfj”pUnz

izkekf.kd fp=.k miyC/k gksrk gSA fxjh”k pUnz ?kks’k dk i= *fgUnw iSfVª,V*] lEiknd gjh”kpUnz eqdthZ] 1861 esa nhu cU/kq fe= dk ukVd *uhy niZ.k* izdkf”kr fd;kA ckn esa bl i= ij bZ”oj pUnz fo|klkxj dk fu;U=.k gks x;kA bl i= us ljdkj dh T+;knfr;ksa dh dVq vkykspuk dh vkSj Hkkjrh;ksa dks mPp ljdkjh inksa ij fu;qDr fd, tkus dh ekax dhA bZ”oj pUnz fo|klkxj dk ,d vU; i= *lkseizdk”k* Hkh ,d jk’Vªoknh i= FkkA

bl i= us fdlkuks dks muds vf/kdkj fnykus ds fy, vfHk;ku NsM+k FkkA eksrh yky ?kks’k ds i= *ve`r ckt+kj if=dk* dk izdk”ku igys tslksj ls izkjEHk gqvkA ljdkj dh uhfr;ksa dh dVq vkykspuk djus ds dkj.k blds ekfydksa ij eqdnek pykA 1871 ls bldk izdk”ku dydRrs ls fd;k tkus yxkA 1867 esa HkkjrsUnq gfj”pUnz ds i= *dfo opu lq/kk* dk izdk”ku izkjEHk gqvkA HkkjrsUnq gfj'pUnz ru&eu&/ku ls Lons'kh viukus dh vko';drk ij t+ksj nsrs Fks D;ksafd tc rd ns'koklh n`<+&fu'p; dj Lons'kh ozr /kkj.k ugha djrs rc rd Hkkjrh; m|ksx ds iqu#RFkku dh dksbZ lEHkkouk ugha FkhA *dfo opu lq/kk* ds uoEcj] 1872 ds vad esaa HkkjrsUnq us bl ckr ij t+ksj fn;k fd Hkkjrh; okf.kT; dk iqujks)kj djus ds fy, Hkkjrokfl;ksa dks O;kid Lrj ij rduhdh f”k{kk xzg.k djus dh vko”;drk FkhA 23 ekpZ] 1874 dh *dfoopu lq/kk* esa HkkjrsUnq gfj'pUnz dh v/;{krk esa Lons'kh oL=ksa ds iz;ksx ds lEcU/k esa cukjl okfl;ksa }kjk vaxhdkj fd;k x;k ,d izfrKk&i= izdkf'kr gqvk Fkk&

geyksx lokZar;kZeh lc LFky esa orZeku vkSj fuR; lR;&ijes'oj dks lk{kh nsdj ;g fu;e ekurs gSa vkSj fy[krs gSa fd ge yksx vkt ds fnu ls dksbZ foyk;rh diM+k u ifgusaxs vkSj tks diM+k ifgys eksy ys pqds gSa vkSj vkt dh ferh rd gekjs ikl gS mudks rks muds th.kZ gks tkus rd dke esa ykosaxs ij uohu eksy ysdj fdlh

Hkk¡fr dk Hkh foyk;rh diM+k u ifgjsaxs] fganqLrku dk gh cuk diM+k ifgjsaxsA

vius ,d vU; i= *Jh gfj'panz pafnzdk* ds twu] 1874 ds vad es HkkjrsUnq us vius ys[k *Hkjr [k.M dh Le`fr* esa Hkkjrh;ksa dks ;g lykg nh Fkh fd og fodflr ns”kksa ls rduhdh Kku izkIr dj vius ns”k esa ubZ rduhdksa dk iz;ksx dj ns”k ds mRiknu dks c<+k,a &

Hkjr[k.M fuoklh bl le; v[k.M funzk esa fueXu gks jgs gSaA ns[kks ihVj fn xzsV] egkjktk :l us nwljh foyk;rksa esa dyksa dk dke lh[kdj vius ns'k esa izpfyr fd;kA gky esa bZjku ds ckn'kkg Hkh blh vk'k; ls baXyS.M x, FksA ijarq vk'p;Z gS fd gekjs cka/ko bl fo"k; esa dqN mik; ugha djrsA bafXy'rku dh o`f) dk eq[; dkj.k ;s gh gS fd ogka ds fuoklh nwljs dh fudkyh gqbZ ckr ds fl) djus esa cgqr ifjJe djrs gSaA

1873 eas ,d caxyk =Sekfld *eqdthZt+ eSXt+hu* esa HkksykukFk pUnz us Hkkjr esa fcfV”k vkfFkZd uhfr ij dBksj izgkj fd,A ,e0 th0 jkukMs ds ejkBh i= *Kku izdk”k* rFkk *bUnq izdk”k* nksuksa gh i=ksa esa jktuhfrd ,oa vkfFkZd psruk dk izpkj&izlkj fd;k tkrk FkkA

1- oukZD;qyj izsl ,DV ls iwoZ dh i=dkfjrk esa jktuhfrd psruk fVIi.kh dhft,&

7-3-2 1878 ds ckn Hkkjrh; i=dkfjrk esa jktuhfrd psruk dk fodkl

Hkkjrh; Hkk’kkvksa ds lekpkj i=ksa esa ljdkj dh “kks’kd ,oa neudkjh uhfr;ksa dh dVq vkykspuk ij izfrcU/k yxkus ds fy, xouZj tujy ykWMZ fyVu us 1878 esa oukZD;qyj izsl ,DV ykxw fd;kA bZ”oj pUnz fo|klkxj ds i= *lkseizdk”k* ij oukZD;qyj izsl ,DV ds vUrxZr izfrcU/k yxk;k x;k FkkA *ve`r ckt+kj* us oukZD;qyj izsl ,DV ds izdksi ls cpus ds fy, viuk izdk”ku caxyk Hkk’kk ds LFkku ij vaxzst+h esa izkjEHk dj fn;kA ykWMZ fjiu ds mnkjoknh “kkludky esa neudkjh oukZD;qyj izsl ,DV dks jn~n dj fn;k x;kA

lS;n vgen ds ,aXyks eksgEeMu vksfj,UVy dkWyst dks ljdkjh

vuqnku o muds i= *vyhx<+ bUlVhV~;wV xt+V* dks ljdkjh foKkiu fn, x,A vaxzst+ksa us mUgsa eqlyekuksa ds lcls cM+s izfrfuf/k ds :i esa Lohdkj fd;k tc fd eqfLye lekt esa mudh yksdfiz;rk de vkSj fojks/k T;knk FkkA yksdekU; fryd us iwuk ls vius ejkBh Hkk'kk ds i= *dsljh* dk izdk"ku 1 tuojh] 1881 ls izkjEHk fd;kA bZekunkj Lons"kh dh O;k[;k djrs gq, yksdekU; us bl i= esa fy[kk Fkk &

okLro esa Lons"kh ,d foLr`r fo'k; gS ftlds vUrxZr jktuhfrd vkSj vkfFkZd] oks lHkh eqn~ns vkrs gSa ftuds vk/kkj ij dksbZ ns"k fodflr vkSj lH; ns"kksa dh Js.kh esa vkrk gSA ;fn dksbZ O;fDr bekunkjh ds lkFk Lons"kh gS rks og gj {ks= esa Lons"kh ds pyu ds fy, iz;kl djsxk vU;Fkk og >wBk vkSj <ksaxh Lons"kh gSA

yksdekU; fryd us vaxzst+h esa vkxjdj rFkk fpiyw.kdj ds lkFk feydj *ejkBk* dk izdk"ku izkjEHk fd;kA fryd rFkk vkxjdj ij fczfV"k ljdkj rFkk dksYgkiqj ds nhoku ds fo#) lkexzh izdkf"kr djus ij eqdnek pykA yksdekU; fryd ds i= *ejkBk* ds 25 ebZ] 1884 ds vad esa Hkkjr ls dPps eky ds fu;kZr rFkk baXyS.M ls rS;kj eky Hkkjr vkuk Hkkjrh; dkjhxjksa rFkk m|ksx ds fy, gkfudkjd crk;k x;k FkkA vukt dk fu;kZr Hkh Hkkjr ds fy, nks izdkj ls gkfudkjd fl) gqvkA yksdekU; us *ejkBk* esa fczfV"k Hkkjrh; ljdkj }kjk lekt lq/kkj ds uke ij Hkkjrh;ksa dh lkekftd ijEijkvksa esa gLr{ksi djus dh uhfr dk fojks/k fd;kA mUgksaus 1891 ds ^,t vkWQ+ dUlsUV fcy* dk blh fy, fojks/k fd;kA *fgUnw*] *usfVo vksihfu;u*] *lathouh*] *Kku izdk"k*] *vEckyk xt+V*] *fgUnh iznhi*] *czkã.k*] *uteqy v[kckj*] *Hkkjr thou* vkfn i=ksa esa ljdkj dh vkfFkZd uhfr dh vkykspuk ds lkFk Hkkjrh;ksa dks vius vkfFkZd mRFkku gsrq Lo;a iz;kl djus dh vko";drk ij t+ksj fn;k x;k FkkA Hkkjrh; i=ksa esa vc jktuhfrd nyksa ds xBu dh vko";drk dk vuqHko Hkh fd;k tkus yxk FkkA vius i= *cSaxkyh* ds 27 ebZ] 1882 ds vad esa us"kuy dkUÝ+sUl ds xBu dh vko";drk ij lqjsUnzukFk cuthZ us fy[kk &

D;ksa ugha gedks ,d jk'Vªh; vkSj ugh arks de ls de ,d izkUrh; dkaxzsl dk xBu dj ysuk pkfg,] ftlesa fd ns"k ds fofHkUu

Hkkxksa ls lkoZtfud laLFkkvksa ds izfrfuf/k vius fopkj j[k ldsa

Hkkjrh; jk'Vªh; dkaxzsl ds igys vf/kos"ku esa igyk izLrko *fgUnw* ds lEiknd th0 ,l0 v;~;j }kjk j[kk x;k Fkk ftlesa mUgksaus ekax dh Fkh fd Hkkjrh; iz"kklu ds dkedkt ij tkap ds fy, ,d desVh dh fu;qfDr dh tk,A

ckyd``.k HkV~V ds lEiknu esa bykgkckn ls izdkf"kr *fgUnh iznhi* ds ekpZ] 1888 ds vad esa *Ý+h VªsM* "kh'kZd ys[k esa eqDr O;kikj ds uke ij vaxzst+ksa dh vk;kr dj dks lekIr djus dh uhfr dh dVq vkykspuk dh xbZ FkhA bl eqDr O;kikjdh cqfu;kn rc ls j[kh xbZZ tc ls Hkkjrh;ksa us vk/kqfud diM+k m|ksx dk fodkl fd;kA rc eSupsLVj ds diM+k fey ekfydksa esa [kycyh ep xbZ vkSj muds ncko esa fczfV"k Hkkjrh; ljdkj us vk;kfrr oLrqvksa ij yxk;k tkus okyk dj Ýh VªsM ds uke ij cUn djk fn;k rkfd Hkkjrh; ckt+kj esa fczVsu esa cuk diM+k Hkkjrh; feyksa esa cus diM+s dh rqyuk esa lLrk ;k mlh Hkko dk iM+sA bVkok ls izdkf"kr *uteqy v[+kckj* ds 8 twu] 1888 ds vad esa 1887 esa cEcbZ izslhMsalh esa ;wjksi ls vk;kfrr eky dk C;kSjk fn;k x;k Fkk ftlds vuqlkj 3400000 #i;ksa dh ekfpl rFkk 3713025 #i;ksa ds Nkrs vkSj 1342526 :i;ksa ds twrs [kjhns x, FksA bl i= esa ;g fVIi.kh dh xbZ Fkh fd f'kf{kr Hkkjrh; viuh ns'kHkfDr ij xoZ djrs gSa ijUrq ogh ;wjksih; eky ds lcls cM+s [kjhnkj gSaA bl i= esa bl rF; dks Li'V fd;k fd bl oxZ ds yksxksa dks okLro esa vius ns'k dk gennZ cuus ds fy, Lons'kh mRiknksa dks gh iz;qDr djus dh dle [kkuh iM+sxhA xka/khth us vius nf{k.k vÝhdk ds izokl esa *bf.M;u vksfifu;u* dk izdk"ku fd;k Fkk ftlesa nf{k.k vÝhdk dh xksjh ljdkj dh jaxHksn rFkk tkfrHksn dh uhfr;ksa ds fo#) ,d laxfBr vkUnksyu dh fgek;r dh xbZ FkhA

egkohj izlkn f}osnh ds lEikndRo esa bykgkckn ls izdkf"kr *ljLorh* ds twu] 1904 ds vad esa te"ksnth VkVk ds bLikr ds dkj[kkus ls izsj.kk ysdj Hkkjrh; /kuokukas] fo"ks'kdj jkts&egkjktksa ls ;g vis{kk dh xbZ Fkh fd oks Lons"kh ozr dks lQy cukus es viuh iwath dk fuos"k djsaxsA

2-**1878 ds ckn Hkkjrh; i=dkfjrk esa jktuhfrd psruk ij fVIi.kh fyf[k;s&**

7-3-3 caxky dk foHkktu vkSj Hkkjrh; i=dkfjrk

caxyk Hkk'kk ds *vkuUn ckt+kj if=dk*] *pk# fefgj*] *lathouh*] <*kdk xt+V*] fgUnh ds *Hkkjr fe*=] ejkBh ds *dsljh* vkfn i=ksa us bl ;kstuk ds fo#) vfHk;ku NsM+ fn;kA bu i=ksa us ;g Li'V fd;k fd lH;rk] Hkk'kk] vkpkj&fopkj] Hkw&jktLo iz"kklu vkfn dh n`f'V ls iwohZ caxky rFkk if"peh caxky nksuksa ,d nwljs ds djhc gSaA mUgksaus ;g fVIi.kh dh fd iz"kklfud l{kerk c<+kus ds fy, ;fn foHkktu djuk gh gS rks caxky ls fHkUu fcgkj o mM+hlk dks mlls vyx dj fn;k tk,A dydRrs ls izdkf"kr fgUnh i= *Hkkjr fe*= ds lEiknd ckyeqdqUn xqIr us *f"ko "kEHkq ds fpB~Bs* esa ykWMZ dt+Zu dks 17 oha "krkCnh ds vR;kpkjh caxky ds lwcsnkj "kkf;Lrk [kka dh inoh ns MkyhA d`'.kdqekj fe= ds lkIrkfgd i= *lathouh* ds 13 tqykbZ] 1905 ds vad esa fczfV"k lkeku ds cfg'dkj dk lq>ko fn;k x;kA lrh"kpUnz eqdthZ ds i= *MkWu* us jk'Vªh; f"k{kk dh egRrk ij izdk"k MkykA fcfiu pUnz iky us vxLr] 1906 esa *cUns ekrje* dk izdk"ku izkjEHk fd;kA blds lEiknd vjfcUnks ?kks'k FksA ckjhUnzdqekj ?kks'k rFkk HkwisUnzukFk nRr us vizSy] 1906 esa caxyk lkIrkfgd i= *tqxkUrj* dk izdk"ku izkjEHk fd;kA *lka/;* Hkh ,d egRoiw.kZ ØkfUrdkjh i= FkkA *tqxkUrj* ds ekpZ] 1907 rFkk vxLr 1907 ds vadksa esa vius y{;ksa dks izkIr djus ds fy, "kkfUriw.kZ j.kuhfr dks fujFkZd ekurs gq,] mudh izkfIr gsrq viuk [kwu cgkuk vko";d crk;k x;k FkkA

";keth d`'.k oekZ us yUnu ls *bf.M;u lksf"k;ksykWftLV* dk izdk"ku fd;kA bl i= esa bf.M;k gkml dh xfrfof/k;ksa ds lekpkj izdkf"kr gksrs FksA 1909 esa bl i= ds nks izdk"kdksa ij eqdnek pykA ";keth d`'.k oekZ us ckn esa isfjl ls vkSj fQj tsusok ls bldk izdk"ku tkjh j[kkA ;wjksi dh /kjrh ls gh ykyk gj n;ky] eSMe dkek rFkk ljnkj flag jkoth jkuk us *oUns ekrje*~ rFkk *ryokj* dk izdk"ku fd;kA

iatkc esa 1907 esa *iatkch* i= esa vaxzst+ksa ds fy, tkrh; vi"kCnksa dk iz;ksx djus ds dkj.k mlds lEiknd ij eqdnek pyk;k x;k tc fd *flfoy ,.M fefyVjh xt+V* tSls vaxzst+h i= Hkkjrh;ksa dks [kqysvke xkfy;ka fn;k djrs FksA rfey esa th0 lqczgeU; dk i=

Lons”kfe=e~] Jh fuokl “kkL=h dk *losZUV vkWQ bf.M;k* rFkk Q+hjkst+”kkg esgrk dk *ckWEcs ØkWfufdy*] enueksgu ekyoh; ds *nSfud fgUnksLrku* ,oa *vH;qn;* lHkh jk’Vªoknh i= FksA ykyk yktir jk; us ykgkSj ls *iatkch*] *oUns ekrje~* rFkk *ihiqy* dk izdk”ku fd;kA

2- caxky ds foHkktu ds le; Hkkjrh; i=dkfjrk ij ys[k fyf[k;s&

7-3-4 1910 dk neudkjh izsl ,DV

1910 ds izsl ,DV ds vUrxZr ftyk/kh”k dks vius ftys esa izdkf”kr gksus okys i=ksa ls 500 ls 5000 dh t+ekur ekaxus dk vf/kdkj fn;k x;k vkSj fdlh Hkh izdkj dh HkM+dkus okyh lkexzh izdkf”kr djus ij ml i= dh t+ekur t+Cr djus dk vf/kdkj Hkh fn;k x;kA Hkkjrh; “kkldksa] U;k;/kh”kksa] iz”kklfud vf/kdkfj;ksa ds fo#) lkexzh dks lRrk fojks/kh ekuk x;k vkSj “kd ds vk/kkj ij Mkd[kkus esa dksbZ Hkh izdkf”kr vFkok fyf[kr lkexzh t+Cr dh tk ldrh FkhA bl ,DV ds lsD”ku 4 ds vUrxZr 1000 ls 10000 dh t+ekur dh O;oLFkk dh xbZ vkSj i= dh uhfr;ksa ls vlUrq’V ftykf/kdkjh dks mldh t+ekur t+Cr djus dk vf/kdkj fn;k x;kA bl ,DV ds vUrxZr 200 fizfUVx izsl vkSj 130 i= cUn fd, x, vkSj 400 izdk”kuksa ij tqekZuk fd;k x;kA *ve`r ckt+kj if=dk*] *fgUnw*] *fVªC;wu*] *ckWEcs ØkWfufdy*] *fn iatkch*] *fgUnqoklh*] *vYeksM+k v[kckj* vkfn i=ksa ij tqekZuk fd;k x;k vFkok mudh t+ekursa tCr dj yh xbZaA gkse:y vkUnksyu dh xfrfof/k;ksa dk ltho fp=.k ,uhchlsUV ds i= *U;w bf.M;k* esa fd;k x;kA eksrh yky usg: bykgkckn ls izdkf”kr i= *yhMj* ds cksMZ vkWQ Mk;jsDVlZ ds ps;jeSu Fks rFkk blds

lEiknd lh0 okbZ0 fpUrkef.k FksA

Ykkyk gj n;ky ds i= *x+nj* dh 10 yk[k izfr;ka fgUnh] mnwZ] iatkch] xqtjkrh] ejkBh rFkk vaxzst+h esa Nkih xbZaA fons"kh diM+ksa ds iklZyksa ds chp esa fNik dj bl i= dh izfr;ka Hkkjr Hksth tkrh FkhaA bl i= ds igys vad esa gh Hkkjr esa ØkfUr dj vaxzst+h "kklu dks m[kkM+ Qsadus dk ladYi fd;k x;k FkkA ykyk gj n;ky dks vesfjdk ls Hkkjr fu'dkflr fd, tkus ds ckn muds lg;ksxh if.Mr jkepUnz us vaxzst+h esa *fgUnqLrku x+nj* dk izdk"ku fd;kA mudks tsy gqbZ tgka fd muds ,d fojks/kh us mudh gR;k dj nhA

ljnkj vthr flag us ykgkSj ls *Hkkjrekrk* i= fudkykA ek[kuyky prqosZnh dk i= izHkk ,d fuHkhZd jk'Vªnh i= FkkA cnzhnRr ik.Ms ds lEikndRo ¼1913&18½ esa *vYeksM+k v[kckj* tSlk ljdkjh uhfr;ksa dk leFkZd i= jk'Vªoknh fopkj/kkjk dk iks'kd cu x;kA ljdkj dh vkykspuk djus ds dkj.k bl i= ij ljdkj dh dksi n`f'V iM+h vkSj 1918 esa bldk izdk"ku cUn dj fn;k x;kA 1918 esa cnzhnRr ik.Ms us vYeksM+k ls gh jk'Vªoknh i= *"kfDr* dk izdk"ku izkjEHk fd;kA xka/kh ;qx ls iwoZ gh Hkkjrh; i=dkfjrk esa jk'Vªoknh Loj eq[kj gks x;k Fkk vkSj ljdkj ds vusd neudkjh dkuwu Hkh Hkkjrh; i=ksa rFkk i=dkjksa dh ljdkj fojks/kh uhfr;ksa ij fu;U=.k LFkkfir djus esa vlQy fl) gq, FksA

Lo ewY;kadu gsrq iz"u

fuEufyf[kr fo'k;ksa ij laf{kIr fVIi.kh fyf[k,%

1- ¼d½ HkkjrsUnq gfj"pUnz dk i= *dfo opu lq/kk*A

¼[k½ 1910 dk izsl ,DV

2- uhps fy[ks iz"uksa ds mRrj nhft,A

¼i½ ^oukZD;qyj izsl ,DV fdl xouZj tujy ds dky esa ikfjr gqvk Fkk\

¼ii½ nf{k.k vÝhdk ls *bf.M;u vksfifu;u* dk izdk"ku fdlus fd;k Fkk\

7-4 xka/kh;qxhu i=dkfjrk esa jktuhfrd psruk dk fodkl

7-4-1 Hkkjrh; i=dkfjrk esa f[kykQ+r ,oa vlg;ksx vkUnksyu dk izfrfcEcu

izFke fo”o;q) dh lekfIr ds ckn vaxzst+ksa us Hkkjrh;ksa jktuhfrd lq/kkj nsus ds LFkku ij jkWyV ,DV rFkk tfy;kaokyk ckx gR;kdk.M dk migkj fn;k FkkA izsl ij fu;U=.k dk f”kdUtk vkSj dl fn;k x;k FkkA e”kgwj “kk;j vdcj bykgkcknh us tfy;kaokyk ckx gR;kdk.M dks lekpkj i=ks esa izdkf”kr u fd, tkus ds ljdkjh vkns”k ij dVk{k djrs gq, dgk Fkk &

ge vkg Hkh Hkjrs gSa rks] gks tkrs gSa cnukeA

oks d+Ry Hkh dj ns arks] ppkZ ugha gksrkAA

,0 th0 gksuhZeSu ds lEiknu esa *ckWEcs ØkWfufdy* us tfy;kaokyk ckx gR;kdk.M dk fo’kn o.kZu fd;k FkkA blds lEoknkrk xkso/kZunkl dks lSfud vnkyr us rhu o’kZ dh lt+k nh Fkh vkSj blds lEiknd gksuhZeSu dks fxj¶rkj dj yUnu okil Hkst fn;k x;k FkkA

f[k+ykQ+r vkUnksyu ds usrk ekSykuk eqgEen vyh us vius vaxzst+h i= *dkejsM* rFkk mnwZ i= *gennZ* esa [kyhQ+k dh lRrk dks iquLFkkZfir djus dh ekax dks j[kk Fkk vkSj le; dh vko”;drk dks le>rs gq, fgUnw&eqfLye ,drk dk izpkj fd;k FkkA xka/khth us *;ax bf.M;k*] *uothou*] *fgUnh uothou*] *gfjtu lsod*] *gfjtu*] *gfjtu cU/kq* vkfn i=ksa dk izdk”ku fd;k FkkA bu i=ksa dks ge xka/kh;qxhu jktuhfrd vkUnksyu ds v/;;u ds fy, izkekf.kd lzksr ds :i esa iz;qDr dj ldrs gSaA lh0 vkj0 nkl rFkk lqHkk’k pUnz cksl us *QkWjoMZ* rFkk *,Mokal* dk izdk”ku djk;kA jk"Vªoknh dfo x;kizlkn 'kqDy lusgh mnwZ esa f='kwy miuke ls jpuk,a fy[krs FksA fgUnh i= *LojkT;* ds 18 tqykbZ] 1921 ds vad esa mudh ,d d+kSeh x+t+y izdkf'kr gqbZ Fkh ftlesa mUgksaus Hkkjrh; efgykvksa dks vius ijEijkxr vkHkw"k.k izse dk ifjR;kx dj Lons'kh o [kknh dks viukus ds fy, izsfjr fd;k Fkk &

fugk;r csg;k gSa vc Hkh tks t+soj ifgurs gSaA

ftUgsa gS eqYd dk dqN nnZ] oks [kn~nj igurs gSaAA

fcgkj esa lfPpnkuUn flUgk us *lpZykbV* dk izdk”ku fd;k FkkA nsoczr “kkL=h dk i= *uo”kfDr* ,d jk’Vªoknh i= FkkA fcgkj ds vU; izeq[k i= *jk’Vªok.kh*] *;ksxh* rFkk *gqadkj* FksA

vlg;ksx vkUnksyu ds LFkxu ds ckn Hkh Hkkjrh; lekpkj i=ksa esa Lojkt izkfIr dh vkdka{kkvksa esa deh ugha vkbZA eFkqjk ls izdkf'kr fgUnh i=

izse ds 12 tuojh] 1923 ds vad esa *dkSy jgs enkZuksa dk*] 'kh''kZd dfork izdkf'kr gqbZ FkhA bl dfork esa tfy;kaokyk ckx gR;kdkaM vkSj iatkc esa ek'kZy ykW yxk, tkus vkSj fugRFks vlg;ksfx;ksa ij ykBh ;k xksyh cjlkuss tSls vekuoh; d`R; djus okyh xksjh ljdkj dks fgUnqLrku ds enksaZ dh vksj ls ;g pqukSrh nh xbZ gS fd og pkgs tSls Hkh vR;kpkj dj ys ij

fgUnqLrkuh fcuk Lojkt fy, ihNs ugha gVsaxs &

fudy iM+ks vc cudj lSfud] Hkax djks Q+jekuksa dkA

fcu Lojkt ds ugha mBsaxs] dkSy jgs enkZuksa dkA

uj] ukjh] cPpksa dks xksjs vR;kpkjh [kwc gusaA

Hkkjr ds dksus dksus esa] tfy;k¡okyk ckx cusa A

fpark ugha] cgs ygjkrk] pgq¡fn'k [kwu tokuksa dkA

fcu Lojkt ds ugha mBsaxs] dkSy jgs enkZuksa dk AA

vlg;ksx vkUnksyu ds LFkxu ds ckn ØkfUrdkjh vkUnksyu ,d ckj fQj mHkjkA caxkyh if=dk,a *vkRe”kfDr*] *lkjFkh* rFkk *fctkSyh* ØkfUrdkjh “kghnksa dh xkFkk,a izdkf”kr dj jgh FkhaA dkt+h ut+#y bLyke us */kwedsrq* lklrkfgd dk izdk”ku fd;k ftlesa fonzksg dk lans”k fn;k x;kA bykgkckn ls izdkf”kr fgUnh if=dk *pk¡n* us 1928 esa dkdksjh ds vej “kghnksa dks J)katfy nsus ds mn~ns”; ls viuk Qkalh fo”ks’kkad izdkf”kr fd;k FkkA vc ekDlZoknh rFkk lektoknh fopkj/kkjk dk iks’k.k djus okys i=ksa dk izdk”ku Hkh

gksus yxk FkkA vaxzst+h esa ekDlZoknh i= *U;w LikdZ* rFkk ejkBh i= *ØkfUr* i= dk izdk”ku gqvkA ,e0 ,u0 jk; us lkE;oknh fopkj/kkjk ds iks’kd i= *bf.MisUMsUV bf.M;k* dk izdk”ku fd;k vkSj lektokfn;ksa us lektoknh i= *dkaxzsl lks”kfyLV* dk izdk”ku fd;kA cEcbZ ls izdkf”kr ejkBh lkIrkfgd i= *ØkfUr* fdlkuksa rFkk et+nwjksa ds vf/kdkjksa dk i{k/kj FkkA iatkc dh et+nwj ,oa fdlku ikVhZ us mnwZ esa *esgurd”k* i= dk izdk”ku fd;kA

3- xka/kh;qxhu i=dkfjrk esa jktuhfrd psruk ds fodkl dks crykb;s&&

7-4-2 iw.kZ LojkT; dh ?kks’k.kk ls f}rh; fo”o;q) ls iwoZ rd Hkkjrh; i=dkfjrk dk fodkl

lkbeu deh”ku dh dwVuhfrd pky dks udkjrs gq, dkaxzsl us 1929 ds izkjEHk esa gh fczfV”k “kklu ds fo#) lfou; voKk vkUnksyu djus dk fu”p; dj fy;k FkkA ekpZ] 1929 esa vius i= *uothou* esa LojkT; izkfIr gsrq xka/khth us lfou; voKk ds vkSfpR; ij nyhy nsrs gq, fy[kk Fkk &

eSa HkyhHkkafr tkurk gw¡ fd lfou; Hkax dSlh Hk;adj pht+ gSA ysfdu tks vkneh vkt+knh dk Hkw[kk gks] og D;k djs\ vkt+knh ds fy, rM+irs gq, euq"; ds fy,] vkt+knh ds ihNs ikxy cus gq, O;fDr ds fy, vusd tksf[keksa dks vius flj ysus ds flok dksbZ jkLrk gh ugha gSA

dkaxzsl ds 1929 ds ykgkSj vf/kos”ku esa gksus okys v/;{k tokgj yky usg: }kjk dkaxzsl dk y{; iw.kZ Lojkt ?kksf’kr fd;k tkuk FkkA bl ?kks’k.kk ls iwoZ gh bl ,sfrgkfld vf/kos'ku dh iwoZ la/;k ij dkuiqj ls izdkf'kr Jh x.ks'k 'kadj fo|kFkhZ ds i= *izrki* ds 15 fnlEcj] 1929 ds vad esa Jh gfjnRr dh dfork & *ykgkSj dkaxzsl* izdkf'kr

gqbZ Fkh &

Hkkjr esa xqy f[kyk,xh ykgkSj dkaxzsl]

ijrU=rk feVk,xh] ykgkSj dkaxzslA

[kq'kfdLerh fd lnz gq, eksrh ls tokgj]

lj rkt vc j[kk,xh] ykgkSj dkaxzsl A

lkbeu fjiksVZ dk u ogk¡ bUrt+kj gks]

cy viuk vkt+ek,xh] ykgkSj dkaxzsl A

iwjh Lora=rk fy, fcu] ge u jgsaxs]

,syku ;g lquk,xh] ykgkSj dkaxzsl AA

12 ekpZ dks xka/khth us lkcjerh vkJe ls ued lR;kxzg izkjEHk djus ds fy, MkaMh ;k=k izkjEHk dhA 16 ekpZ] 1930 dks ckcwjko fo'.kq ijkM+dj ds lEiknu esa cukjl ls izdkf"kr *vkt* us vius lEikndh; esa bl ;k=k dk bu 'kCnksa esa Lokxr fd;k &

j.kHksjh ct pqdh gSA lsukifr us vkxs c<+us dk gqDe ns fn;k gSA xr 12 ekpZ ds fnu egkRek xka/kh lkezkT;okn ds fdys dks rksM+us ds fy, vius 78 tokuksa dks ysdj py iM+sA u dsoy bl eqYd ds] oju lEiw.kZ lalkj ds djksM+ksa euq";ksa dh vk¡[ksa bl oDr gekjs ml vuks[ks lsukifr dh rjQ+ yxh gqbZ gSaA lsuk dk ;g ekxZ&Hkze.k lEiw.kZ Hkkjro"kZ dh LorU=rk ds fy, gSA

xka/khth us vLi`";rk fuokj.k ds dk;ZØe dks jk'Vªh; vkUnksyu dk vfHkUu vax cuk fy;k FkkA vYeksM+k ls izdkf"kr cnzhnRr ik.Ms ds i= *'kfDr* esa nfyrks)kj ds fy, vuqdwy okrkoj.k cukus dk fujUrj iz;kl fd;k tkrk FkkA blds 16 vizSy] 1932 ds vad esa uV[kV dk ys[k & *nknk lukru /keZ* izdkf'kr gqvk Fkk ftlesa lukru /keZ ds fod`r vkSj vekuoh; :i dks ns[k dj mls ^lM+kru /keZ* dh laKk nh xbZ Fkh &

pkSds dh nhokjsa gh ftudh HkkSxksfyd lhek gSA jlksbZ ds crZuksa esa gh ftl /keZ dh vkRek fuokl djrh gksA tks vius lkr

djksM+ det+ksj vkSj nqcZy Hkkb;ksa dks vNwr le>rk gS ij vU; 'kfDr;ksa ds twrs jxM+rk gSA ,sls /keZ dks ge lukru rks ugha lM+kru vo'; dgrs gSaA

lfou; voKk vkUnksyu esa efgykvksa dh Hkwfedk vR;Ur egRoiw.kZ jgh FkhA xka/khth ds vkns”k ij fojks/k dj jgs tqywlksa dh vafxze iafDr efgykvksa dh gh cukbZ tkrh FkhA eknd inkFkksaZ vkSj foins”kh oLrqvksa dh nqdkuksa ij /kjus Hkh eq[;r;k efgyk,a gh nsrh Fkha vkSj Lons”kh dk;ZØe dks lQy cukus dk eq[; Js; Hkh mUgha dks tkrk FkkA d`’.knRr ikyhoky ds vkxjk ls izdkf'kr i= *lSfud* ds 1 fnlEcj] 1933 ds vad esa dq¡oj jkuh xq.koUrh egkjkt flag dk ys[k & *gekjh tkxzfr* izdkf'kr gqvk FkkA bl ys[k esa mUgksaus xka/khth ds jktuhfrd vkanksyu] fo'ks"kdj Lons'kh vkanksyu dh lQyrk dk eq[; Js; Hkkjrh; efgykvksa dks fn;k Fkk &

egkRek xka/kh dk jktuSfrd vkanksyu dHkh bruk lQy u gksrk] ;fn Hkkjrh; efgykvksa us mlesa Hkkx u fy;k gksrkA Lons'kh vkanksyu dh lQyrk cgqr djds blfy, lEHko gks ldh fd Hkkjrh; efgyk,a ns'k dh lgk;rk ds fy, dksey fons'kh diM+ksa dk O;ogkj NksM+us dks rS;kj gks xbaZaA

ek[kuyky prqosZnh ds i= *deZ;ksxh* rFkk iszepan ds i= *tkxj.k* essa fu;fer :i ls Lons”k&izpkj gksrk FkkA *tkxj.k* ds izR;sd vad esa izk;% bl ckr dh lwpuk nh tkrh Fkh fd dkSu lh Lons”kh oLrq dgka izkIr gks ldrh FkhA *tkxj.k* ds 30 vDVwcj ls 6 uoEcj] 1933 ds vad esa eksVs&eksVs v{kjksa esa ,d ukjk Nik Fkk ftlesa fd [kknh dks viukdj ns”k ds nkfjnz dks nwj djus dk mik; lq>k;k x;k Fkk &

[kn~nj iguks vkSj ns”k ds nq%[k&nkfjnz~; dks nwj HkxkvksA

tkxj.k ds 4 flrEcj] 1933 ds vad esa Hkh ,d ukjk Nik Fkk vkSj lkFk esa Lons”kh oLrq dh foLrkj ls O;k[;k Hkh dh xbZ Fkh &

ns”k ds lqfnu ykus ds fy, Lons”kh dk O;gkj izFke drZO; gSA

ysfdu Lons"kh oLrq dkSu gS\ & og] tks Lons"kh lkexzh ls cuh gks] ftlesa Lons"k dh iwath yxh gks] tks Lons"k&okfl;ksa ds ifjJe ls rS;kj gqbZ gks vkSj ftldk ykHk Hkh Lons"k&okfl;ksa dks gh izkIr gksA

tokgj yky usg: dh /keZfuisZ{krk dh uhfr lkEiznkf;d fopkj/kkjk dks ns"knzksg ls de ugha vkadrh FkhA *bf.M;u fVªC;wu* ds 27 uoEcj] 1933 ds vad esa izdkf"kr vius ys[k & *fgUnw ,.M eqfLye dE;qfyT+e* esa mUgksaus eqfLye lkEinkf;drk ds iks'kd lj vkxk [kk] vYykek bd+cky vkSj fgUnw jk'Vªokn ds iks'kd HkkbZ ijekuUn ij ,d lkFk izgkj fd;k Fkk vkSj mUgsa Øe"k% eqfLye rFkk fgUnw leqnk; dk lPpk izfrfuf/k ekuus ls badkj fd;k FkkA

4- iw.kZ LojkT; dh ?kks'k.kk ls f}rh; fo"o;q) ls iwoZ rd Hkkjrh; i=dkfjrk ds fodkl dks n"kkZb;s&

7-4-3 f}rh; fo"o;q) ls LorU=rk izkfIr rd Hkkjrh; i=dkfjrk dh fodkl ;k=k

f}rh; fo"o;q) ds nkSjku fczfV"k Hkkjrh; ljdkj us izsl dh LorU=rk ij iqu% Hkh'k.k vk?kkr fd;kA Hkkjr NksM+ks vkUnksyu ds nkSjku jk'Vªoknh izsl ij dBksj izfrcU/k yxk fn, x,A ljdkj ds neu pØ ds lekpkj Nkis tkus ij iw.kZ izfrcU/k yxk fn;k x;kA ijUrq Hkkjrh; i=ksa us LorU=rk vfHk;ku esa viuk fuHkhZd ;ksxnku nsuk tkjh j[kkA f"k{kk ds lhfer izpkj&izlkj ds ckotwn Hkkjrh; i=ksa] fo"ks'kdj Hkkjrh; Hkk'kkvksa ds i=ksa us jktuhfrd psruk ds izlkj esa mYys[kuh; Hkwfedk fuHkkbZ rFkk lkekftd ifj'dkj ,oa

vkfFkZd psruk ds fodkl esa Hkh egRoiw.kZ ;ksxnku fn;kA xka/khth ds i=ksa *gfjtu*] *;ax bf.M;k*] *gfjtu lsod* vkfn esa vll`";rk fuokj.k] ukjh&mRFkku] xzke LojkT;] e|fu'ks/k vkSj lkEiznkf;d ln~Hkko dks LorU=rk ls iwoZ gh gkfly djus dk iz;kl fd;k x;k FkkA ,d i=dkj ds :i esa Hkh xka/khth us lSdM+ksa i=ksa vkSj i=dkjksa ds fy, ,d ekxZn"kZd dk dk;Z fd;k FkkA tokgj yky usg: dk i= *us"kuy gSjkYM* Hkkjr dh LorU=rk ls iwoZ gh mls LorU= ekurk FkkA blds eq[ki``B ij vafdr jgrk Fkk & *ÝhMe bt+ bu isfjy] fMQ+sUM bV fon vkWy ;ksj ekbV* ¼LorU=rk [krjs esa gS viuh iwjh "kfDr ds

lkFk bldh j{kk dhft,½A bl i= dh /keZfuisZ{krk dh uhfr Hkh

Li'V FkhA /keZ ds uke ij ns"k vkSj leqnk;ksa dks ckaVuk *uS"kuy gSjkYM* dh n`f'V esa ns"knzksg ls de ugha FkkA 1946 ds i=ksa esa lqHkk'k pUnz cksl ,d egkuk;d ds :i esa mHkjdj vk,A xka/khth ds i=ksa rd esa lqHkk'k dh Lrqfr dh tkus yxhA ;g izfrc) i=dkfjrk dk ;qx Fkk /kukZtu ds fy, dksbZ ns"kHkDr i=dkfjrk ds {ks= esa ugha tkrk FkkA bu dye ds flikfg;ksa us vius ns"kokfl;ksa dks LorU=rk ds ekxZ ij vkxs c<+us ds fy, izsfjr fd;k Fkk vkSj fczfV"k "kklu ds fy, fujUrj dfBukb;ka mRiUu dh FkhaA viuh fuHkhZdrk rFkk viuh ns"kHkfDr ds izfr izfrc)rk ds fy, LorU=rk iwoZ dh Hkkjrh; i=dkfjrk fu%lUnsg iz"kalk dh ik= gSA

5- f}rh; fo"o;q) ls LorU=rk izkflr rd Hkkjrh; i=dkfjrk dh fodkl ;k=k dks crkb;s&

LoewY;kadu gsrq iz"u

fuEufyf[kr fo'k;ksa ij laf{kIr fVIi.kh fyf[k,%

1- ¼d½ dkaxzsl ds ykgkSj vf/kos"ku esa iw.kZ Lojkt dh ?kks'k.kkA

¼[k½ lkEiznkf;d ln~Hkko ds fodkl esa i=dkfjrk dk ;ksxnkuA

2- uhps fy[ks iz"uksa ds mRrj nhft,A

¼i½ *"kfDr* dk lEknd dkSu Fkk\

¼ii½ tokgj yky usg: us fdl i= dk izdk"ku fd;k Fkk\

7-5 Lkkj la{ksi

1857 ds fonzksg esa fnYyh ds *lkfndqy v[+kckj* vkSj*nsgyh mnwZ v[+kckj*] *nwjchu* rFkk *lqYrkuqy v[+kckj* us fczfV"k "kklu ds fo#) tu&psruk tkxzr djus esa egRoiw.kZ Hkwfedk fuHkkbZA *fgUnw iSfVª,V*] *lkseizdk"k*] *ve`r ckt+kj if=dk*] *dfo opu lq/kk*] *Kku izdk"k*] *bUnq izdk"k*] *dsljh*] *ejkBk*] *fgUnw*] *usfVo vksihfu;u*] *lathouh*] *fgUnh iznhi*] *uteqy v[kckj*] *Hkkjr thou*] *cSaxkyh* vkfn i=ksa esa ljdkj dh vkfFkZd rFkk jktuhfrd uhfr dh vkykspuk ds lkFk Hkkjrh;ksa dks vius vkfFkZd ,oa jktuhfrd mRFkku gsrq Lo;a iz;kl djus dh vko";drk ij t+ksj fn;k x;k FkkA

xka/khth us vius nf{k.k vÝhdk ds izokl esa *bf.M;u vksfifu;u* dk izdk"ku fd;kA egkohj izlkn f}osnh us bykgkckn ls izdkf"kr *ljLorh* esa Lons"kh vkUnksyu dk leFkZu fd;kA *vkuUn ckt+kj if=dk*] *pk# fefgj*] *lathouh*] *<kdk xt+V*] *Hkkjr fe=*] *dsljh*]s *MkWu* vkfn i=ksa us caxky foHkktu ds fo#) vfHk;ku NsM+kA ckjhUnzdqekj ?kks'k rFkk HkwisUnzukFk nRr us ØkfUdkjh i= *tqxkUrj* dk vkSj vjfcUnks ?kks'k us *cUnsekrje~* dk izdk"ku izkjEHk fd;kA *lka/;* Hkh ,d egRoiw.kZ ØkfUrdkjh i= FkkA ";keth d`'.k oekZ us yUnu ls *bf.M;u lksf"k;ksykWftLV* dk izdk"ku fd;kA ykyk gj n;ky] eSMe dkek rFkk ljnkj flag jkoth jkuk us *oUns ekrje~* rFkk *ryokj* dk izdk"ku fd;kA Jh fuokl "kkL=h dk *losZUV vkWQ bf.M;k* rFkk Q+hjkst+"kkg esgrk dk *ckWEcs ØkWfufdy*] enueksgu ekyoh; ds *nSfud fgUnksLrku* ,oa *vH;qn;*] ykyk yktir jk; ds *iatkch*] *oUns ekrje~* rFkk *ihiqy*] Jherh ,uhchlsUV dk *U;w bf.M;k* vkfn jk'Vªoknh i= FksA 1910 ds izsl ,DV ds vUrxZr 200 fizfUVx izsl vkSj 130 i= cUn fd, x, vkSj 400 izdk"kuksa ij tqekZuk fd;k x;kA

Hkkjr esa ØkfUr dj vaxzst+h “kklu dks m[kkM+ Qsadus dk ladYi djus okys Ykkyk gj n;ky us *x+nj* fudkykA 1918 esa cnzhnRr ik.Ms us vYeksM+k ls *“kfDr* dk izdk”ku izkjEHk fd;kA f[k+ykQ+r vkUnksyu ds usrk ekSykuk eqgEen vyh us vius vaxzst+h i= *dkejsM* rFkk mnwZ i= *gennZ* dk izdk”ku fd;kA xka/khth us *;ax bf.M;k*] *uothou*] *fgUnh uothou*] *gfjtu lsod*] *gfjtu*] *gfjtu cU/kq* vkfn i=ksa dk izdk”ku fd;kA vaxzst+h esa ekDlZoknh i= *U;w LikdZ* rFkk ejkBh i= *ØkfUr* i= dk izdk”ku gqvk vkSj lektokfn;ksa us *dkaxzsl lks”kfyLV*] *esgurd”k* vkfn i=ksa dk izdk”ku fd;kA f}rh; fo”o;q) ds nkSjku fczfV”k Hkkjrh; ljdkj us izsl dh LorU=rk ij iqu% Hkh’k.k vk?kkr fd;kA LorU=rk iwoZ dh i=dkfjrk izfrc) i=dkfjrk dh ,d felky gSA

7-6 ikfjHkkf’kd “kCnkoyh

:gkuh% vkfRed izdk'k

d+nhe% iqjkru

ubZe% fnO;ksigkj

t+j[kst% flafpr

lkfgy% fdukjk

vgys oru% ns'koklh

gus% ekjsa

pgqafn”k% pkjksa vksj

7-7 lUnHkZ xzaFk

frokjh] vtqZu & *LorU=rk vkUnksyu vkSj fgUnh i=dkfjrk*] okjk.lh] 1985

czãkuUn & *Hkkjrh; LorU=rk vkUnksyu vkSj mRrj izns”k dh fgUnh i=dkfjrk*] fnYyh]

1986

uVjktu] ts0 & *fgLVªh vkWQ fn bf.M;u tuZfyT+e*] ubZ fnYyh] 1955

flag] v;ks/;k & *Hkkjr dk eqfDr laxzke*] fnYyh] 1977

vkt+kn] vcqy dyke & *bf.M;k foUl ÝhMe*] dydRrk] 1959

1- ¼d½ nsf[k, 1-3-1 oukZD;qyj izsl ,DV ls iwoZ dh i=dkfjrk esa jktuhfrd psrukA

¼[k½ nsf[k, 1-3-4 1910 dk neudkjh izsl ,DVA

2- ¼i½ ykWMZ fyVu ds “kkludky esaA

¼ii½ xka/khth usA

1- ¼d½ nsf[k, 1-4-2 iw.kZ LojkT; dh ?kks’k.kk ls f}rh; fo”o;q) ls iwoZ rd Hkkjrh; i=dkfjrk dk fodklA

¼[k½ nsf[k, 1-4-2 iw.kZ LojkT; dh ?kks’k.kk ls f}rh; fo”o;q) ls iwoZ rd Hkkjrh; i=dkfjrk dk fodklA

2- ¼i½ cnzhnRr ik.MsA

¼ii½ *us”kuy gSjkYM*A

vH;kl iz”u

1- 1857 ds fonzksg dh i`’BHkwfe rS;kj djus esa *i;kes vkt+knh* i= dh Hkwfedk dk vkdyu dhft,A

2- Hkkjrh; Hkk’kkvksa ds i=ksa }kjk vkfFkZd jk’Vªokn ds fodkl esa Hkwfedk dk vkdyu dhft,A

3- ykWMZ fyVu us 1878 esa oukZD;qyj izl ,DV D;ksa ykxw fd;k Fkk\

4- caxyk Hkk’kk ds ØkfUrdkjh i=ksa dh caxky foHkktu ds fojks/k esa Hkwfedk dk ewY;kadu dhft,A

,d i=dkj ds :i esa xka/khth dh miyfC/k;ksa dk vkdyu dhft,A

इकाई आठ

Hkkjr esa fczfV”k “kklu dk izHkko

8.1 **izLrkouk**

8.2 **bdkbZ ds mn~ns”;**

8-3 /kkfeZd] lkekftd] “kSf{kd ,oa lkaLd`frd thou ij fczfV”k izHkko

8-3-1 /kkfeZd thou fczfV”k izHkko

8-3-2 Hkkjrh; lkekftd thou ij fczfV”k izHkko

8-3-3 Hkkjrh; uotkxj.k esa ik”pkR; f”k{kk ds izpyu dk ;ksxnku

8-3-4 Hkkjrh; tkx`fr esa izsl dh Hkwfedk

8-3-5 Hkkjrh; lkfgR; ij ik”pkR; izHkko

8-3-6 Hkkjrh; dyk ds fofo/k vk;keksa ij ik”pkR; izHkko

8-3-7 vke tu&thou i)fr ij ik”pkR; izHkko

8-4 iz”kklfud] vkfFkZd rFkk jktuhfrd {ks= esa fczfV”k izHkko

8-4-1 iz”kklfud {ks= esa fczfV”k izHkko

8-4-2 vaxzst+ksa dh QwV Mky dj “kklu djus dh uhfr ds nq[kn ifj.kke

8-4-3 vkfFkZd {ks= esa fczfV”k izHkko

8-4-4 jktuhfrd {ks= esa fczfV”k izHkko

8-5- Lkkj la{ksi

8.6 **ikfjHkkf’kd “kCnkoyh**

8.7 **lUnHkZ xzaFk**

8-8 Lo ewY;kafdr iz”uksa ds mRrj

8-9 vH;kl iz”u

8-1 izLrkouk

fiNyh bdkb;ksa esa ;g ppkZ dh tk pqdh gS fd Hkkjr esa fczfV”k “kklu us ,d u, ;qx dk lw=ikr fd;k Fkk vkSj Hkkjr dks vk/kqfud ;qx esa izfo’V djk;k FkkA izFke [k.M dh igyh nks bdkb;ksa esa ge Hkkjrh; iqutkZxj.k vFkok uotkxj.k ij ik”pkR; izHkko ls voxr gks pqds gSaA Hkkjr esa /kkfeZd] lkekftd] “kSf{kd ,oa jktuhfrd psruk ds fodkl rFkk Hkkjr ds vk/kqfudhdj.k dk Js; ,d lhek rd fczfV”k “kklu dks fn;k tk ldrk gSA

bl bdkbZ esa ge fczfV”k “kklu ds gkfudkjd izHkkoksa dh ppkZ Hkh djsaxsA Hkkjr ds vkfFkZd nksgu] fo?kVudkjh rRoksa] fo”ks’kdj lkEiznkf;drk dh Hkkouk dks HkM+dkus dh uhfr] f”k{kk izlkj ds izfr vR;Ur lhfer nkf;Ro dk fuokZgu] jktuhfrd neu] lkekftd] lkaLd`frd rFkk vkfFkZd vlekurk dks c<+kus dh uhfr vkfn dk fo”ys’k.k Hkh bl bdkbZ esa fd;k tk,xkA

8-2 bdkbZ ds mn~ns”;

fczfV”k “kklu ds yxHkx 190 lky ds dky esa Hkkjrh;ksa ds thou vkSj muds n`f’Vdks.k ij O;kid ik”pkR; izHkko iM+k vkSj vkt Hkh izpqj ek=k esa mlds fpg~u “ks’k gSaA bl bdkbZ esa vkidks Hkkjr esa fczfV”k “kklu ds lkekftd] /kkfeZd] lkaLd`frd] “kSf{kd] vkfFkZd] iz”kklfud ,oa jktuhfrd izHkko ds fo’k; esa crk;k tk,xkA bl bdkbZ dks i<+dj vki l{ke gksaxs%

- Hkkjr esa iqutkZxj.k dky esa /kkfeZd ,oa lkekftd lq/kkj vkUnksyuksa ij ik”pkR; lq/kkjoknh fopkj/kkjk ds izHkko dk vkdyu djus esaA

- Hkkjr esa vkfFkZd jk’Vªokn] vk/kqfud m|ksx ds fodkl rFkk vkfFkZd vkRefuHkZjrk dh Hkkouk ds fodkl ij ik”pkR; vkfFkZd psruk ds izHkko dh tkudkjh izkIr djus esasA

- Hkkjr esa jktuhfrd psruk ds fodkl rFkk Hkkjrh; jk’Vªh; vkUnksyu ij ik”pkR; izHkko ls ifjfpr gksus esasA

• Hkkjrh;ksa ds lkaLd`frd thou ds fofHkUu igyqvksa ij ik”pkR; izHkko dk ewY;kadu djus esasA

8-3 /kkfeZd] lkekftd] “kSf{kd ,oa lkaLd`frd thou ij fczfV”k izHkko

8-3-1 /kkfeZd thou fczfV”k izHkko

Hkkjr esa 19oha “krkCnh esa /kkfeZd iqutkZxj.k dk Js; vkerkSj ij fczfV”k izHkko dks fn;k tkrk gSA vaxzst+ksa ds lEidZ esa vkus ds ckn Hkkjrh;ksa dks viuh /kkfeZd dqjhfr;ksa] /kkfeZd fod`fr;ksa rFkk /kkfeZd vukpkj ds vkykspukRed fo”ys’k.k djus dh izsj.kk feyhA gj ckr dks cqf) vkSj foosd dh dlkSVh ij ij[kus dh izo`fRr us fdlh Hkh /kkfeZd ijEijk o vuq’Bku dks vk¡[k ewandj Lohdkj djus vFkok mudk ikyu djus ij xfrjks/kd dk dke fd;kA e/;dky esa dchj vkSj xq# ukud tSls lq/kkjd bl izdkj ds vfHk;ku esa layXu jgs Fks fdUrq 18 oha “krkCnh ds mRrjk/kZ esa Hkkjrh;ksa ds /kkfeZd iru ij xEHkhj izgkj bZlkbZ fe”kufj;ksa us fd,A mUgksaus fgUnqvksa vkSj eqlyekuksa dh /kkfeZd dqjhfr;kas] iqjksfgrksa rFkk ekSyfo;ksa ds /kkfeZd ,oa

lkekftd izHkqRo vkSj /keZ ds uke ij gks jgs vukpkj dks mtkxj fd;kA bZlkbZ fe”kufj;ksa us Hkkjr esa bZlkbZ /keZ ds ekuo izse] ekuo lsok] /kkfeZd ,oa lkekftd lekurk ds cy ij yk[kksa Hkkjrh;ksa dks bZlkbZ cuk fy;kA foDVksfj;k eseksfj;y

/kkfeZd {ks= esa Hkkjr ij ;g ,d egRoiw.kZ ik”pkR; izHkko FkkA fczfV”k ljdkj us bZlkbZ fe”kufj;ksa dks u dsoy viuk /keZ izpkj djus dh [kqyh NwV nh vfirq mUgsa gj lEHko lgk;rk Hkh iznku dh vkSj /keZ ifjofrZr dj bZlkbZ cuus okyksa dks vusd lqfo/kk,a Hkh iznku dhaA csafVax rFkk MygkSt+h ds dky esa fgUnqvksa ds lEifRr ds mRrjkf/kdkj ds fu;eksa esa /keZ ifjofrZr dj bZlkbZ cuus okyksa dks /;ku esa j[kdj ifjorZu fd, x,A 1857 ds fonzksg dk ,d izeq[k dkj.k bZlkbZ fe”kufj;ksa }kjk bZlkbZ /keZ dk izpkj Fkk fdUrq bl fonzksg ds neu ds ckn Hkh vizR;{k :i ls bZlkbZ fe”kufj;ksa dks “kkld oxZ dk ojn gLr izkIr jgkA

19 oha “krkCnh esa ik”pkR; izHkko us czã lekt dks lcls igys /kkfeZd ifj’dkj ds fy, izsfjr fd;kA jkeeksgu jk; us tkWu fMXch ds lEidZ esa vkdj ik”pkR; n”kZu lkfgR; vkSj /keZ dk xgu v/;;u fd;kA jktk jkeeksgu jk; }kjk LFkkfir czã lekt ik”pkR; ckSf)drkokn ls izHkkfor /kkfeZd vkUnksyu FkkA blesa /keZ] lEiznk;] o.kZ] fyax vkSj f”k{kk ;k vkfFkZd fLFkfr dk dksbZ Hkh cU/ku vkfLrdksa ds fy, ugha j[kk x;kA blesa bZ”oj ds fuxqZ.k&fujkdkj :i dh mikluk dk izko/kku FkkA bZlkbZ /keZ dh Hkkafr izkf.kek= ds izfr izse vkSj ekuo lsok dks blesa bZ”oj HkfDr dk loZJs’B :i Lohdkj fd;k x;k FkkA ,ds”ojokn ds izpkj gsrq jkeeksgu jk; us vius vuq;k;h fofy;e ,Me ds lkFk dydRrs esa ;wfuVsfj;u fe”ku dh LFkkiuk dh A czã lekt ds usrk ds”kc pUnz lsu dh laxr lHkk ij bZlkbZ fe”kufj;ksa dh izkf.kek= dh lsok ds Hkko dk Li’V izHkko FkkA laxr lHkk esaa tkfr ds cU/kuksa vkSj ;Kksiohr /kkj.k djus] tUeksRlo] ukedj.k] vUR;sf’V tSls laLdkjksa ds ifjR;kx ij cy fn;k x;kA czã lekt ls izsfjr izkFkZuk lekt rFkk osn lekt ij Hkh ik”pkR; ckSf)drkokn dk izHkko iM+k FkkA

vyhx<+ vkUnksyu ds izorZd lS;n vgen [kku dks izxfr esa ck/kd ijEijkvksa vkSj /keZ ds uke ij iru dh vksj <dsyus okyh ekufldrk Lohdk;Z ugha FkhA vius i= *rgt+hc&my&v[+kykd* esa izdkf”kr vius ys[kksa esa mUgksaus cqf) vkSj foosd dh dlkSVh ij ij[ks fcuk fdlh dk;Z dks viuk /keZ le> dj djus dh eukso`fRr dh vkykspuk dh FkhA vgefn;k vkUnksyu ds izorZd fet+kZ xqyke vgen d+kfnuh Hkkjr esa izpfyr bLyke dh ijEijkvksa rFkk ekU;rkvksa dks O;kogkfjdrk dk tkek igukuk pkgrs FksA 1851 esa vkaXy f”k{kk izkIr ikjfl;ksa us jguqekbZ etnsvklu lHkk ¼/kkfeZd lq/kkj la?k½ dh LFkkiuk dhA bl lHkk ij ik”pkR; ckSf)drkokn dk Li’V izHkko Fkk vkSj ;g /kkfeZd ijEijkvksa ds uke ij /kkfeZd dqjhfr;kas dk [kqydj fojks/k djus dk lkgl j[krh FkhA

1-**/kkfeZd thou ij fczfV”k izHkko dh ppkZ dhft,&**

8-3-2 Hkkjrh; lkekftd thou ij fczfV”k izHkko

mi;ksfxrkoknh fopkj/kkjk dk tud tsjseh casFke ¼1748&1832½ dks ekuk tkrk gSA Hkkjr dks muds vuq;kf;;ksa us muds fl)kUrksa dks ij[kus ds fy, ,d iz;ksx”kkyk ds :i esa iz;qDr fd;kA Hkkjrh;ksa dks ,d v/kZlH; ccZj tkfr;ksa ds lewg ds :i esa ekudj mUgksaus ^OgkbV eSUl cMsZu* dh fopkj/kkjk ds vUrxZr mudks lH; cukus dk iz;kl fd;k vkSj mudh /kkfeZd&lkekftd dqjhfr;ksa] muds va/kfo”oklksa vkSj muds “kSf{kd fiNM+siu dks nwj djus ds fy, muesa /kkfeZd&lkekftd psruk rFkk /keZfuisZ{k f”k{kk dk fodkl fd;kA mi;ksfxrkoknh fopkj/kkjk us fczfV”k Hkkjrh; iz”kklu dks Hkh izHkkfor fd;kA ^xzsVSLV lyst+j Q+kWj xzsVsLV uEcj* dh vo/kkj.kk ds vUrxZr Hkkjr vkSj Hkkjrh;ksa ds fo’k; esa tkudkjh gkfly dj mudk orZeku ifjizs{; esa vf/kdre dY;k.k djus dh izo`fRr us Hkkjrh; bfrgkl] /keZ] uhfr] U;k;] lkfgR; vkSj laLd`fr ds iqujkoyksdu vkSj iqujksRFkku dk ekxZ iz”kLr fd;kA Q+ksVZ fofy;e ds iz/kku U;k;/kh”k lj fofy;e tksUl us 1784 esa ^,f”k;kfVd lkslk;Vh* dh LFkkiuk dhA ckn esa cEcbZ vkSj yUnu esa Hkh ^,f”k;kfVd lkslk;Vh* dh LFkkiuk dh xbZA *euqLe`fr*] *Hkxon~ xhrk*] vkfn izkphu xzaFkksa dk vuqokn fd;k x;kA mi;ksfxrkokfn;ksa us ^osyQ+s;j LVsV* vFkkZr~ yksd dY;k.kdkjh jkT; dh vo/kkj.kk ds vUrxZr tu&dY;k.k dks jkT; dk nkf;Ro ekukA Hkkjr esa caxky ds xouZj tujy cuus ls igys csafVax us csaFke ds vuq;k;h tsEl fey ls HksaV ds le; mlls dgk Fkk fd okLro esa csaFke gh xouZj tujy ds :i esa dk;Z djsaxsA ykWMZ fofy;e csafVax ds “kkludky esa lks”ky ysftlys”ku dh uhfr ds vUrxZr 1829 ds jsX;wys”ku 17 }kjk lrh izFkk tSlh vekuqf’kd lkekftd dqjhfr dk mUewyu fd;k x;k vkSj uj cfy rFkk ckfydk o/k ij izfrcU/k yxk;k x;kA ykWMZ MygkSt+h ds “kklu dky esa 1856 esa fo/kok fookg dks dkuwuh ekU;rk nh xbZA 1872 esa ds”kc pUnz lsu ds iz;kl ls ^usfVo eSfjt ,DV* ikfjr gqvk ftlesa vUrtkZrh; fookg dks ekU;rk nh xbZA 1892 esa ch0 ,e0 ekYcjh ds iz;klksa ls ^,t vkWQ dUlsUV ,DV* ds vUrxZr ifr }kjk “kkjhfjd lEcU/k LFkkfir djus ds fy, ckfydk o/kw dh U;wure vk;q 12 o’kZ

fu/kkZfjr dj nh xbZ vkSj 1929 esa gjfoykl “kkjnk ds iz;kl ls “kkjnk ,DV ds vUrxZr cky fookg dks xSj dkuwuh ?kksf’kr dj fn;k x;kA bl izdkj lrh izFkk ds mUewyu ds vxys 100 lky rd fczfV”k ljdkj us lks”ky ysftlys”ku dh uhfr viuk dj Hkkjr ds lekt lq/kkj vkUnksyu ij viuh xgjh Nki NksM+hA fczfV”k “kklu esa fL=;ksa dh fLFkfr esa lq/kkj vk;kA insZ ds pyu esa deh vkbZ vkSj L=h f”k{kk dk izlkj gqvkA tkr&ikar ds cU/kuksa esa f”kfFkyrk vkbZ vkSj ,d u, izHkko”kkyh e/;e oxZ dk mn; gqvkA

2- **Hkkjrh; lkekftd thou ij fczfV”k izHkko dh ppkZ dhft,&**

8-3-3 Hkkjrh; uotkxj.k esa ik”pkR; f”k{kk ds izpyu dk ;ksxnku

bZlkbZ fe”kufj;ksa us vaxzst+h rFkk Hkkjrh; Hkk’kkvksa ds ek/;e ls f”k{kk izlkj ds {ks= esa egRoiw.kZ dk;Z fd;kA mUgksaus ckfydkvksa rFkk nfyr lekt ds fy, Ldwyksa dh LFkkiuk dhA jktk jkeeksgu jk; tSls lq/kkjdksa us ik”pkR; f”k{kk ls ykHkkfUor gksdj gh lkekftd] /kkfeZd lq/kkj ,oa f”k{kk izlkj dk vfHk;ku pyk;k FkkA ik”pkR; f”k{kk ds izpkj&izlkj ls Hkkjr esa lkekftd] oSpkfjd] vkfFkZd rFkk jktuhfrd psruk dk vHkwriwoZ fodkl gqvkA jktk jkeeksgu jk; us /keZfuisZ{k vk/kqfud vaxzst+h f”k{kk dks Hkkjrh;ksa ds mRFkku dh vko”;d lh<+h ekukA mUgksaus xf.kr] HkkSfrd “kkL=] jlk;u “kkL=] izkf.kfoKku] izkd`frd n”kZu] U;k; vkfn fo’k;ksa ds f”k{k.k dks vko”;d ekuk rFkk laLd`r ,oa Q+kjlh f”k{kk i)fr ds }kjk if.Mr vkSj ekSyoh rS;kj djus dh vuqi;ksxh ijEijk dk fojks/k fd;kA

nk”kZfud lqdjkr rFkk csdu dh f”k{k.k i)fr vkSj g~;we dh rkfdZd iz.kkyh ls izHkkfor] ;wjksfi;u iqtkZxj.k dh ckSf)drk ds iks’kd] ;qok caxky vkUnksyu ds lw=/kkj] fgUnw dkWyst ds ;qok v/;kid gsujh yqbZ fofy;e Msjksft+;ks us vius fo|kfFkZ;ksa dks caxky esa uotkxj.k dk izlkj djus ds fy, rS;kj fd;kA mlus ijEijkvksa vkSj

/kkfeZd&lkekftd laLdkjksa dks viukus ls igys mudks cqf) vkSj foosd dh dlkSVh ij ij[ks tkus ij t+ksj fn;kA Msjksft+;ks rFkk mlds vuq;kf;;ksa] jatu eq[kthZ] jke xksiky ?kks'k rFkk d``.keksgu cuthZ vkfn us izkphu ,oa iruksUeq[k izFkkvksa] deZ dk.Mksa] jhfr fjoktksa ewfrZiwtk esa fo"okl vkSj iqjksfgrokn esa vkLFkk dh HkRlZuk dhA mudk rdZokn ik"pkR; fopkj/kkjk ls cgqr vf/kd izHkkfor FkkA ;qok caxky vkUnksyu ds vuq;k;h jktuhfr esa csaFke ds vuq;k;h Fks vkSj jktuhfrd vFkZ&O;oLFkk esa og ,Me fLeFk ds vuq;k;h FksA Msjksft+;ks ;s izHkkfor gksdj fgUnw dkWyst ds Nk=ksa us okWYrs;j] ykWd] cSdu] g~;we] jhM] czkmu rFkk VkWe isu ls izsj.kk izkIr dh FkhA *X;kusUos'k.k*] *cSaxky LisDVsVj*] *fgUnw ik;ksfu;j*] *gsLisjl*] *bDok;jj* vkSj *fn fDoy* i=&if=dkvksa ds ek/;e ls fgUnw dkWyst ds Nk=ksa us Hkkjr dh ledkyhu n"kk] jktuhfr ds foKku] ljdkj] U;k;"kkL=] Hkkjr esa ;wjksih; mifuos"kokn] L=h f"k{kk] LorU=rk vkSj fonsf"k;ksa ds v/khu Hkkjr tSls fo'k;ksa ij ppkZ dhA

1813 ds pkVZj ,DV esa mi;ksfxrkokfn;ksa us vius izHkko dk iz;ksx dj Hkkjr esa f"k{kk ds izlkj gsrq 1 yk[k #i;s okf'kZd dh /kujkf"k dk vkoaVu fu/kkZfjr djk;kA vaxzst+ksa us Hkkjr esa /keZfuisZ{k vk/kqfud ik"pkR; f"k{kk dk izpyu fd;kA casFke us csafVax dks fy[ks i= esa Hkkjr esa mi;ksxh f"k{kk ds izlkj dh vko";drk ij cy fn;k Fkk vkSj csafVax us Hkh f"k{kk izlkj dks Hkkjr ds tkxj.k dk lcls cM+k mik; ekuk FkkA ykWMZ eSdkWys ds fopkj ls ik"pkR; f"k{kk ds ek/;e ls gh Hkkjrh;ksa esa tkx`fr vk ldrh FkhA mldk mn~ns"; Fkk fd og ik"pkR; f"k{kk iznku dj &

Hkkjrh;ksa dk ,d ,slk oxZ fodflr djs tks fd dsoy vius jDr vkSj o.kZ esa gh Hkkjrh; gks ijUrq viuh vfHk#fp;ksa] fopkjksa] vius uSfrd vkn"kksaZ vkSj viuh ckSf)drk esa vaxzst+ gksA

ykWMZ MygkSt+h us tu&f"k{kk izlkj dh egRrk dks le>k FkkA mlus Hkkjrh; Hkk'kkvksa ds ek/;e ls izkFkfed ,oa ek/;fed f"k{kk ds fodkl dh uhfr viukbZ FkhA pkYlZ oqM ds 1854 ds fMLiSp dks fczfV"k Hkkjrh; mPp ,oa ek/kfed f"k{kk ds bfrgkl esa eSXukdkVkZ vFkok ehy dk iRFkj dgk tkrk gSA

vaxzst+ksa us 1835 esa caxky esa Hkkjr dk igyk esfMdy

dkWyst [kksykA 1845 esa cEcbZ esa xzkUV esfMdy dkWyst dh LFkkiuk dh xbZA if”peksRrj izns”k esa #M+dh esa 1849 esa bathfu;fjax dkWyst dh LFkkiuk gqbZ ftls 1854 esa esa VkWelu bathfu;fjax dkWyst dk uke fn;k x;kA dydRrs rFkk iwuk esa Hkh bathfu;fjax dkWystksa dh LFkkiuk dh xbZA 1858 esa dydRrk] cEcbZ vkSj enzkl esa fo”ofo|ky;ksa dh LFkkiuk dh xbZA

ik”pkR; f”k{kk tu&lkekU; ds fy, ugha FkhA bl vR;Ur egaxh vkSj nq:g f”k{kk iz.kkyh dk izlkj vR;Ur lhfer jgk vkSj bldk ykHk eq[;r% “kgjh mPp ,oa e/; oxZ gh izkIr dj ldkA bl ik”pkR; f”k{kk izkIr oxZ esa vgadkj dh Hkkouk fodflr gqbZ vkSj mlus vius cM+ksa dk lEeku djus ds LFkku ij mudk migkl mM+kuk izkjEHk dj fn;kA vdcj bykgkcknh us bl izo`fRr ij cgqr lVhd O;aX; fd;k Fkk &

ge ,slh dqy fdrkcsa] dkfcys t+Crh le>rs gSa]

ftUgsa i<+dj ds csVs] cki dks [kCrh le>rs gSaA

¼ge ,slh f”k{kk i)fr ij izfrcU/k yxkuk pkgrs gSa ftls izkIr dj fo|kFkhZ vius ls cM+ksa dk lEeku djus ds LFkku ij mudks ikxy le>us yxrs gSaA½

ik”pkR; f”k{kk izkIr igyh ih<+h dk vius /keZ] lkekftd ijEijkvksa] jhfr fjoktksa] os”kHkw’kk] [kku&iku] f”k’Vkpkj ds izfr voKk dk Hkko mRiUu gqvkA efUnj esa tkdj nsoh dks lk’Vkax iz.kke djus ds LFkku ij mUgsa ^xqM ekWfuZax! eSMe* dgdj lEcksf/kr djuk vkSj xks&ekal [kkuk] efnjk ihuk] bu lcdks lH;rk dh fu”kkuh ekuus dh izo`fRr us ik”pkR; f”k{kk izkIr oxZ dks vius gh cM+s&cw<+ksa ls vyx dj fn;kA vdcj bykgkcknh us bu uo lH;ksa ij dVk{k djrs gq, dgk gS &

gq, bl d+nj eksgT+t+c] dHkh ?kj dk eqga u ns[kk]

dVh mez gksVyksa esa] ejs vLirky tkdjA

¼ik”pkR; lH;rk esa jaxdj oks lH; thou ds brus vknh gks x, fd

mUgksaus viuh lkjh mez gksVyksa esa dkV nh vkSj lQ+kbZ dk mUgsa bruk [+k;ky Fkk fd ejus ds fy, mUgksaus vLirky pqukA½

vaxzst+ksa us izkFkfed ,oa ek/;fed f”k{kk ds izlkj dk nkf;Ro Lohdkj ugha fd;k vkSj vkerkSj ij bldk Hkkj Hkkjrh;ksa ij gh NksM+ fn;kA vaxzst+h f”k{kk ds izlkj dk eq[; mn~ns”; vaxzst+h tkuus okys de osru ij dke djus okys ckcqvksa dh HkrhZ djuk FkkA vaxzst+ksa us tkucw> dj rduhdh f”k{kk ds izlkj dh mis{kk dh vkSj vkerkSj ij dyk vkSj dkuwu ds fo’k;ksa dks gh ikB~;Øe esa egRrk nhA LorU=rk izkfIr ds le; Hkkjr esa ek= 15 izfr”kr lk{kjrk FkhA

8-3-4 Hkkjrh; tkx`fr esa izsl dh Hkwfedk

e”kgwj “kk;j vdcj bykgkcknh us izsl dh vn~Hkqr “kfDr ds fo’k; esa dgk gS &

[kSapks u dekuksa dks] u ryokj fudkyks]

x+j rksi eqdkfcy gks rks] v[kckj fudkyksAa

1780 esa fgdh ds *cSaxky xt+V* ls Hkkjr esa vk/kqfud i=dkfjrk dk izkjEHk ekuk tk ldrk gSA Hkkjrh; Hkk’kkvksa esa i=ksa dk izdk”ku mUuhloha “krkCnh esa izkjEHk gqvkA igyss izxfr”khy i= ds :i esa jkeeksgu jk; ds i= *lEckn dkSeqnh* dk mYys[k vko”;d gSA mnkj ik”pkR; jktuhfrd fopkj/kkjk us jktk jkeeksgu jk; dks ljdkj dh vkfFkZd] iz”kklfud rFkk U;k; iz”kklu dh uhfr;ksa dh vkykspuk djus dk lkgl iznku fd;kA jktk jkeeksgu jk; rFkk vU; tkx:d Hkkjrh;ksa us vfHkO;fDr dh LorU=rk dk egRo vaxzst+ksa ds lEidZ esa gh tkukA eSVdkWQ+ tSls mnkj iz”kkld us vfHkO;fDr dh LorU=rk dks Hkkjr esa LFkkfir fd;k ftlds QyLo:i Hkkjr esa izsl us ns”k ds lkekftd] vkfFkZd ,oa jktuhfrd mRFkku esa vHkwriwoZ ;ksxnku fn;kA lkekftd ,oa jktuhfrd tkx`fr esa i=&if=dkvksa ds ;ksxnku dh foLrkj ls ppkZ] igys ge dbZ bdkb;ksa esa dj pqds gSaA

3- **Hkkjrh; tutkxj.k esa izsl dh D;k Hkwfedk jgh gS\ fyf[k;s&**

8-3-5 Hkkjrh; lkfgR; ij ik”pkR; izHkko

19 oha “krkCnh ds izkjEHk ls gh Hkkjrh; lkfgR;dkjksa ij ik”pkR; izHkko n`f’Vxkspj gksus yxk FkkA fczfV”k “kklu ls iwoZ lkfgR; eq[;r% dkO; rd lhfer Fkk vkSj lUr lkfgR; ds vfrfjDr vke turk ls bldk cgqr lhfer lEcU/k FkkA vaxzst+h “kklu dh ;g ,d cM+h nsu Fkh fd blesa lkfgR; dk lEcU/k vke turk ls gks x;k vkSj lkfgR;dkjksa us njckjh lhekvksa dks yka?kdj vke turk ds thou] mldh vkdka{kkvksa vkSj mldh leL;kvksa dks viuh jpukvksa esa egRo fn;kA vc lkfgR; l`tu dsoy dkO; rd lhfer ugha jgkA x| ds fodkl ds lkFk fucU/k] dgkuh] miU;kl vkSj bfrgkl tSlh fo/kkvksa dk Hkh fodkl gqvkA 1800 esa Q+ksVZ fofy;e dkWyst dh LFkkiuk ls Hkkjrh; Hkk’kkvksa ds lkfgR; ds fodkl dk ekxZ iz”kLr gqvkA fofy;e dSjh ds usr`Ro esa caxyk esa vk/kqfud ys[ku dk izkjEHk gqvkA jkejke clq us izrkikfnR;] jkthc ykspu eq[kksik/;k; us d``.k pUnz jk; rFkk e`R;qat; fo|kyadkj us izkphu dky ls ysdj okjsu gsfLVaXl ds dky ds ,sfrgkfld xzaFk fy[ksA vk/kqfud caxky dkO; dk izkjEHk bZ”oj pUnz xqIr }kjk gqvk ftUgksaus lkekftd vkSj jktuhfrd igyqvksa dks viuh jpukvksa dk fo’k; cuk;kA ekbfdy e/kqlwnu nRr ds *es?knwr o/k dkO;* ij ;wjksih; lkfgR; dk Li’V izHkko n`f’Vxkspj gksrk gSA cafdepUnz ds ,sfrgkfld miU;klksa ij okWYVj LdkWV dk izHkko Li’V ns[kk tk ldrk gSA jchUnzukFk VSxksj ij Hkh vaxzst+h lkfgR; dk izHkko ns[kk tk ldrk gSA vU; Hkkjrh; Hkk’kkvksa esa Hkh lkfgR;dkjksa us ik”pkR; lkfgR; ls izsj.kk ysdj vke turk ds fy, lkfgfR;d jpukvksa dk l`tu fd;kA vlfe;k esa y{ehukFk cst+c#vk] mfM+;k esa Q+dhj eksgu lsukifr] ejkBh esa gfjukjk;.k vkIVs] xqtjkrh esa ueZnk “kadj ueZn vkSj xkso/kZujke f=ikBh] rfey esa osnuk;de fiYybZ rFkk ch0 vkj0 jktkjke v;~;j] rsyxq esa ohjs”k fyaxe iaryq vkSj xqjtkM] ey;kye esa pUnq esuu] mnwZ esa jruukFk lj”kkj] vYrkQ+ gqlsu gkyh

vkSj fgUnh esa HkkjrsUnq gfj”pUnz vkfn us ik”pkR; lkfgR;] fo”ks’kdj vaxzst+h lkfgR; ls izHkkfor gksdj viuh&viuh Hkk’kkvksa esa Lrjh; lkfgR; dh jpuk dhA vkxs pydj vaxzst+h esa Hkh Hkkjrh;ksa us ik”pkR; lkfgR; ls izsj.kk ysdj mPp Lrjh; lkfgR; dk l`tu fd;kA buesa rks#nRr] vjfcUnks] jchUnzukFk VSxksj rFkk ljksftuh uk;Mw us dkO; esa] ekbfdy e/kqlwnu nRr] n”kZu esa foosdkuUn rFkk vjfcUnks us] dFkk lkfgR; esa eqYdjkt vkuUn] vkj0 ds0 ukjk;.k vkfn us vewY; ;ksxnku fn;kA

8-3-6 Hkkjrh; dyk ds fofo/k vk;keksa ij ik”pkR; izHkko

Hkkjrh; dyk ds fofo/k vk;keksa ij O;kid ik”pkR; izHkko iM+kA LFkkiR; dyk esa xksfFkd “kSyh vkSj eqxy&jktiwr LFkkiR; dyk “kSyh dk leUo; fd;k x;kA blds loZJs’B mnkgj.kksa esa dydRrs ds foDVksfj;k esekfsj;y rFkk ubZ fnYyh ds okbljk; jst+hMsUl ¼orZeku jk’Vªifr Hkou½] lsUVªy ysftlysfVo ,lsEcyh ¼laln Hkou½] lfpoky; dk mYys[k fd;k tk ldrk gSA foDVksfj;k eseksksfj;y ij rktegy dh “kSyh dh Li’V Nki gS vkSj tks/kiqj ds mEesn Hkou ij foDVksfj;k eseksfj;y dk izHkko fn[kkbZ nsrk gSA fp=dyk esa jktk jfo oekZ] vcuhUnz ukFk Bkdqj vkSj tseuh jk; dh dyk ij ik”pkR; fp=dyk dk izHkko fn[kkbZ nsrk gSA ve`rk “ksjfxy dh fp=dyk rks iwjh rjg ls ik”pkR; fp=dyk dh vuqd`fr yxrh gSA laxhr ds {ks= esa ik”pkR; laxhr vkSj ok|;U=ksa dks Hkkjrh; laxhr esa lfEEfyr fd;k x;kA gkeksZfu;e tSlk ik”pkR; ok|;U= Hkkjrh; laxhr dk Hkh vfHkUu vax cu x;kA if.Mr mn; “kadj tSls urZdksa us Hkkjrh; u`R; “kSyh vkSj ik”pkR; cSys dk vn~Hkqr leUo; dj [;kfr izkIr dhA vkfHktkR; oxZ esa ik”pkR; u`R; tSls cky:e Mkal iq#’kksa rFkk fL=;ksa ds fy, vke gks x;kA

1- **Hkkjrh; lkfgR; rFkk dyk ds fofo/k vk;keksa ij ik”pkR; izHkko ij ppkZ djsa&**

8-3-7 vke tu&thou i)fr ij ik"pkR; izHkko

Hkkjrh;ksa us ik"pkR; os"kHkw'kk dks mRlkg iwoZd viuk fy;kA dksV] iSV] deht+] VkbZ] LdVZ] xkmu] gSV] twrs] lSf.MYl] xkWfxYl vkfn Hkkjrh; os"kHkw'kk dk vUrjax vax cu x,A ik"pkR; izHkko ds dkj.k "kgjh efgykvksa esa insZ dk pyu cgqr de gks x;kA efgykvksa ds izlk/kuksa esa Øhe] ikmMj] fyifLVd] :t+] lsUV~l] lksi vkfn dks "kkfey fd;k x;kA [kku&iku esa czsM] dsd] isLVªh] fcfLdV~l] vkblØhe] fons"kh "kjkc] flxjsV] flxkj dk iz;ksx fd;k tkus yxkA ?kjksa esa ik"pkR; "kSyh dh est+] dqflZ;ka] lksQ+s] Mªsflax VsfcYl vkfn j[ks tkus yxsA cksypky dh Hkk'kk esa vaxzst+h "kCnksa dk iz;ksx vke gks x;k vkSj vaxzst+h dks lH; lekt esa loksZifj LFkku feykA Hkkjr esa xzsxksfj;u dSys.Mj dks viuk fy;k x;k tks fd vkt Hkh izpfyr gSA

Lo ewY;kadu gsrq iz"u

fuEufyf[kr fo'k;ksa ij laf{kIr fVIi.kh fyf[k,%

1- ¼d½ ;qok caxky vkUnksyu dh fopkj/kkjk ij ik"pkR; fopkjdksa dk izHkkoA

¼[k½ Hkkjrh; thou i)fr ij ik"pkR; izHkko A

2- uhps fy[ks iz"uksa ds mRrj nhft,A

¼i½ eSdkWys dh f"k{kk i)fr dc ykxw dh xbZ\

¼ii½ foDVksfj;k eseksfj;y dgka ij fLFkr gS\

8-4 iz"kklfud] vkfFkZd rFkk jktuhfrd {ks= esa fczfV"k izHkko

8-4-1 iz"kklfud {ks= esa fczfV"k izHkko

vaxzst+ksa us Hkkjr dks ,dlw= esa cka/kkA leLr lkezkT; esa ,d lh iz"kklfud O;oLFkk] U;k; O;oLFkk] Mkd&rkj lsok] ,d lh f"k{kk iz.kkyh] eqnzk iz.kkyh] ,d laxfBr lsuk] jsyos ds :i esa iwjs ns"k dks tksM+us okyh ;krk;kr O;oLFkk] iwjs ns"k esa lM+dksa

dk tky] jkt Hkk'kk vkSj leLr jk'Vª ds lEHkzkUr oxZ dh lEidZ Hkk'kk ds :i esa vaxzst+h dk migkj vaxzst+h "kklu dh nsu FkhA

Hkkjr ds vk/kqfudhdj.k esa fczfV"k iz"kklu dk egRoiw.kZ ;ksxnku jgk gSA vaxzst+ksa us Hkkjr dks e/;dkyhu fujadq"k jktrU= rFkk lkeUrh O;oLFkk ds LFkku ij ,d lqO;ofLFkr "kklu iz.kkyh nhA izkjfEHkd vlQy iz;ksxksa ds ckn ykWMZ dkWuZokfyl ds "kklu dky esa "kfDr ds foHkktu ds fl)kUr ds vk/kkj ij ftyk/kh"k dks U;k; iz"kklu ds dk;Z ls eqDr fd;k x;kA mlds "kkludky esa fczfV'k iz'kklu ds rhu izeq[k LrEHkksas& bf.M;u flfoy lfoZl] Hkkjrh; lsuk rFkk iqfyl dk fodkl fd;k x;kA bf.M;u flfoy lfoZl dks vkn"kZ ekudj gh LorU= Hkkjr esa bf.M;u ,MfefuLVªsfVo lfoZl dk xBu fd;k x;kA blh izdkj LorU= Hkkjr esa fczfV"kdkyhu iqfyl O;oLFkk dks T;ksa dk R;ksa viuk fy;k x;kA dkuwu dh n`f"V esa lHkh dks lekurk iznku dh tkus okyh vaxzst+h U;k;&O;oLFkk dks Hkh LorU= Hkkjr esa viuk;k x;kA fczfV"k "kklu esa LFkkfir lqizhe dksVZ rFkk gkbZ dksVZ~l Hkh Hkkjr dh LorU=rk izkfIr ds ckn iwoZor cus jgsA

bf.M;u flfoy lfoZl] iqfyl lsok rFkk U;k; O;oLFkk lHkh esa yky Q+hrk"kkgh vkSj Hkz'Vkpkj dk cksyckyk jgk vkSj nqHkkZX; ls vkt Hkh ge ml fczfV"k fojklr dks <ks jgs gSaA

vaxzst+ksa us Hkkjrh; lsuk dk vk/kqfudhdj.k fd;kA lsuk dks vk/kqfud vL=&"kL=ksa ls ;qDr fd;k x;kA lSfud vuq"kklu dh ,d uohu ijEijk izkjEHk dh xbZA lsuk esa /keZ rFkk tkr&ikar ds cU/ku lekIr dj fn, x,A ukS lsuk rFkk ok;q lsuk dk Hkh xBu fd;kA fczfV"k "kklu dh ;g ,d cgqr cM+h nsu gS fd mlus LorU= Hkkjr dks ,d laxfBr] vuq"kkflr] leFkZ ,oa vius drZO;ksa ds izfr izfrc) Fky lsuk] ukS lsuk ,oa ok;q lsuk iznku dhA

8-4-2 vaxzst+ksa dh QwV Mky dj "kklu djus dh uhfr ds nq[kn ifj.kke

Hkkjr eas lkEiznkf;drk ds fodkl esa fczfV"k "kklu dh fu.kkZ;d Hkwfedk jgh gSA Hkkjr esa "kklu djrs le; vaxzst+ksa dh la[;k dHkh Hkh 2 yk[k 50 gt+kj ls vf/kd ugha gqbZA ,slh fLFkfr esa mUgksauss QwV Mky dj "kklu djus dh uhfr viukbZA mUgksaus

Hkk'kk] /keZ] jktuhfrd vf/kdkj vkSj vkfFkZd {ks= esa fgUnw&eqfLye fooknksa dks c<+kok fn;kA lj lS;n vgen [kku dks vR;f/kd egRo nsus dh "kq:vkr ls ysdj fgUnqvksa vkSj eqlyekuksa dk ckaVus ds fy, caxky dk foHkktu djus] 1909 ds bf.M;u dkmaflYl ,DV esa eqlyekuksa dks lkEiznkf;d izfrfuf/kRo nsus] 1935 ds xouZesUV vkWQ bf.M;k ,DV esa eksgEen vyh ftUuk dh 14 lw=h ekaxksa esa ls yxHkx lHkh dks eku ysus] 1945 esa eqfLye yhx ds fojks/k ij f"keyk lEesyu dks Hkax djus] 16 vxLr] 1946 dks ikfdLrku dh ekax dks ysdj eqfLye yhx ds izR;{k dk;Zokgh fnol ds QyLo:i mHkjs lkEiznkf;d naxksa ds le; mUgsa jksdus dk dksbZ iz;kl u djus vkSj vUrr% ikfdLrku dh LFkkiuk dh eqlyekuksa dh ekax dks Lohd`r djus ds ihNs vaxzst+ksa dh lkEiznkf;drk dh uhfr dk gkFk FkkA vaxzst+ksa us lkEiznkf;drk dh Hkkouk dks dsoy fgUnw vkSj eqlyekuksa ds chp ugha HkM+dk;k cfYd fgUnw vkSj fl[k leqnk;ksa vkSj lo.kZ rFkk nfyr fgUnqvksa ds chp Hkh HkM+dk;kA Hkkjr dh jktuhfrd ,drk] lkekftd ,oa lkaLd`frd lkSgknZ dks u'V djus ds fy, ljdkj }kjk viukbZ xbZ gj uhfr esa fo?kVudkjh rRoksa dks c<+kok fn;k x;kA lsuk dh ubZ O;oLFkk eas lSfudksa dks tkfr] {ks= vkfn ds uke ij ckaV fn;k x;kA d+kSeh ,drk] /kkfeZd ,oa tkrh; ln~Hkko dks jksdus dk gj lEHko iz;kl fd;k x;kA mRrj Hkkjrh;ksa rFkk nf{k.k Hkkjrh;ksa esa QwV Mkyus ds fy, vk;Z vkSj vuk;Z ds elys ij cgl NsM+ nh xbZA tux.kuk esa ns"kokfl;ksa ds /keZ] tkfr] vkSj Hkk'kk dk fooj.k Hkh tksM+k x;kA Hkk'kk fooknksa dks c<+kok fn;k x;kA /keZ vkSj tkfr ij vk/kkfjr Ldwy vkSj dkWyst LFkkfir fd, x,A bl uhfr us "kgjh vkSj xzkeh.k oxZ] vaxzst+h f"k{kk izkIr rFkk Hkkjrh; Hkk'kkvksa ds ek/;e ls f"k{kk izkIr oxZ] m|ksxifr vkSj Jfed oxZ] fdlku vkSj t+ehankj ds chp esa nhokj [kM+h djus esa viuk ;ksxnku fn;kA bl fo?kVudkjh uhfr ds dqifj.kke dsoy Hkkjr ds foHkktu rd gh ugha jgs] vkt Hkh ge bl fo'kcsy ds t+gjhys Qy [kkus ds fy, foo"k gks jgs gSaA

2- vaxzst+ksa dh QwV Mky dj "kklu djus dh uhfr ds D;k ifj.kke fudys&

8-4-3 vkfFkZd {ks= esa fczfV”k izHkko

vaxzst+h “kklu ls iwoZ Hkkjr iwjs fo”o dk lcls /kuh ns”k FkkA O;kikj lUrqyu lnSo mlds i{k esa jgrk Fkk ijUrq vaxzst+ksa us le`) Hkkjr dks nfjnz cuk fn;kA 1700 esa Hkkjr esa fo”o ds dqy mRiknu dk 23-1 izfr”kr mRiknu gksrk Fkk tks 1820 esa ?kVdj 15-7 izfr”kr vkSj 1890 esa ?kVdj 11 izfr”kr jg x;kA Hkkjr dh LorU=rk ds le; ;g 4 izfr”kr ls Hkh de gks x;k FkkA iwjs fczfV'k 'kkludky ds nkSjku vf/kdrj Hkkjrh; Hkq[kejh dh dxkj ij jgrs FksA fczfV'k vkfFkZd 'kks"k.k] ns'kh m|ksxksa dk iru] mudh txg ysus esa vk/kqfud m|ksxksa dh foQyrk] djksa dk Hkkjh cks> vkSj Hkkjr dk /ku fczVsu dks fujUrj Hkstk tkuk] d`f"k&fodkl dh mis{kk vkfn us Hkkjrh; vFkZ&O;oLFkk dks fcydqy fiNM+k gqvk cuk fn;k FkkA fczfV'k Hkkjrh; ljdkj us Hkkjr ds vkS|ksfxd fodkl ds fy, dksbZ dne ugha mBk;kA Hkkjrh;ksa dks rduhdh izf'k{k.k vkSj uotkr Hkkjrh; m|ksx dks laj{k.k nsus ds LFkku ij ljdkj us eqDr O;kikj dh bdrjQ+k uhfr viuk dj Hkkjrh; m|ksx dh izxfr dks tkucw> dj /khek fd;k rkfd fczfV'k m|ksx dks Hkkjrh; ckt+kj ij izHkqRo LFkkfir djus esa vkSj baXyS.M ds dkj[kkuksa ds fy, Hkkjr ls dPpk eky izkIr djus esa dksbZ dfBukbZ u gksA 1947 esa yxHkx 33 djksM+ dh vkcknh esa dqy 22 yk[k yksx gh vk/kqfud m|ksx esa yxs FksA m|ksx /ak/ks pkSiV gks tkus ls d`f"k ij vf/kd cks> iM+k xzkeh.k csjkst+xkjh c<+h vkSj xzkeh.kksa dh vkSlr vk; esa deh gksus ls og dtZ+ ysdj lwn[kksjksa ds f'kdats esa Qalrs pys x,A

fczfV'k 'kkldksa dh viO;;rk ¼okbljk; dk osru 25000 ikWUM okf’kZd] xouZjksa dk 10000 ikWUM okf’kZd Fkk tcfd ,d njksxk dk 300 #i;s okf’kZd vkSj ,d vnZyh dk osru 36 #i;s okf’kZd FkkA½] /ku ds vleku forj.k] Hkkjrh; 'kkldksa] t+ehankjkaas] iwathifr;ksa] egktuksa vkSj O;kikfj;ksa ds “kks’k.k us turk dks nfjnz cukus esa ;ksxnku fn;k FkkA nknk HkkbZ ukSjksth dh iqLrd *ikWoVhZ ,.M vu&fczfV'k :y bu bf.M;k* esa Hkkjr ds vkfFkZd nksgu ds dqifj.kkeksa dk mn~?kkVu fd;k x;k gSA mUuhloha 'krkCnh ds mRrjk/kZ esa Hkkjr esa yxHkx chl vdky iM+s A fczfV'k ys[kd fofy;e fMXch ds vuqlkj 1854 ls 1901 rd vdkyksa esa ejus okyksa dh la[;k 2 djksM+ 88 yk[k FkhA

fczfV”k “kklu dky esa dqy 24 vdky iM+s Fks ftuesa vf/kdka”k ekuo fufeZr FksA ,d rFkkdfFkr lH; ljdkj us vdky ds le; esa vukt dk fu;kZr fd;k vkSj jktdh; mRloksa ds HkO; vk;kstu fd,A MCyw-MCyw- gaVj ds vuqlkj yxHkx 4 djksM+ Hkkjrh;ksa dks HkjisV Hkkstu ugha feyrk FkkA csjkst+xkjh] cgqr de osru] izfrdwy dk;Z&ifjfLFkfr;ka] dqiks"k.k] vf'k{kk] egkekjh] xanxh] dqjhfr;ka ;g lc xjhch ds dkj.k gh Qy&Qwy jgs FksA [kqn dks lH; dgus okys vaxzst+ksa us Hkkjr dh le`f) fupksM+ dj mlds fuokfl;ksa dks i'kqor thou O;rhr djus ds fy, foo'k fd;k FkkA ;g fczfV'k vkSifuosf'kd 'kklu dh gh nsu Fkh fd Hkkjr nqfu;k ds lcls fiNM+s vkSj xjhc ns'kksa esa fxuk tkus yxk FkkA

3- vkfFkZd {ks= esa fczfV”k izHkko ij ppkZ dhft,&

8-4-4 jktuhfrd {ks= esa fczfV”k izHkko

vaxzst+ksa us Hkkjr esa vjktdrk] v”kkfUr vkSj vukpkj lekIr dj ,d lqO;ofLFkr “kklu LFkkfir djus dk nkok fd;k FkkA mUgksaus lkekftd U;k;] lcdks mUufr ds leku volj] vfHkO;fDr dh LorU=rk] ukxfjd vf/kdkj] /keZfuisZ{krk] yksd&dY;k.kdkjh “kklu dh vo/kkj.kk vkSj yksdrkfU=d iz.kkyh ls Hkkjrh;ksa dk ifjp; djk;kA 1858 ds egkjkuh foDVksfj;k us vius ?kks’k.kk i= esa fczfV”k iztk vkSj Hkkjrh; iztk] viuh nksuksa gh lUrkuksa esa HksnHkko u djus dk vk”oklu fn;k FkkA vc vaxzst+ Lo;a jktuhfrd ,oa iz”kklfud {ks= esa Hkkjrh;ksa dh Hkkxhnkjh ds bPNqd FksA izcq) Hkkjrh; jktk jkeeksgu jk; vkSj xksikygfj ns”keq[k yksdfgroknh ds dky ls gh jktuhfrd lq/kkjksa dh ekax dj jgs FksA 1861 bf.M;u dkmaflYl ,DV ds “kklu esa Hkkjrh;ksa dh fgLlsnkjh izkjEHk gqbZ vkSj ykWMZ fjiu ds “kkludky esa 1882 ds yksdy lsYQ+ xouZesUV ,DV ls ftyk ifj’kn rFkk uxjikfydk ds Lrj ij Hkkjrh;ksa Lo”kklu iznku dj fn;k x;kA bl lq/kkj ls yxk fd tYn gh Hkkjr esa mRrjnk;h “kklu dh LFkkiuk dj nh tk,xh ijUrq okLrfodrk esa ;g mRrjnk;h ljdkj ds uke ij ,d >qu>quk ek= FkkA

Hkkjrh; jk’Vªh; dkaxzsl dh LFkkiuk esa Lo;a ljdkj us viuk lg;ksx fn;k Fkk fdUrq “kh?kz gh mldk dkaxzsl ds izfr }s’kiw.kZ O;ogkj gksus yxkA fczfV”k “kklu dh ;g foMEcuk Fkh fd mlus ftu mnkj ,oa izxfr”khy fopkjksa ls Hkkjrh;ksa dks ifjfpr djk;k Fkk] mUgha ij vk/kkfjr Hkkjrh;ksa dh jktuhfrd ,oa laoS/kkfud ekaxksa dks dqpyus esa mlus viuh iwjh “kfDr yxk nhA izFke fo”o;q) ds izkjEHk esa fe= jkT;ksa us ;g nkok fd;k Fkk fd oks yksdrU= ewY;ksa dh j{kkFkZ ;q) esa Hkkx ys jgs gSa vkSj blh Hkkouk ls 1917 esa ekWUVsX;w dh ?kks’k.kk dh xbZ Fkh ftlesa Hkkjrh;ksa dh Lo”kklu dh ekax dks fl)kUrr% Lohdkj dj fy;k x;k Fkk fdUrq ;q) lekIr gksrs gh ;q) esa fu’Bkoku lg;ksxh jgs Hkkjr dks migkj esa jkWyV ,DV rFkk tfy;kaokyk ckx gR;kdk.M fn, x,A vaxzst+h “kklu dk jktuhfrd izHkko jktuhfrd neu rd lhfer jgkA jaxHksn] tkfrHksn] vkfFkZd nksgu] lkEiznkf;drk dh Hkkouk dks HkM+dkuk] izsl ij izfrcU/k] vius gh cuk, gq, dkuwu dks rksM+uk ¼[kqnhjke cksl us 1908 esa tt fdaXlQ+ksMZ dh txg vutkus esa dsusMh ifjokj dh ,d efgyk vkSj ,d cPph dh gR;k dj nh Fkh] rc og ukckfyx Fkk vkSj fczfV”k dkuwu esa ukckfyx dks e`R;q n.M fn, Tkkus dk izko/kku ugha Fkk ijUrq mls bl ?kVuk ds dqN gh eghuksa ckn Qkalh ij p<+k fn;k x;kA½ vkSj lq/kkjksa ds izLrkoksa dks ,sls izLrqr djuk fd mu ij vey gks gh u lds] ;gh fczfV”k “kklu dh jktuhfrd {ks= esa Hkkjr dks nsu FkhA

vaxzst+ksa dks bl ckr dk Js; fn;k tkrk gS fd mUgksaus Hkkjr dks dwie.Mwdrk ls fudky dj “ks’k fo”o ls ifjfpr djk;k mls e/;dkyhu fiNM+siu ls vk/kqfud izxfr”khy ;qx esa izfo’V djk;kA mldh /kkfeZd] lkekftd dqjhfr;ksa dks nwj fd;k vkSj vk/kqfud f”k{kk dk izpyu fd;kA ijUrq bu dkeksa dk tks ewY; vaxzst+ksa us Hkkjr ls olwyk og fo”o bfrgkl esa viuk dksbZ lkuh ugha j[krkA

4- jktuhfrd {ks= esa fczfV”k “kklu dk D;k izHkko iM+k\ fyf[k;s&

Lo ewY;kadu gsrq iz”u

fuEufyf[kr fo'k;ksa ij laf{kIr fVIi.kh fyf[k,%

1- ¼d½ vaxzst+ksa dh fgUnw&eqfLye oSeuL; c<+kus dh uhfrA

¼[k½ Hkkjrh; m|ksx dh voufr ds fy, fczfV"k ljdkj dk nkf;RoA

2- uhps fy[ks iz"uksa ds mRrj nhft,A

¼i½ bf.M;u flfoy lfoZl dk xBu fdl xouZj tujy ds dky esa gqvk\

¼ii½ Hkkjr ds okbljk; dk okf'kZd osru fdruk fu/kkZfjr fd;k x;k Fkk\

8-5 Lkkj la{ksi

vaxzst+ksa ds lEidZ esa vkus ds ckn Hkkjrh;ksa dks viuh /kkfeZd&lkekftd dqjhfr;ksa] rFkk fod`fr;ksa ds vkykspukRed fo"ys'k.k djus dh izsj.kk feyhA casFke ds vuq;k;h mi;ksfxrkokfn;ksa us Hkkjr dh /kkfeZd&lkekftd dqjhfr;ksa] "kSf{kd fiNM+siu dks nwj djus ds fy, lks"ky ysftlys"ku dh uhfr viukbZ rFkk /keZfuisZ{k vaxzst+h f"k{kk dk fodkl fd;kA fczfV"k "kklu esa fL=;ksa dh fLFkfr esa lq/kkj vk;kA tkr&ikar ds cU/kuksa esa f"kfFkyrk vkbZ vkSj ,d u, izHkko"kkyh e/;e oxZ dk mn; gqvkA

ik"pkR; f"k{kk izkIr igyh ih<+h dk vius /keZ] lkekftd ijEijkvksa] jhfr fjoktksa] os"kHkw'kk] [kku&iku] f"k'Vkpkj ds izfr voKk dk Hkko mRiUu gqvkA vaxzst+ksa us tkucw> dj rduhdh f"k{kk ds izlkj dh mis{kk dhA

Hkkjr esa izsl us ns"k ds lkekftd] vkfFkZd ,oa jktuhfrd mRFkku esa vHkwriwoZ ;ksxnku fn;kA 19 oha "krkCnh ds izkjEHk ls gh Hkkjrh; lkfgR;dkjksa ij ik"pkR; izHkko n`f'Vxkspj gksus yxk FkkA Hkkjrh; dyk ds fofo/k vk;keksa ij O;kid ik"pkR; izHkko iM+kA Hkkjrh;ksa us ik"pkR; os"kHkw'kk] [kku&iku] izlk/ku vkfn dks viuk fy;kA

vaxzst+ksa us Hkkjr dks ,dlw= esa cka/kkA leLr lkezkT; esa ,d lh iz”kklfud O;oLFkk] U;k; O;oLFkk] Mkd&rkj lsok] ,d lh f”k{kk iz.kkyh] eqnzk iz.kkyh] ,d laxfBr lsuk] jsyos ds :i esa iwjs ns”k dks tksM+us okyh ;krk;kr O;oLFkk] iwjs ns”k esa lM+dksa dk tky] jkt Hkk’kk vkSj leLr jk’Vª ds lEHkzkUr oxZ dh lEidZ Hkk’kk ds :i esa vaxzst+h dk migkj vaxzst+h “kklu dh nsu FkhA vaxzst+ksa us Hkkjrh; lsuk dk vk/kqfudhdj.k fd;kA

Hkkjr eas lkEiznkf;drk ds fodkl esa fczfV”k “kklu dh fu.kkZ;d Hkwfedk jgh gSA vaxzst+ksa us le`) Hkkjr dks nfjnz cuk fn;kA vaxzst+h “kklu dk jktuhfrd izHkko jktuhfrd neu rd lhfer jgkA fdUrq vaxzst+ksa us Hkkjrh;ksa dks yksdrkfU=d iz.kkyh ls ifjfpr Hkh djk;kA

8-6 ikfjHkkf’kd “kCnkoyh

xzsVSLV lyst+j Q+kWj xzsVsLV uEcj% vf/kdre O;fDr;ksa dks T;knk ls T;knk lq[k ¼cgqtu fgrk; cgqtu lq[kk;½A

d+kfcys t+Crh% t+Cr djus ;ksX;A

[kCrh% ikxy

eksgT+t+c% lH;A

eqd+kfcy% lkeusA

8-7 lUnHkZ xzaFk

fnudj] jke/kkjh flag & *laLd`fr ds pkj v/;k;*] bykgkckn] 1984

vkt+kn] vcqy dyke & *bf.M;k foUl ÝhMe*] dydRrk] 1959

etwenkj] vkj0 lh0 ¼lEiknd½ & *LVªxy Qk+Wj ÝhMe*] cEcbZ] 1969

nslkbZ] uhjk & *okseSu bu ekWMuZ bf.M;k*] cEcbZ] 1957

etwenkj] vkj0 lh0 ¼lEiknd½&*fczfV”k iSjkekmaV~lh ,.M bf.M;u fjuslk*] nks Hkkxksa es]

cEcbZ] 1965

8-8 Lo ewY;kafdr iz"uksa ds mRrj

1- ¼d½ nsf[k, 3-3-3 Hkkjrh; uotkxj.k esa ik"pkR; f"k{kk ds izpyu dk ;ksxnkuA

¼k½ nsf[k, 3-3-7 vke tu&thou i)fr ij ik"pkR; izHkkoA

2-¼i½ 1835 esaA ¼ii½ dydRrk esaA

1- ¼d½ nsf[k, 3-4-2 vaxzst+ksa dh QwV Mky dj "kklu djus dh uhfr ds nq[kn ifj.kkeA

¼k½ nsf[k, 3-4-3 vkfFkZd {ks= esa fczfV"k izHkkoA

2- ¼i½ ykWMZ dkWuZokfyl ds "kkludky esaA ¼ii½ 25000 ikWUM okf'kZdA

8-9 vH;kl iz"u

1- Hkkjr esa lekt lq/kkj vkUnksyu esa fczfV"k Hkkjrh; ljdkj dh D;k Hkwfedk Fkh\
2- ik"pkR; lH;rk dh va/kh udy djus okys Hkkjrh;ksa ij ijEijkokfn;ksa us fdl izdkj izgkj fd,\
3- Hkkjr ds vk/kqfudhdj.k esa fczfV"k Hkkjrh; "kklu dh Hkwfedk dk vkdyu dhft,A
4- fczfV"k Hkkjrh; "kklu }kjk Hkkjr dks nh xbZ iz"kklfud fojklr dh egRrk dk vkdyu dhft,A
5- vaxzst+ksa us Hkkjr dh ijEijkxr ,drk ij fdl izdkj vk?kkr fd;k\

इकाई नौ

देश का विभाजन और स्वतन्त्र भारत की चुनौतियां

9.1 प्रस्तावना

9.2 उद्देश्य

9.3 देश का विभाजन

9.4 स्वतंत्र भारत की चुनौतियाँ

- **9.4.1** संविधान का निर्माण
- **9.4.2** शरणार्थियों का पुनर्वास
- **9.4.3** भारतीय रियासतों का विलय
- **9.4.4** भाषा-विवाद
- **9.4.5** आर्थिक नीति का निर्माण

9.5 सारांश

9.6 तकनीकी शब्दावली

9.7 स्वमूल्यांकित प्रश्नों के उत्तर

9.8 संदर्भ ग्रन्थ सूची

9.9 सहायक उपयोगी पाठ्य सामग्री

9.10 निबंधात्मक प्रश्न

9.1 प्रस्तावना

15 अगस्त 1947 को भारत को ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता प्राप्त हो गई. भारत की स्वतंत्रता का जो संघर्ष 1857 के विद्रोहियों ने छेड़ा था और उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशकों से राष्ट्रवादी जिसके लिये अनवरत संघर्ष चला रहे थे, यह उसकी परिणति थी. आज़ादी का सपना केवल पढ़े-लिखे मध्यवर्ग का सपना नहीं था, बल्कि भारत के गाँवों में रहने वाले करोड़ो किसानों, खेतों एवं उद्योगों में काम करने वाले मजदूरों, औपनिवेशिक शोषण से क्षुब्द आदिवासियों, सदियों से शोषित दलित वर्गों, हिन्दुओं-मुसलमानों तथा दूसरे अनेक वर्गों एवं समूहों ने स्वतंत्रता के लिये संघर्ष किये थे. ब्रिटिश औपनिवेशिक शोषण ने भारत के सभी वर्गों एवं समूहों को प्रभावित किया था. साथ ही, आधुनिक शिक्षा एवं आधुनिक संस्थाओं (विधायिका, न्यायपालिका, प्रेस आदि) ने भारतीयों में आधुनिक चेतना जगाने में अहम भूमिका निभाई थी. इस दोहरी प्रक्रिया ने जहाँ स्वतंत्रता के संघर्ष को ऊर्जा दी, वहीं विभिन्न वर्गों को राजनीतिक हिस्सेदारी की मांग के लिये प्रेरित किया. 1857 के बाद से ही ब्रिटिश राज ने 'बाँटो और राज करो' की रणनीति अपना ली थी. बीसवीं सदी में अधिक स्पष्ट रूप से अंग्रेज़ सरकार ने पहले मुसलमानों, फिर दलितों को राष्ट्रीय आन्दोलन से पृथक रखने के भरसक प्रयास किये. ये प्रयास इन वर्गों को राजनीतिक संस्थाओं में पृथक निर्वाचन का अधिकार देकर किये जा रहे थे. फलत: जहाँ एक ओर राष्ट्रीय आन्दोलन में विभिन्न समूहों की भागीदारी थी, वहीं ये समूह आपस मे सतत संघर्षरत भी थे. हिन्दुओं और मुसलमानों के राजनीतिक वर्चस्व के ऎसे संघर्षों ने परतंत्र भारत में ही साम्प्रदायिकता की भावना को जन्म दिया. भारत का विभाजन इस साम्प्रदायिक भावना की अभिव्यक्ति का ही एक परिणाम था. परंतु, साम्प्रदायिक समस्या का समाधान नही हो सका और स्वतंत्र भारत की अनेक चुनौतियों में यह एक प्रमुख समस्या बनी रही. जातिवाद, भाषावाद एवं क्षेत्रवाद स्वतंत्र भारत की अन्य समस्यायें थी, जो पहचान की राजनीति से जुड़ी थीं. फिर भी, सबसे महत्वपूर्ण चुनौती थी भारत का आर्थिक पुनर्निमाण.

9.2 उद्देश्य

इस अध्याय में सर्वप्रथम हम भारत के विभाजन की चर्चा करेंगे. ब्रिटिश भारत का विभाजन जहाँ एक ओर अंग्रेज़ी सरकार की विभाजनकारी नीति का परिणाम था, वहीं साम्प्रदायिकता की चरम अभिव्यक्ति भी था. फिर भी, इतिहासकार इस बात पर एकमत नही हैं कि भारत के विभाजन को टाला जा सकता था या नहीं. 1940 के दशक के तीव्र राजनीतिक घटनाक्रम में, जिसकी चर्चा पिछले अध्यायों में हो चुकी है, विभाजन की प्रक्रिया को ढूँढा जा सकता है. निश्चय ही, भारत में विभाजन के तत्कालीन एवं दूरगामी परिणाम रहे. इसने बड़े पैमाने

पर विस्थापन को जन्म दिया. आज़ाद भारत में शरणार्थियों को आवास एवं रोज़गार उपलब्ध कराना एक मुख्य समस्या बन गया. महिलाओं, निम्नजातियों और आदिवासियों को स्वतंत्र भारत मे वास्तविक आज़ादी दिलाना भी कम चुनौतीपूर्ण नहीं था. स्वतंत्र भारत मे भाषावाद एवं क्षेत्रवाद जैसी नई समस्याओं ने भी जन्म लिया. भारत के अर्थतंत्र को सही दिशा देना सबसे ज्यादा ज़रूरी था ताकि स्वतंत्र भारत का आर्थिक विकास किया जा सके. इस अध्याय में हम इनमें से कुछ समस्याओं एवं इनके समाधान के लिये किये गये प्रयासों को पढेंगे.

9.3 देश का विभाजन

भारत में आज़ादी की सुबह देश विभाजन की रात्रिबेला साथ लेकर आई. प्रसिद्ध वामपंथी कवि फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ ने इस दर्द को शब्दों में इसतरह अभिव्यक्त किया – ***"ये दाग़-दाग़ उजाला ये शबगज़ीदा सहर, वो इंतेज़ार था जिसका ये वो सहर तो नही."*** निश्चय ही भारत की स्वतंत्रता की जो कल्पना राष्ट्रवादियों ने की थी, विभाजन की त्रासदी ने उसको गहरे से प्रभावित किया था. राष्ट्रवादी स्वतंत्रता संघर्ष को एक दिशा एवं रणनीति देने वाले महात्मा गाँधी बंगाल के नोआखली में भीषण दंगों को शांत करने के प्रयास मे आमरण अनशन कर रहे थे. वहीं उनके राजनीतिक उत्तराधिकारी जवाहरलाल नेहरू स्वतंत्र भारत को एक धर्मनिरपेक्ष देश बनाने के लिये अपनी ही पार्टी के लोगों को समझाने का प्रयास कर रहे थे. भीषण दंगों का आरम्भ 16 अगस्त 1946 को कलकत्ता से हुआ, जिस दिन मुस्लिम लीग ने 'सीधी कार्यवाही दिवस' घोषित कर रखा था. सितम्बर में बम्बई, अक्टूबर मे पूर्वी बंगाल और बिहार भी दंगे की चपेट में आ गये. नवम्बर में उत्तर प्रदेश के गढ़मुक्तेश्वर में भीषण दंगे हुए. मार्च 1947 में पंजाब प्रांत, जहाँ अभी तक ख़िज्र हयात खान और उनकी यूनियनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में मिली-जुली सरकार पंजाब के विभाजन के विरूद्ध एक आशा थी, दंगों की आग में झुलस गया. मार्च के आरम्भ में यूनियनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में कांग्रेस और अकालियों के सहयोग से बनी मिली-जुली सरकार का पतन पंजाब में मुस्लिम लीग और उसकी विभाजन की मांग की सबसे बड़ी सफलता थी. अभी एक पखवाड़ा पहले ही ब्रिटिश प्रधानमंत्री लार्ड एटली ने हाउस ऑफ कॉमन्स में बोलते हुए जून 1948 तक सत्ता-हस्तांतरण की बात की थी. इस उद्देश्य को पूरा करने के लिये प्रधानमंत्री ने लार्ड वेवेल के स्थान पर लार्ड माउण्टबेटन को भारत का नया गवर्नर जनरल बनाने की घोषणा भी की थी. माउण्टबेटन ने भारत आने के पश्चात तुरंत ही भारतीय नेताओं से बातचीत आरम्भ कर दी. 24 मार्च से 6 मई 1947 तक चली चर्चाओं के बाद 'प्लान बाल्कन' नाम से जो योजना माउण्टबेटन ने रखी, उसमें भारत के असंख्य विभाजनो की सम्भावना छिपी थी. इसमें सत्ता का हस्तातरण विभिन्न प्रांतों को करने का खतरनाक सुझाव शामिल था. जवाहरलाल नेहरु के तीखे विरोध पर इस योजना को त्याग दिया गया. वी.पी. मेनन

एवं सरदार पटेल ने वैकल्पिक प्रस्ताव दिया, जिसमें भारत और पाकिस्तान की दो केन्द्रीय सरकारों को सत्ता हस्तांतरण किया जाना था. इसी प्रस्ताव पर विभिन्न दलों – कांग्रेस, लीग, अकाली – के मध्य सहमति बन गई और 2 जून को भारत विभाजन को संस्तुति मिल गई. परंतु विभाजन ने जनसंख्या विस्थापन की जिस समस्या को जन्म दिया उसकी कल्पना राष्ट्रीय नेताओं ने भी नहीं की थी. आगे हम स्वतंत्र भारत की चुनौतियों में इसकी भी चर्चा करेंगे.

9.4 स्वतंत्र भारत की चुनौतियाँ

जैसा कि हम ऊपर कह चुके है, राष्ट्रवादी स्वतंत्रता संघर्ष भारत के विभिन्न वर्गों का मिलाजुला एवं सम्मिलित संघर्ष था. फिर भी यह मानना भूल होगी कि भारत का एक राष्ट्र के रूप में निर्माण हो चुका था. स्वतंत्रता संघर्ष ने राष्ट्र बनने की प्रक्रिया को तेज तो किया था परंतु यह प्रक्रिया अभी भी अधूरी ही थी. अत: स्वतंत्र भारत के सामने सबसे बड़ी चुनौती राष्ट्र निर्माण की थी. एक राष्ट्र का निर्माण कुछ बुनियादों पर हो सकता था जिन्हें उस राष्ट्र का भावी आधार बनाया जा सके. अत: सबसे पहली तात्कालिक आवश्यकता थी – एक संविधान का निर्माण, जिसमें भावी राष्ट्र की दिशा दी जाये. इसमें राष्ट्रीय आन्दोलन के उन उसूलों को शामिल करना आवश्यक था जिनके लिये ये संघर्ष किया गया था. अत: लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता तथा सामाजिक न्याय जैसे सिद्धांतों को सम्मिलित किया जाना आवश्यक था. विभाजन से उत्पन्न विस्थापितों के पुनर्वासन की समस्या भी तात्कालिक समस्या थी, जिसका हल शीघ्र निकाला जाना आवश्यक था. औपनिवेशिक काल में भारत ब्रिटिश भारत और रियासतों में विभक्त था. एक राष्ट्र एवं संघ के रूप में भारत कि निर्माण के लिये रियासतों का विलय आवश्यक था. परंतु, भारत के राष्ट्रीय एकीकरण को बड़ी चुनौती रियासतों ने नहीं बल्कि, 1950 के दशक में भाषाई राज्यों की मांग ने दी. भाषाई आधार पर भारत का पुनर्गठन राष्ट्र निर्माण का एक अहम चरण था. फिर भी, भाषावाद केवल क्षेत्रीय समस्या नही थी जैसा कि अक्सर मान लिया जाता है. राष्ट्रभाषा के सवाल ने भी भारतीय राष्ट्र के विशिष्ट चरित्र को स्पष्ट किया. भाषावाद के अलावा क्षेत्रवाद भी एक बड़ी चुनौती थी, जिससे नवोदित राष्ट्र को निपटना पड़ा. पंजाब एवं मद्रास प्रांत ने यदि राष्ट्र के केन्द्रीकरण को चुनौती दी, तो कश्मीर एवं नागालैण्ड की समस्यायें कही अधिक पेचीदा एवं दीर्घकालिक साबित हुई. सबसे महत्वपूर्ण दीर्घकालिक चुनौती थी एक व्यापक अर्थनीति का निर्माण, ताकि सदियों के औपनिवेशिक शोषण से त्रस्त देश को आर्थिक विकास की दिशा दी जा सके. स्वतंत्र भारत को अपनी एक स्वतंत्र विदेश नीति भी निर्धारित करनी थी ताकि राष्ट्रों के संघ में भारतीय राष्ट्र की अपनी पहचान स्थापित हो सके. आगे हम इन सारी चुनौतियों एवं इनके समाधान के लिये किये गये प्रयासों का अध्ययन करेंगे.

9.4.1 संविधान का निर्माण

भारतीय संविधान एवं इसके निर्माण की प्रक्रिया का अध्ययन करने वाले विद्वान ग्रेंविले ऑस्टिन ने भारतीय संविधान को 'राष्ट्र की नींव की ईंट' कहा है. उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि संविधान सभा ने अधिकतर प्रावधान व्यापक विचार-विमर्श के पश्चात एवं आपसी सहमति विकसित कर बनाये. उन्होनें यह भी पाया कि विभिन्न विचारों, जिनमें अक्सर विरोधी तर्क भी होते थे, यथासम्भव समाहित किया गया. इसप्रकार भारत एक ऐसा संविधान बनाने मे सफल रहा जिसके आधार पर राष्ट्र का गठन हो सका.

भारतीय संविधान 26 जनवरी 1950 को लागू कर दिया गया. भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में इस तिथी का महत्वपूर्ण स्थान था. 1950 से ठीक 20 वर्ष पहले परतंत्र भारत ने पहली बार 26 जनवरी को स्वतंत्रता दिवस के रूप मे मनाया था. इससे कुछ माह पूर्व ही 31 दिसम्बर 1929 को जवाहरलाल नेहरु की अध्यक्षता में लाहौर में अखिल भारतीय कांग्रेस ने पहली बार पूर्ण स्वाधीनता की मांग रखी थी, और अगली 26 जनवरी को स्वतंत्रता दिवस मनाने की घोषणा की थी. तभी से यह दिन स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता था. जब 1950 में संविधान लागू कर दिया गया तो, 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाने लगे. यह एक प्रकार से स्वतंत्रता आन्दोलन को नवोदित गणतंत्र द्वारा दी गई मान्यता थी. परंतु, स्वाधीनता संघर्ष का प्रभाव गणतंत्र की तिथी निर्धारण तक सीमित ही नहीं था, बल्कि संविधान के प्रावधानों में राष्ट्रीय आन्दोलन के मूल्यों को समाहित किया गया था.

राष्ट्रवादी आन्दोलन के दौरान ही स्वतंत्र भारत के लिये गणतांत्रिक लोकतंत्र का विचार विकसित हुआ था. 1920 के दशक से ही कांग्रेस वयस्क मताधिकार की मांग भी करती रही थी. फिर भी, भारत में जिस संविधान सभा का गठन किया गया था उसका चुनाव वयस्क मताधिकार के आधार पर नहीं हुआ था. बल्कि, भारतीय संविधान सभा कैबिनेट मिशन के प्रस्तावों के आधार पर चुनी गयी थी. इसका यह अर्थ भी नही था कि सभा भारतीयों का प्रतिनिधित्व नही करती थी. इसके विपरीत संविधान सभा में कांग्रेस सदस्यों का ही बहुमत था, जिनमें से अधिकांश राष्ट्रीय आन्दोलन के नेता थे. संविधान सभा में मुस्लिम एवं सिक्ख सदस्यों को अल्पसंख्यक के तहत विशेष प्रतिनिधित्व प्राप्त था. दूसरे कमजोर वर्गों को प्रतिनिधित्व देने के लिये कांग्रेस ने अपनी लिस्ट में अनुसूचित जातियों, आदिवासियों, महिलाओं, ऐंग्लो-इंडियनों आदि को शामिल करने का प्रयास किया.

संविधान सभा का पहला अधिवेशन 9 दिसम्बर 1946 को आरम्भ हुआ. मुस्लिम लीग के सदस्यों ने इस अधिवेशन का बहिष्कार किया, अत: इसमें 207 सदस्यों ने ही भाग लिया. 11 दिसम्बर को डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को सभा का अध्यक्ष चुना गया और 13 दिसम्बर को जवाहरलाल नेहरु ने उद्देश्य प्रस्ताव रखा. उद्देश्य प्रस्ताव एक प्रकार से भारतीय संविधान के लिये

दिशा-निर्देश था. आजादी के पश्चात संविधान निर्माण के कार्य को विभिन्न कमेटियों को सौंप दिया गया. इसमें सबसे महत्वपूर्ण थी – डॉ. भीमराव अम्बेडकर के नेतृत्व में मसविदा निर्माण की कमेटी. इस कमेटी ने ही संविधान के मूल प्रस्तावों को तैयार किया. इन प्रस्तावों की एक-एक धारा पर व्यापक बहस हुई. अंतत: नवम्बर 1949 तक भारतीय संविधान बन कर तैयार हो गया.

भारतीय संविधान की एक प्रमुख विशेषता केन्द्र और राज्यों के मध्य शक्ति का संतुलन था. भारतीय संविधान को न तो पूरी तरह संघीय कहा जा सकता था और न ही केन्द्रीकृत. ग्रेंविले ऑस्टिन का विचार है कि 'सभा के सदस्यों ने अमेरिका तथा दूसरे महत्वपूर्ण देशों के संघीय संविधानों का अध्ययन करने के पश्चात संघीय सिद्धांत को भारत के अनुकूल नही माना. अत: भारत में जो संघवाद उभरा वह भारतीय आवश्यकताओं के अनुकूल था.' फिर भी, इसका यह अर्थ नही था कि प्रांतीय राज्य भारत में किसी तरह से कमजोर थे. बल्कि, विशेष परिस्थितियों – यथा आपातकाल – के अतिरिक्त केन्द्र को राज्य के मामलों मे हस्तक्षेप का अधिकार नही है. संविधान की दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता – मूल अधिकारों को दिया जाना था. प्रत्येक व्यक्ति के कुछ मूलभूत अधिकार है यह विचार योरोप में आधुनिकता, जनतंत्र एवं स्वतंत्रता जैसे विचारों के साथ ही जन्मा था. भारत में आरम्भ से ही राष्ट्रवादियों ने इनकी मांग रखी थी. 1928 की मोतीलाल नेहरु रिपोर्ट में भी मूल अधिकारों रखा गया था. संविधान नें सात भागों में इन अधिकारों को रखा – समानता का अधिकार, स्वतंत्रता का अधिकार, सम्पत्ति का अधिकार, धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक अधिकार, शोषण के विरुद्ध अधिकार तथा संविधानिक उपचार. इन अधिकारों के द्वारा सभी भारतीय नागरिकों को एकसमान अधिकार तो प्रदान किये गये, साथ ही, अल्पसंख्यकों, दलितों एवं आदिवासियों को राज्य अथवा दूसरे नागरिकों द्वारा भेदभाव या शोषण से मुक्त रखने का प्रयास भी किया गया. इन अधिकारों का उद्देश्य भारतीय नागरिकों को केवल समानता देना नही, अपितु उनके मध्य समानता का विकास करना भी था. भारतीय संविधान की एक अन्य मूल विशेषता धर्मनिरपेक्षता भी थी. राष्ट्रीय आन्दोलन का एक बड़ा लक्ष्य साम्प्रदायिकता से संघर्ष था. अत: धर्मनिरपेक्षता राष्ट्रीय आन्दोलन का एक महत्वपूर्ण तत्व था. हमें यह मानना होगा कि भारतीय धर्मनिरपेक्षता भी पश्चिमी देशों में धर्मनिरपेक्षता के विचार से पर्याप्त भिन्न है. भारतीय संविधान राज्य को धर्मों के मध्य भेद करने से रोकता है. साथ ही, भारत में विभिन्न धर्मों के अपने निजी कानून हैं. हलांकि, भारत जैसी सांस्कृतिक बहुलता के विशिष्ट देश में ये अधिकार देना वास्तव में सांस्कृतिक बहुलता को मान्यता देना ही है. अत: भारत में धर्मनिरपेक्षता का अर्थ धर्म के आधार पर भेदभाव पर रोक के साथ-साथ धार्मिक स्वतंत्रता देना भी है. कुल मिलाकर भारतीय संविधान

एक व्यापक एवं लचीला संविधान है. संविधान सभा के सदस्यों ने भावी भारत के संवैधानिक विकास के लिये संसद को पर्याप्त अधिकार दिये हैं.

9.4.2 शरणार्थियों का पुनर्वास

स्वतंत्र भारत की सबसे महत्वपूर्ण तात्कालिक समस्यायें थी – भारतीय रियासतों का संघ में विलय एवं शरणार्थियों का पुनर्वास. इन दोनों से ही राष्टीय एकता को खतरा था. विभाजन की त्रासदी ने एक बड़ी संख्या में लोगों को बेघर कर दिया था. भारत में तकरीबन साठ लाख शरणार्थी पाकिस्तान में अपना सबकुछ छोड़कर आये हुए थे. इसके अतिरिक्त साम्प्रदायिक दंगों ने भी लोगों को बेघर कर दिया था. 1947 में पश्चिमी पाकिस्तान से आने वाले पंजाबी और सिन्धी लोगों की संख्या पूर्वी पाकिस्तान से आये बंगाली लोगों की संख्या से कही अधिक थी. उनकी समस्यायें भी कहीं जटिल थी. जहाँ पंजाब से शरणार्थी एक ही बार भारत विभाजन के समय आ गये, वहीं पूर्वी बंगाल से विस्थापन तुरंत नही हुआ और ये कई वर्षों तक लगातार चलता रहा. अत: दोनों तरफ से आये शरणार्थियों की समस्यायें एकदम भिन्न थीं. पश्चिमी पाकिस्तान से आयी जनसंख्या को 1951 तक पंजाब, दिल्ली, पश्चिमीं उत्तर प्रदेश तथा राजस्थान में बसा दिया गया. इनमें से कई को बसाने के लिये भारत से पाकिस्तान गये मुसलमानों की सम्पत्ति एवं भूमि देकर बसाया गया. शरणार्थियों द्वारा छोड़ी गई सम्पत्ति को लेकर भारत एवं पाकिस्तान की सरकारों ने एक समझौता भी किया, जिसके तहत इन शरणार्थियों को छोड़ी गई सम्पत्ति पर बसाया गया. परंतु, पूर्वी बंगाल से लगातार आ रहे शरणार्थियों की समस्या एकदम भिन्न थी. एक तो भाषा के कारण उन्हे बंगाल के अलावा केवल आसाम या त्रिपुरा में ही बसाया जा सकता था. दूसरे, बंगाल से शरणार्थी एक झटके में न आकर 1971 तक लगातार आते रहे. अत: उन्हें बसाने के लिये कोई कारगर योजना नही थी और अधिकांश शरणार्थी शहरों में बस गये, जिससे वे निम्नवर्गीय मजदूर बनने के लिये मजबूर थे. साम्प्रदायिक दंगों में विस्थापित हुए लोगों की स्थिति तो और भी दयनीय थी. प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु ही उनके लिये एकमात्र आशा थे. सरकार की कोशिश उन्हें वापस उन्ही के घरों में बसाने की रही. कुल मिलाकर 1950 के दशक में विस्थापितों की समस्या से निपटा जा चुका था.

9.4.3 भारतीय रियासतों का विलय

औपनिवेशिक भारत वस्तुत: ब्रिटिश भारत एवं रियासतों में बटा हुआ था. इन रियासतों को कहने के लिये तो स्वायतता प्राप्त थी, परंतु वे ब्रिटिश सर्वोचता (पैरामॉउण्टेसी) के अंतर्गत आती थी. राष्ट्रवादी आन्दोलन के प्रसार के साथ रियासतों की जनता ने भी राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लिया था. इन रियासतों की जनता का एक बड़ा हिस्सा जनतंत्र और राष्ट्रीय विचारधारा से प्रभावित था. फिर रियासतों को स्वतंत्र छोड़ देने का अर्थ था भारत की राष्ट्रीय एकता को

सीधा खतरा. ये रियासतें राष्ट्र के अन्दर राष्ट्र होती. अत: 1947 में ही भारत सरकार के अंतर्गत एक रियासत विभाग का गठन किया गया तथा इसका कार्यभार वल्लभभाई पटेल, जो गृहमंत्री भी थे, को सौंप दिया गया. राजनयिक रूप से कुशल वी. पी. मेनन को इस विभाग के सचिव की जिम्मेदारी दी गई. पटेल एवं मेनन ने प्रलोभन एवं दबाव की दोहरी नीति चलाई. प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु पहले से ही रियासतों एवं राजाओं के विरोधी माने जाते थे. उन्होंने 1946 में ही ऑल इंडिया स्टेट पीपुल्स कॉनफ्रेंस की अध्यक्षता की थी. अत: भारतीय रियासतों पर विलय के लिये राजनीतिक एवं वैचारिक दबाव था. पहला राज्य बीकानेर था जिसनें पटेल एवं मेनन के आह्वान पर साकारात्मक प्रतिक्रिया दी. यही नही बीकानेर के राजा ने राजस्थान के दूसरे राजाओं से भी संविधान सभा में भाग लेने की अपील की थी. 9 जुलाई 1947 को जवाहरलाल नेहरु पटेल के साथ गवर्नर जनरल मॉउटबेटन से मिले. उसी दिन महात्मा ग़ाँधी ने भी मॉउटबेटन से भेंट की. इन राष्ट्रवादियों ने अपील की कि ब्रिटिश सरकार को भारतीय रियासतों की स्वतंत्रता के विचार को प्रोत्साहन नही देना चाहिये. अब ब्रिटिश सरकार भी कुछ हद तक भारतीय एकता के पक्ष में थी, ताकि भारत में ब्रिटिश निवेशों को सुरक्षित रखा जा सके. इस चौतरफा दबाव के फलस्वरूप 15 अगस्त 1947 के पूर्व ही अधिकांश भारतीय रियासतों ने भारत के साथ विलय के पत्र पर हस्ताक्षर कर दिये. इसमें त्रावणकोर, भोपाल एवं जोधपुर का विलय सबसे चुनौती पूर्ण था. त्रावणकोर और भोपाल ने यथासंभव स्वतंत्र होने के प्रयास किये, वहीं जोधपुर के राजा ने तो पाकिस्तान में विलय पर भी विचार किया. 15 अगस्त के पश्चात केवल जूनागढ़, हैदराबाद एवं कश्मीर राज्य ही भारतीय संघ से बाहर थे. इन्हें कठोर कार्यवाही के पश्चात ही विलय किया जा सका. इस सारी प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण बात जनता का दबाव था, जो अधिकांशत: भारत के साथ विलय के पक्ष में थी. कुल मिलाकर देखा जाये तो रियासतों की ओर से भारतीय संघ को जो चुनौती मिली वह उस खतरे से कहीं छोटी थी, जिसकी संभावना भाषाई राज्यों के गठन की मांग में छिपी थी. इस विषय पर हम आगे चर्चा करेंगे.

9.4.4 भाषा-विवाद

स्वतंत्रता के पश्चात भारत को सबसे बड़ी आंतरिक चुनौती भाषाई पहचान की राजनीति ने दी. हलांकि, साम्प्रदायिकता, जातिवाद एवं वर्गीय संघर्षों ने भी आज़ाद भारत को राजनीतिक आधार पर लगातार व्यस्त रखा. फिर भी, भाषावाद ही संभवत: अकेली ऐसी समस्या थी, जिसने राष्ट्रवादी नेतृत्व के लिये भारतीय विखण्डन की सम्भावना को पुन: उजागर कर दिया. स्वतंत्रता के पूर्व की भाषा के आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की मांग चल रही थी. इस मांग को महात्मा गाँधी एवं राष्ट्रीय कांग्रेस ने भी समर्थन दिया था. यहाँ तक महात्मा गाँधी ने कांग्रेस की राज्य कमेटियों को भाषा के आधार पर पुनर्गठित भी किया था. आजादी के पश्चात आन्ध्र में

भाषाई राज्य की मांग सबसे जोर से उठी. संविधान सभा ने इस विषय पर व्यापक विचार-विमर्श किया था, तथा भाषाई राज्यों के पुनर्गठन की मांग को टाल दिया था. प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु सैधांतिक रूप से तो भाषाई राज्यों के समर्थक थे, परंतु वे तत्कालीन भारत में इसे समयानुकूल नही मानते थे. 1952 के अंत में आन्ध्र में इस मांग को लेकर आमरण अनशन कर रहे पोट्टी श्रीरामालु की मृत्यु नें आन्ध्र में इस आन्दोलन को हवा दे दी. अंतत: भाषा के आधार पर पहला राज्य आन्ध्र प्रदेश अक्टूबर 1953 में अस्तित्व में आ गया. अब भाषाई राज्यों की मांग को रोक पाना असंभव था. 1953 में ही जस्टिस फ़ज़ल अली के नेतृत्व मे एक राज्य पुनर्गठन कमेटी गठित की गई. फ़ज़ल अली कमेटी ने थोड़ा संकोच के साथ भाषाई राज्यों के पुनर्गठन की संस्तुति कर दी. फिर भी, पंजाब एवं बम्बई प्रांत के पुनर्गठन की संस्तुति नही की गई थी. पंजाब के भाषा के आधार पर विभाजन का सवाल सामप्रदायिकता एवं क्षेत्रवादी भावना से भी जुड गया था. अत: नेहरु ने कभी इस राज्य के भाषाई पुनर्गठन की अनुमति नहीं दी. कालांतर में पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश में पंजाब का विभाजन इंदिरा गाँधी की सरकार ने 1967 में किया. बम्बई को एक तीखे आन्दोलन के पश्चात महाराष्ट्र एवं गुजरात प्रांतों में बाटा गया. इन मांगों के दौरान जो आन्दोलन एवं संघर्ष हुए उन्होंने राष्ट्रीय नेतृत्व के समक्ष भारत के सैकडों विभाजन की संभावना पैदा कर दी थी. जवाहरलाल नेहरु की तीक्ष्ण बुद्धि एवं लचीला तथा लोकतांत्रिक तरीका भाषावाद की चुनौती से निपटने के लिये पर्याप्त कारगर साबित हुआ.

भाषा की समस्या केवल भाषाई राज्यों के पुनर्गठन तक सीमित नही थी, बल्कि राष्ट्रभाषा के सवाल ने भी भारत के एक राष्ट्र के रूप में गठन को काफी गहरी चुनौती दी. राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान ही हिन्दी अथवा हिन्दुस्तानी को राष्ट्रभाषा बनाने को लेकर व्यापक आन्दोलन एवं विचार-विमर्श हो रहा था. हिन्दी समर्थकों की एक लाबी संस्कृतनिष्ठ हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाना चाहती थी. वही महात्मा गाँधी एवं कांग्रेस ने हिन्दुस्तानी को अपना समर्थन दिया था. हिन्दुस्तानी के समर्थक एक सरल भाषा के पक्ष में थे, जिसे नागरी एवं उर्दू दोनों लिपियों मे लिखा जा सके. औपनिवेशिक भारत के विभाजन के पश्चात हिन्दी समर्थकों का पलड़ा भारी हो गया. अत: भारत की संविधान सभा ने हिन्दी को राजभाषा के रूप में चुना. परंतु, यह भी स्वीकार किया गया कि अंग्रेज़ी अगले पन्द्रह वर्ष तक कामकाज की भाषा बनी रहेगी. एक और हिन्दी समर्थकों ने राजभाषा के नाम पर कृत्रिम एवं संस्कृतनिष्ठ हिन्दी प्रचारित करने की कोशिश की. वहीं दूसरी ओर अहिन्दी भाषी प्रदेशों की जनता ने हिन्दी का विरोध आरम्भ कर दिया. अंतत: 1959 आते-आते प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु को संसद में आश्वासन देना पड़ा कि हिन्दी अहिन्दी भाषी जनता पर नही थोपी जायेगी. 1963 में इस आशय का एक विधेयक भी संसद में पास कर दिया गया. इसतरह अनऔपचारिक रूप से भारत ने राजकाज के लिये द्विभाषा नीति – हिन्दी और अंग्रेज़ी – अपना ली. इसतरह एक राष्ट्र की एक भाषा विकसित

करने का सपना अधूरा रह गया. फिर भी, भारत का भाषा प्रयोग अपने आप में विशिष्ट रहा. भारत जैसे सांस्कृतिक बहुलता के देश में एक भाषा थोपने का प्रयास राष्ट्रीय एकता विकसित करने में बाधक हो सकता था. भले ही योरोप में एक राष्ट्रभाषा के विकास ने राष्ट्रीय एकता को समृध किया था, परंतु भारत में यह संभव नही था. इतिहास साक्षी है कि भारतीय भाषा प्रयोग भारतीय स्थिति के सर्वथा अनुकूल रहा है, और इससे भाषा-विवादों से निपटने में मदद ही मिली है.

9.4.5 आर्थिक नीति का निर्माण

राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान ही स्वतंत्र भारत की अर्थनीति की दिशा पर व्यापक चर्चा होती रही थी. नरमपंथी राष्ट्रवादी नेताओं ने जहाँ औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था की पोल खोली थी, वहीं उन्होंने भारत की समस्याओं का हल तीव्र औद्योगीकरण में ही खोजने की कोशिश की थी. बीसवीं सदी के आरम्भिक दशकों एवं बाद में महात्मा गाँधी के प्रभाव में स्वदेशी एवं आत्मनिर्भरता के विचारों ने भारतीयों को पर्याप्त आकर्षित किया था. 1930 के दशक से, जब भारतीय राजनीति में पहली बार सामाजवादी विचार प्रकट हुए, राज्य-प्रेरित तीव्र औद्योगिक विकास के विचार ने नेताओं को पभावित किया. फलस्वरूप, 1938 में ही जवाहरलाल नेहरु के नेतृत्व में राष्ट्रीय योजना कमीशन का गठन किया गया. इस कमीशन का कार्य भारत में नियोजित आर्थिक विकास की योजना बनाना था. इसप्रकार स्वतंत्र भारत में भले ही भावी आर्थिक नीति को लेकर कुछ वैचारिक मतभेद थे, परंतु मूलभूत बातों पर सहमतियाँ भी थीं. इन सहमतियों में हम आत्मनिर्भरता के प्रयास, तीव्र औद्योगीकरण, विदेशी पूंजी के प्रभुत्व पर रोक तथा भूमिसुधार आदि को शामिल कर सकतें हैं.

आधुनिक अध्ययनों ने दिखाया है कि अट्ठाहरवीं सदी तक योरोप तथा एशियाई देशों की अर्थव्यवस्था में अधिक अंतर नही था. अट्ठाहरवीं सदी के अंत में इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रांति एवं कालांतर में उन्नीसवीं सदी में योरोप के दूसरे देशों के मशीन आधारित तीव्र औद्योगिक विकास ने योरोप को आधुनिक पूंजीवाद एवं विकास के एक नये युग में पहुँचा दिया. इस दौरान भारत में औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था का विकास हुआ. उन्नीसवीं सदी के आरम्भ में भारत को इंग्लैण्ड में बने मशीनी माल का सुरक्षित बाज़ार बनाया गया. इससे न केवल भारत के परम्परागत उद्योग नष्ट हो गए, बल्कि कृषि के ढाँचें में ऐसे बदलाव आ गये कि इसी सदी के अंत तक भारत अकालों का देश बन गया. बीसवीं सदी के विश्वयुद्धों नें भारतीय पूंजी एवं भारतीय पूंजीपतियों को विकास का अवसर दिया. फिर भी, भारतीय पूंजी इतनी विकसित नहीं थी, कि स्वतंत्र भारत में पूरी तरह से पूंजीवादी विकास का ढाँचा अपनाया जा सकता.

स्वतंत्र भारत गरीबी, अशिक्षा, तकनीकि शिक्षा के अभाव जैसी जिन अवस्थाओं में

था, उनमें राज्य-नियोजित अर्थव्यवस्था की बड़ी भूमिका के माध्यम से ही औद्योगीकरण एवं विकास के सपने को पूरा किया जा सकता था. अत: नेहरु के नेतृत्व में स्वतंत्र भारत ने विकास का जो माडल अपनाया, उसे अर्थशास्त्रीयों नें "मिश्रित अर्थव्यवस्था" कहा है. इस माडल में जहाँ एक ओर देशी पूंजी के विकास को हतोत्साहित नहीं किया गया था, वहीं राज्य द्वारा नियोजित अर्थव्यवस्था पर काफी जोर था. बल्कि, हम कह सकते हैं कि मिश्रित अर्थव्यवस्था के इस माडल में समाजवादी एवं पूंजीवादी विचारों का समन्यवय किया गया था. जहाँ मूलभूत उद्योगों, जिन्हें भारी उद्योग भी कहा जाता है, को राज्य-नियंत्रित सार्वजनिक क्षेत्र में रखा गया था, वहीं अनेक उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन कि लिये व्यक्तिगत पूंजी को छूट दी गई थी. हलांकि, आवश्यक उपभोक्ता वस्तुओं एवं कुटीर उद्योंगों के विकास का ज़िम्मा भी सरकार ने लिया था. सार्वजनिक क्षेत्र में नियोजित विकास के लिये 15 मार्च 1950 को एक गैर-संवैधानिक संस्था के रूप में योजना आयोग का गठन किया गया था. इसप्रकार, एक ओर स्वतंत्र भारत में अनियंत्रित पूंजीवादी विकास को उचित नही माना गया था (वास्तव में, तब की दशाओं में बिना विदेशी पूंजी के इसकी संभावना भी नहीं थी), वहीं रूसी मार्क्सवादी माडल को भी नकार दिया गया था. लगभग भारत के साथ ही स्वतंत्र हुए दूसरे एशियाई देशों ने भारत से भिन्न विकास का रास्ता अपनाया. चीन ने निजी मार्क्सवादी ढंग से विकास किया है, वहीं दक्षिण-पूर्वी एशिया के दूसरे देशों ने उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन पर जोर दिया. इन दोनों ही प्रयोगों में भारत से कही अधिक तीव्र विकास के लक्षण देखे गये हैं. परंतु, हमें यह नही भूलना चाहिये कि भारत में विकास का जो माडल अपनाया गया, वह भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था से जुड़ा हुआ है. इस पूरे दौर में भारत लोकतंत्र बना रहा है, जबकि, अन्य देशों में लोकतांत्रिक स्वतंत्रता या तो बाधित रही, या विदेशी पूंजी ने सरकारी नीतियों को प्रभावित किया है. फिर, सार्वजनिक क्षेत्र में नियोजित अर्थव्यवस्था अपनाने से ही भारत उन मूलभूत उद्योंगों का विकास कर सका है, जो भारत के भावी आत्म-निर्भर विकास के लिये अनिवार्य थे. कुल मिलाकर नेहरूवादी आर्थिक ढाँचा अपनी सीमाओं के बावजूद भारतीय परिस्थियों के अनुकूल रहा है.

निम्नलिखित कथनों को पढ़कर सही और ग़लत का निशान लगाऐं –

1. ब्रिटिश प्रधानमंत्री लार्ड माउण्टबेटन ने हाउस ऑफ कॉमन्स में बोलते हुए जून 1948 तक सत्ता- हस्तांतरण की बात की थी.
2. 1947 में पंजाब प्रांत में ख़िज्र हयात खान और उनकी यूनियनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में मिली-जुली सरकार थी।
3. संविधान सभा का पहला अधिवेशन 9 दिसम्बर 1946 को आरम्भ हुआ था।
4. 15 अगस्त1947 के पश्चात केवल जूनागढ़, हैदराबाद एवं कश्मीर राज्य ही भारतीय संघ से बाहर थे.

5. भाषा के आधार पर पहला राज्य तमिलनाडु अस्तित्व में आया था।

नोट -**निम्नलिखित प्रश्नों में रिक्त स्थान की पूर्ति करें।**

1. भीषण दंगों का आरम्भ ..... को कलकत्ता से हुआ, जिस दिन मुस्लिम लीग ने 'सीधी कार्यवाही दिवस' घोषित कर रखा था.
2. भारतीय संविधान ..... को लागू किया गया

3. 1953 में जस्टिस ..... के नेतृत्व मे एक राज्य पुनर्गठन कमेटी गठित की गई.

4. 1967 में पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश में पंजाब का विभाजन ..... की सरकार ने किया.
5. 15 मार्च 1950 को एक गैर-संवैधानिक संस्था के रूप में .... आयोग का गठन किया गया था

9.5 सारांश

इस प्रकार आज़ाद भारत जहाँ पुराने समस्याओं – गरीबी, अल्पविकास, साम्प्रदायिकता, जातिवाद से संघर्ष करता रहा, वहीं उसे भाषावाद, क्षेत्रवाद जैसी नई समस्याओं का भी सामना करना पड़ा. जवाहरलाल नेहरु के नेतृत्व में पहचान की राजनीति से निपटने की विशिष्ट शैली अपनाई गई. नेहरु ने सांस्कृतिक पहचानों को न केवल मान्यता दी, बल्कि इन पहचानों को राष्ट्रीय एकता के लिये खतरे के रूप में भी नही देखा. राष्ट्रीय एकता को सांस्कृतिक समरुपता की भाँति न देखकर 'बहुलता में एकता' के विचार के अंतर्गत देखा गया. सांस्कृतिक बहुलता और राष्ट्रीय एकता का यह विचार योरोप के राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रीय एकता के विचार से पर्याप्त भिन्न एवं विशिष्ट था. भारत के इस विचार नें क्षेत्रवादी, साम्प्रदायिक, भाषावादी राजनीति को कमजोर किया तथा एक राष्ट्र के रूप में भारत के गठन की प्रक्रिया को मजबूत किया.

भारतीय संविधान ने भी विभिन्न राजनीतिक आकांक्षाओं को लोकतांत्रिक ढंग से अभिव्यकत करने के अवसर प्रदान किये हैं. संवैधानिक लचीलेपन एवं समन्यवय के सिद्धांत ने विभिन्न गुटों एवं चेतनाओं की राजनीतिक महात्वाकांक्षा को नियंत्रित रखने में ही सहायता दी है. दलितों, अल्पसंख्यकों, आदिवासियों एवं दूसरे पिछड़े वर्गों के लिये व्यापक प्रावधान संविधान में थे. इन प्रावधानों ने इन वर्गों को राष्ट्रीय मुख्यधारा में लाने मे महति भूमिका अदा की है. महिलाओं को समानता एवं कानूनी अधिकार दिलाने में भी संविधान के प्रावधान सहायक रहे हैं फिर भी, साम्प्रदायिक चेतना, जातिवादी वैमस्य, महिलाओं के अधिकारों की अनदेखी एवं शोषण के परम्पराओं को समाप्त कर पाना अभी संभव नहीं हो पाया है.

नेहरूवादी आर्थिक नीति जहाँ आरम्भिक धक्का देने मे कामयाब रही, वहीं तीव्र औद्योगीकरण एवं विकास का सपना अधूरा ही रहा है. 1990 तक आते-आते नेहरुवादी ढाँचे

की सीमाएँ सामने आ गई. इस ढाँचे ने भारत में अतिआवश्यक संरचनात्मक आर्थिक सुधार तो किये, परंतु भारत में लाइसेंस-कोटा राज स्थापित कर दिया. 1990 के दशक के बाद के आर्थिक सुधारों पर अर्थशास्त्री अभी भी सहमत नहीं हैं. इन्होंने कुछ हद तक अमीर-गरीब के बीच आर्थिक भेद को बढ़ाने का काम ही किया है.

9.6 तकनीकी शब्दावली

सांस्कृतिक बहुलता – अनेक संस्कृतियों का होना

मिश्रित अर्थव्यवस्था – पूंजीवादी एवं समाजवादी व्यवस्था का मिला-जुला रूप

संस्कृतनिष्ठ हिन्दी – ऐसी हिन्दी जिसमें संस्कृत शब्दों की भरमार हो

लाइसेंस-कोटा राज – ऐसा शासन जिसमें वस्तुओं को प्राप्त करने में लाइसेंस और कोटा निर्धारित हो

नेहरूवादी – नेहरू जी के सिद्धान्तों के अनुरूप

9.7 स्वमूल्यांकित प्रश्नों के उत्तर

इकाई 9.4.5 के उत्तर

1. असत्य
2. सत्य
3. सत्य
4. सत्य
5. असत्य

रिक्त स्थान की पूर्ति करें

1. 16 अगस्त 1946
2. 26 जनवरी 1950
3. फ़ज़ल अली
4. इंदिरा गाँधी
5. योजना

9.8 संदर्भ ग्रन्थ सूची

बिपिन चन्द्र, मृदुला मुखर्जी, आदित्य मुखर्जी, संपादक, आज़ादी के बाद का भारत: 1947-2000. दिल्ली: हिन्दी माध्यम कार्यांवय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2002.

रामचन्द्र गुहा, इंडिया ऑफ्टर गाँधी: दी हिस्ट्री ऑफ दी वर्ड्स लार्जेस्ट डेमोक्रेसी. लन्दन: पिकाडोर-मैकमिलन, 2007.

सुनील खिलनानी, दी आइडिया ऑफ इंडिया. नई दिल्ली: पेंग्विन बुक्स इंडिया, 1999.

ग्रेंविले ऑस्टिन, दी इंडियन कॉनस्टीट्यूशन: कॉर्नर स्टोन ऑफ ए नेशन. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस, फिफ्टींथ इम्प्रेशन, 2010.

मारिया मिश्रा, विष्णु'ज़ क्राउडेड टेम्पल: इंडिया सिंस दी ग्रेट रेबेलियन. लन्दन: ऐलेन लेन-पेंग्विन ग्रुप, 2007.

फ्रांसीने आर. फ्रैंकल, इंडियाज़ पॉलिटिकल इकॉनामी: 1947-77. दिल्ली.

सुगाता बोस एण्ड आइशा जलाल, मॉर्डन साउथ एशिया: हिस्ट्री, कल्चर, पॉलिटिकल इकॉनामी. दिल्ली: राउटलेज, सेकेंड एडीशन, 2004.

रॉबर्ट डी. किंग, नेहरु एण्ड दी लैन्गवेज पॉलिटिक्स इन इंडिया. दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस, 1997

9.9 सहायक उपयोगी पाठ्य सामग्री

बिपिन चन्द्र, मृदुला मुखर्जी, आदित्य मुखर्जी, संपादक, आज़ादी के बाद का भारत: 1947-2000. दिल्ली: हिन्दी माध्यम कार्यांवय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2002.

रामचन्द्र गुहा, इंडिया ऑफ्टर गाँधी: दी हिस्ट्री ऑफ दी वर्ड्स लार्जेस्ट डेमोक्रेसी. लन्दन: पिकाडोर-मैकमिलन, 2007.

सुनील खिलनानी, दी आइडिया ऑफ इंडिया. नई दिल्ली: पेंग्विन बुक्स इंडिया, 1999.

ग्रेंविले ऑस्टिन, दी इंडियन कॉनस्टीट्यूशन: कॉर्नर स्टोन ऑफ ए नेशन. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस, फिफ्टींथ इम्प्रेशन, 2010.

9.9 निबंधात्मक प्रश्न

1. स्वतंत्र भारत के समक्ष उत्पन्न चुनौतियों एवं उनके समाधान हेतु किये गये प्रयासों पर चर्चा कीजिए।